# भुवनेश्वरी महाविद्या विशेषांक

सितम्बर 2026
वर्ष – 17

मूल्य : 40/-
अंक – 01

# निखिल-मंत्र-विज्ञान



अघोरेश्वर शिव साधना

भुवनेश्वरी 'ह्रीं' बीज साधना

आत्मविश्वास की शक्ति

तांत्रोक्त वशीकरण साधना

ॐ ह्रीं मम प्राण देह रोम प्रतिरोम चैतन्य जाग्रय ह्रीं ॐ नमः

A Monthly Journal

# आवश्यक सूचना

निखिल मंत्र विज्ञान का प्रत्येक अंक अब से रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजा जा रहा है। जिससे आपको पत्रिका निश्चित रूप पता हो सके। अब पत्रिका जोधपुर कार्यालय से POST होते आपको डाक विभाग द्वारा SMS प्राप्त होगा। यदि आपको मोबाईल पर SMS के माध्यम से सूचना प्राप्त नहीं हुई है तो कृपया पते के साथ अंकित अपना MOBILE NUMBER अवश्य जांच लें और यदि आपने अपना मोबाईल नम्बर बदल दिया है तो तत्काल जोधपुर कार्याल के WhatsApp No. 9602334847 पर अपना नया नम्बर अपने नाम सहित भेज दें अथवा फोन द्वारा सूचना कर दें।

पत्रिका आपको समय पर और निरन्तर प्राप्त हो इसीलिये रजिस्टर्ड डाक (MAGAZINE POST) की विशेष सेवा का प्रयोग किया जा रहा है। पत्रिका नहीं प्राप्त होने पर तुरन्त जोधपुर कार्यालय में फोन एवं WhatsApp द्वारा सम्पर्क करें।

# साधना और दीक्षा से ही जीवन गतिशील

प्राण प्रतिष्ठित साधना सामग्री, दीक्षा, भेंट आदि की न्यौछावर आप सीधे "निखिल मंत्र विज्ञान, जोधपुर" के SBI Bank A/c. 32677736690 और UBI Bank A/c. 310001010036403 में QR Code Scan कर जमा करवा सकते है -

SBI Payments
SBI Bank A/c.
32677736690
IFSC Code
SBIN0000659
SCAN & PAY

Union Bank of India
UBI Bank A/c.
3100010100-36403
IFSC Code
UBIN0531006
SCAN & PAY

WhatsApp 9602334847 पर न्यौछावर की जानकारी अवश्य भेजे।

## कार्यालय में व्यक्तिगत सम्पर्क केवल इन्ही चार नम्बरों पर करें

9799988915 9799988930 9799988937 9799988938

इन्हें अपने Phone में Save कर दें।

शिविर, दीक्षा, साधना सामग्री, विधान, पूजन आदि की जानकारी हेतु
निखिल मंत्र विज्ञान जोधपुर के कार्यालय व्यवस्थापक से सम्पर्क करें -
संजय निखिल - मान सिंह - प्रवेश भारती - जगदीश

दिल्ली कार्यालय में साधनात्मक जानकारी, पूजन-यज्ञ-अनुष्ठान हेतु सम्पर्क करें - मनोज भारद्वाज - 9799988970

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

वर्ष 17 | सितम्बर 2026

# निखिल आलेख

॥ ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥

मूल्य मासिक रुपये 40/-

मूल्य वार्षिक रुपये 405/-

अंक 01 | पृष्ठ 68

प्रेरक संस्थापक
**डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली**
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी)

सम्पादक
**श्री नन्द किशोर श्रीमाली**

संयोजक
**मनोज भारद्वाज**

व्यवस्थापक मण्डल
**नितेश कुमार**
**संजय 'निखिल'**

प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक
नन्द किशोर श्रीमाली
निखिल मंत्र विज्ञान
द्वारा
सालासर ईमेजिंग सिस्टम,
ए-97, सेक्टर-58
नोएडा (उ.प्र.) - 201301
से मुद्रित तथा
निखिल मंत्र विज्ञान,
14 अ मेन रोड
हाईकोर्ट कॉलोनी,
सेनापति भवन के पास,
जोधपुर से प्रकाशित



## निखिल सम्यक्

सद्गुरु प्रवचन - शिव तत्व - परमानन्द ...37
गुरु वाणी ...34
शिष्य धर्म ...36
इस माह की प्रमुख साधनाएं ...51
वराहमिहिर ...57
नक्षत्रों की वाणी ...58
काल निर्णय ...60
शिविर जानकारी ...64

## साधनाएं

शिव अघोरेश्वर साधना ...11
अघोर रोग मुक्ति साधना ...13
अनन्त विष्णु साधना ...16
श्रीकृष्ण तंत्र सम्मोहन वशीकरण साधना ...22
महाविद्या भुवनेश्वरी 'ह्रीं' बीज साधना ...27
पितृदोष अष्टवसुगण साधना ...32
दिव्य लोक श्रद्धांजलि साधना ...33



## विशेष

आद्याशक्ति जगदम्बा सायुज्य
नवार्ण शक्ति नवरात्रि पूजन ...08
महाविद्या भुवनेश्वरी दीक्षा ...29
पितृ दोष एवं प्रेत बाधा मुक्ति दीक्षा ...63
अघोर 'क्रीं' तंत्र दीक्षा ...67



## निखिल विचार प्रवाह

शक्तिमान बनने की यात्रा : आद्याशक्ति जगदम्बा ...07
शिव : अघोर, घोर और अति घोर ...09
विष्णु : अनन्त शक्ति की चाबी ...14
सद्गुरु वेद वचन : आत्मविश्वास ...19
ज्ञान - अर्थ अधिष्ठात्री शक्ति : भुवनेश्वरी ...24
पितृकृपा : सुख-सौभाग्य ...30
मंत्र रहस्य : मन की शान्ति से शिवत्व ...54

14 A, मेन रोड हाईकोर्ट कॉलोनी, सेनापति भवन के पास, जोधपुर, फोनः 9799988915, 9799988930, SMS & WhatsApp 9602334847
आरोग्य धाम, गुजरात अपार्टमेन्ट के पीछे, जोन 4/5, पीतमपुरा, नई दिल्ली - 34, फोनः 9799988970, 9799988904, 9799988905
www.nikhilmantravigyan.org E-mail – nmv.guruji@gmail.com facebook.com\nikhilmantravigyan.org

## नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'निखिल मंत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क–कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायं, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु–संत होते हैं, अतः उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद–विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी प्रकार के वाद–विवाद में जोधपुर–न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय द्वारा किसी भी सामग्री का विक्रय नहीं किया जाता, केवल उस पर मंत्र साधना, यज्ञ इत्यादि सम्पन्न किया जाता है। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 405/– है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता–असफलता, हानि–लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या संन्यासी लेखकों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। पत्रिका में प्रकाशित आलेखों को किसी भी प्रिन्ट या डिजिटल माध्यम से प्रकाशित करने से पूर्व प्रकाशक/सम्पादक कार्यालय से स्वीकृती अवश्य प्राप्त कर लें।

## ☆ प्रार्थना ☆

*न मे शक्तिर्देवः समविषम भावं विगलित,*
*स्हस्यं नैवं ते परिगदितुमखिलं परिगतं।*
*न मे श्रद्धाभक्तिः बहुविधतमोध्वंसनविधौ;*
*परं लब्धुं कामः निखिल! निखिलं ज्ञानमनद्यम्।।*

हे गुरुदेव! मेरे मन में उठने वाले अनेक निरर्थक विचारों को निरस्त करने के लिए मुझ में सामर्थ्य नहीं हैं, आपके साधनात्मक दिव्य एवं आलौकिक रहस्यों को भी मैं नहीं जानता हूं। अज्ञानजनित प्रबल अन्धकार को दूर करने के लिए श्रद्धा और भक्ति भी मुझमें नहीं है, फिर भी आपके उस पावनतम ज्ञान को प्राप्त करने के लिए मैं प्रबल आकांक्षी हूं।

## ☆ मनुष्य का सबसे बड़ा मित्र -धैर्य ☆

जीवन में प्रगति का एकमात्र मुख्य साधन है, **'अटल धैर्य'। जिसके पास धैर्य है, उसके पास संसार का हर सुख, शांति, आनंद, यश, कीर्ति और ऐश्वर्य है और वे ही व्यक्ति जीवन में सफल भी हुए हैं।** धैर्य शब्द का अर्थ है, किसी भी कठिन समय में विचलित न होने वाली शक्ति। इसलिए **मनुस्मृति के छठे अध्याय में जो दस लक्षण बताए गए हैं, उनमें सर्वप्रथम लक्षण धैर्य ही है। मनुस्मृति में धैर्य को 'धृति' के नाम से कहा गया है। धृति माने धारण करना, रोके रखना। धैर्य ही मानव को मानव बनने की प्रेरणा देता है।**

*बहुत गई थोड़ी रही, व्याकुल मन मत हो।*
*धीरज सबका मित्र है, करी कमाई मत खो*

अर्थात- **धैर्य मनुष्य का सबसे बड़ा मित्र है, जिसने इससे दोस्ती की, उसे जीवन की सारी खुशियाँ हासिल हो सकती हैं। मनुष्य का जो पहला धर्म है, वह अपने धैर्य को कायम रखना। किसी भी परिस्थिति में अपना धैर्य नहीं खोना चाहिए। जीवन में रात आती है, दिन आता है, रोग आता है, आरोग्य आता है, सुख आता है, दुःख आता है, परंतु किसी भी स्थिति में हमें विचलित नहीं होना चाहिए। जिसके पास धैर्य रूपी पारसमणि है, वही व्यक्ति अपने जीवन में सफल होता है।**

इसीलिए कहा भी जाता है-

*धैर्य धरो आगे बढ़ो, पूरन हो सब काम।*
*उसी दिन ही फलते नहीं, जिस दिन बोते आम।*

# अपनों से अपनी बात...



मेरे प्रिय आत्मीय,

शुभाशीर्वाद,

वेदों में एक विशेष प्रार्थना है - **सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।**

सभी सुखी हों, सभी निरोग और स्वस्थ रहें, सभी का जीवन मंगलमय हो और शुभ के दर्शन करें। किसी भी व्यक्ति को दुःख का भागी न बनना पड़े।

जब सुख, आनन्द, आरोग्य और जगत के प्रति सरस दृष्टिकोण हमारा वेद वाक्य है तो आज हमारे जीवन में यह वेद वाक्य पूरी तरह से स्थापित क्यों नहीं हो रहा है?

उपनिषद् कहते है - **'आनन्दादेव खल्विमानि भूतानि जायन्ते'** अर्थात् सम्पूर्ण सृष्टि का मूल आनन्द ही है। यह भी सत्य है कि ईश्वर ने हमें एक जीवन दिया है। वह भोगने के लिये दिया है। इसीलिये शिव सूत्र में कहा गया है - **'रसो वै शिवः'** जहां शिव है वहां रस है, जहां शिव भाव है वहां आनन्द है।

जब यह कहा जाता है कि हमें वेदों और उपनिषदों का अनुसरण करना है और उसके अनुसार अपनी जीवन यात्रा करनी है तो फिर वर्तमान भारतीय समाज में दुःख, कष्ट और परेशानी को इतना अधिक महिमा मण्डित क्यों किया जा रहा है?

ऐसी मानसिकता बन गई है कि हम एक व्यक्ति का आंकलन उसकी प्रसन्नता, रचनात्मकता, सन्तुलित जीवन से नहीं बल्कि उसके द्वारा सहन किये गये कष्टों से करते है। ज्यादातर लोग गर्व से कहते है कि हमने जिन्दगी में इतना अधिक संघर्ष किया, इतने कष्ट भोगें और समाज भी यही करता है कि जिसने संघर्ष किया, जितना अधिक अपने मन की इच्छाओं का दमन किया, जितना अधिक स्वयं को भुलाकर दूसरे के लिये जिया वह उतना ही आदर्श और संस्कारी माना गया।

विचार करो, **क्या हमारे जीवन में दुःख ही संस्कार है? या हमने त्याग को ही हमारी आत्मपीड़ा से जोड़ दिया है?**

**हमारी संस्कृति में त्याग का सम्मान बहुत है। पर त्याग और दुःख एक नहीं है, त्याग वह है जो स्वेच्छा से किसी उच्च उद्देश्य के लिये और आन्तरिक संतोष के साथ किया जाये। कष्ट वह है जो व्यक्ति अपनी इच्छाओं, स्वास्थ्य और आत्म सम्मान को धीरे-धीरे समाप्त कर दे। कष्ट कभी भी त्याग नहीं है यह तो आत्म उपेक्षा है, स्वयं की उपेक्षा है। ईश्वर द्वारा प्रदान किये गये महान् जीवन की उपेक्षा है।**

क्या आप अपनी आवश्यकताओं की अनदेखी करते है? अपनी भावनाओं को दबाते है, वर्षों तक अपने दर्द को छिपाकर जीते है तो हो सकता है कि समाज आपकी प्रशंसा करें लेकिन आप भीतर ही भीतर टूट जाते है।

हम परिवार में मां-बाप के त्याग की कहानियां कहते है कि हमारी माता ने अपने लिये कुछ नहीं किया, केवल परिवार के लिये किया, अपने स्वप्नों का त्याग किया, पूरे जीवन केवल परिवार के लिये जीती रही। सोचों क्या आदर्श मां-बाप वही है जिन्होंने अपने अस्तित्व को पूरी तरह मिटा दिया। यदि माता-पिता अपने स्वास्थ्य का समय पर ध्यान रखते, अपनी इच्छाओं को समय पर पूरा करते तो क्या उनका मातृत्व प्रेम, पितृत्व भाव कम हो जाता? वास्तव में स्वस्थ प्रसन्न माता-पिता ही परिवार को और अधिक प्रेम और सुरक्षा दे सकते है।

बचपन से ही पुरुषों को यह सिखाया जाता है कि पुरुष रोते नहीं है, अपनी पीड़ा व्यक्त नहीं करते। हर परिस्थिति में मजबूत बनें रहते है। आप अपने ऊपर ही लागू करके देखों क्या होता है? आप अपने भीतर की भावनाओं को वर्षों तक दबायें रखते हो, बाहर से तो सफल दिखाई देते है पर भीतर ही भीतर अकेलेपन, तनाव और अवसाद से जूझते रहते हो।

परिवार में आदर्श बहु-बेटी की पहचान उसके गुणों से नहीं बल्कि उसके बलिदानों से की जाती है जो सब कुछ सहन करें उसे संस्कारी कहा जाता है। किन्तु वही महिला सम्मान पूर्वक अपनी बात रखें, अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें, अपने सपनों को पूरा करना चाहे तो उसे स्वार्थी समझ लिया जाता है।

समाज शायद इसे साहस कहे, पर वास्तविक स्थिति यह है कि **निरन्तर भावनाओं को दबाना आपके जीवन में मानसिक और शारीरिक दोनों प्रकार की समस्याओं का कारण बन जाता है।**

**शक्ति का अर्थ, अपनी भावनाओं को नकारना नहीं है बल्कि उन्हें समझना है और स्वस्थ ढ़ंग से व्यक्त करना है।**

हम बार-बार बच्चों से कहते है चाहे वह कितने ही बड़े हो जाये, मत रो, अपनी बात मत कहो, लोग क्या कहेंगे? फिर धीरे-धीरे यह व्यवहार परिवार की संस्कृति बन जाता है और वह अपने मन की बात नहीं कहता और मान लेता है कि प्रेम पाने के लिये स्वयं को कष्ट देना आवश्यक है।

**हम क्या यह संदेश देना चाहते है कि प्रेम का अर्थ स्वयं को मिटा देना ही है।**

यह समाज बड़ा कठोर होता है। **यह आपकी सफलता को तभी स्वीकार करता है जब उसके पीछे, अत्यधिक पीड़ा की कहानी हो। आप बुद्धिमानी, अनुशासन और सही निर्णयों के कारण सहजता से सफल हो जाये तो लोग आपकी सफलता पर संदेह करने लगते है।** सफलता का प्रमाण मात्र संघर्ष और कष्ट नहीं है। परिश्रम आवश्यक है पर कृपया अनावश्यक पीड़ा को महानता न कहें।

**हमारा शरीर सत्यवादी है, जितना हम अपनी भावनाओं को दबाते रहते है, उसके कारण हमारे शरीर में विभिन्न प्रकार की व्याधियां आती है। ये व्याधियां दबे हुए भावनात्मक दर्द की अभिव्यक्ति है।**

**प्रत्येक व्यक्ति के लिये भावनात्मक स्वास्थ्य उतना ही महत्वपूर्ण है जितना शारीरिक स्वास्थ्य।**

प्रिय साधकों सम्मान की परिभाषा बदलों, हमें उस व्यक्ति का सम्मान करना है जो परिवार से प्रेम करता है साथ ही अपने स्वास्थ्य, आत्म-सम्मान और मानसिक सन्तुलन का भी ध्यान रखता है। हमें अपने परिवार में खुलकर बात करनी है और **हमें अपनी संतानों को भी प्रोत्साहित करना है जो अपने सपनों को बिना किसी अपराध बोध के जीना चाहते है।**

आज भारतीय संस्कृति के मूल भाव को स्थापित करना है, जहां खुशी संदिग्ध न हो, आराम विद्रोह न हो और आसानी आलस्य न हो। हम त्याग का सम्मान अवश्य करें, किन्तु अनावश्यक आत्मपीड़ा का म हिमा मण्डन बंद करे। परिवार की शक्ति केवल सहनशीलता से नहीं, बल्कि संवाद, भावनात्मक स्वास्थ्य, आत्म सम्मान और परस्पर सहयोग से बढ़ती है। **आत्म सम्मान, संवाद और सन्तुलन को चुनिये, आप प्रसन्न जीवन जीयेंगे और परिवार, समाज को प्रसन्नचित्त दिशा देंगे। यही निखिल शिष्य की परिभाषा है...**

बहुत-बहुत आशीर्वाद



नन्द किशोर श्रीमाली




सृष्टि में मनुष्य सभी प्राणियों में श्रेष्ठ है, उसे विशेषाधिकार प्राप्त है शक्ति के विस्तार का, यह शक्ति विस्तार ही उसे साधारण से असाधारण बन सकता है। पर शक्ति अपने आप नहीं बढ़ती। उसे जाग्रत करना पड़ता है और **जिस कर्म से शक्ति का जागरण होता है, वही क्रिया कहलाता है।**

आप सभी जीवन में सफलता चाहते हो, उन्नति चाहते हो, सम्मान चाहते हो, आध्यात्मिक प्रगति चाहते हो, पर सोचों, क्या यह सब बिना अभ्यास के संभव है? इस अभ्यास का नाम ही क्रिया है और यह क्रिया ही साधना है।

**गुरु तुम्हें ज्ञान दे सकते हैं, दिशा दे सकते हैं, शक्ति दे सकते हैं, लेकिन चलना तुम्हें ही होगा। ज्ञान और बुद्धि तभी सिद्ध होते हैं जब उनके साथ निरंतर अभ्यास-क्रिया-साधना जुड़ी हो।**

इसलिए जैसे नदी बहती रहती है, वैसे ही साधना प्रवाह निरन्तर रहना चाहिए। प्रवाह रुक गया तो शक्ति रुक जाएगी। शक्ति रुक गई तो कामना बंधन बन जाएगी और बंधन और अधिक मजबूत होता जाएगा, तब तनाव हर समय बना रहेगा।

आज इस सत्य को स्वीकार कर लो कि तुम्हें अपनी नाव स्वयं चलानी है। गुरु तुम्हें दिशा देंगे, शक्ति देंगे, साहस देंगे, लेकिन पतवार तुम्हें पकड़नी होगी, यही स्वाभिमानी है।

**जब गुरु के ज्ञान को मनन में, मनन को चिंतन में, और चिंतन को क्रिया में बदल दोगे, तब देखना तुम्हारी कामनाएं भी पूर्ण होंगी और तुम्हारे बंधन भी कटने लगेंगे।**

**यही गुरु कृपा है। यही शक्ति का प्रवाह है। यही साधना का वास्तविक मार्ग है। गुरु प्रेरणा प्रदान करते है, गुरु की प्ररेणा ही समस्त शक्तियों का सार है। यह प्रेरणा शक्ति सबसे बड़ी है, जिसके आगमन से ही जीवन में इच्छा, ज्ञान और क्रिया का आगमन होता है** और प्रेरणा आप उसी से प्राप्त करते हो जिसे आपने हृदय में स्थान दिया है।

ईश्वर गुरु रूप में बार-बार आपको प्रेरणा भेजता है। पर आप संसार चक्र में सद्गुरु की प्रेरणा को सुनते ही नहीं हो। जिन्दगी जीते नहीं, काटते हो और काटते-काटते खुद कट जाते हो। गुरु आपको निरन्तर अभ्यास-साधना के माध्यम से शक्ति जागरण हेतु प्रेरित करते है। आश्विन नवरात्रि पर सद्गुरुदेव प्रतिवर्ष शक्ति जागरण हेतु प्राण प्रतिष्ठित साधना सामग्री शास्त्रों विधान सहित आपके द्वार पर भेजते है।

आश्विन नवरात्रि में सद्गरुदेव अपनी प्रेरणा शक्ति के माध्यम से साधक की इच्छा, ज्ञान और क्रिया शक्ति को समृद्ध करते है। जिससे वर्ष भर आप शक्ति से आपूरित रहे। आद्या शक्ति जगदम्बा आधार शक्ति है, मूल शक्ति है, जड़ है और मनुष्य जीवन में यह जितनी मजबूत, गहरी होती है उतना ही जीवन बाधाओं, समस्याओं, परेशानियों, विपदाओं में अडिग होकर नवनिर्माण करने, स्वयं का विस्तार करने में सक्षम होता है।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से शक्ति की चैतन्यता प्रभावित करती ही है। उच्च और सकारात्मक ऊर्जा प्रवाह से - ✲ व्यापार एवं व्यवसाय में उन्नति तथा नए अवसरों की प्राप्ति होती है। ✲ बुद्धि, विवेक और निर्णय क्षमता की प्राप्ति से व्यापारिक, सामाजिक और विभिन्न प्रतिस्पर्धा में सफलता प्राप्त होती है। ✲ प्रतिद्वंद्वियों एवं विरोधी परिस्थितियों के विरुद्ध आत्मबल की प्राप्ति होती है। ✲ राजकीय एवं प्रशासनिक कार्यों की पूर्णता तथा कार्यों को सुचारू रूप से करने का सार्मथ्य प्राप्त होती है। ✲ नौकरी, पदोन्नति, करियर विकास हेतु नेतृत्व क्षमता प्राप्त होती है। ✲ अधूरे, रुके कार्यों और संकल्पों को पूर्ण संकल्प एवं कर्मबल प्राप्त होता है। ✲ शारीरिक, मानसिक और

भावनात्मक संतुलन बनाए रखने की शक्ति प्राप्त होती है। * निराशा, भय, आलस्य, भ्रम और आत्मविश्वास की कमी पर विजय प्राप्त करने की क्षमता प्राप्त होती है। * स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता, जीवन में अनुशासन विकसित होता है।

शक्ति ही जीवन की गति है, सम्पूर्ण सृष्टि शक्ति पर ही आधारित है। जहां शक्ति है, वहीं गति है; जहां गति है, वहीं प्रगति है। शक्ति के बिना न शरीर विशेष कार्य कर सकता है, न मन विचार कर सकता है, न बुद्धि निर्णय ले सकती है और न ही कोई संकल्प पूर्ण हो सकता है।

**शक्ति सिद्धि के मार्ग में सबसे बड़ा शत्रु निराशा और आलस्य है। निराशा अंधकार है और आलस्य उस अंधकार का द्वार। जो हर कार्य कल पर टाल देता है, उसकी न कामना पूरी होती है और न उसका कोई बंधन कटता है।**

**इस आश्विन नवरात्रि आप सभी निखिल साधकों को शक्ति का संवर्धन करना है, स्वयं को शक्ति से परिपूर्ण करना है इस हेतु नवरात्रि के नौ दिन शास्त्रों विधानानुसार प्राण प्रतिष्ठित साधना सामग्री से साधना-पूजन-मंत्र जप सम्पन्न करना है। सद्गुरुदेव आपको प्रेरणा के स्वरूप में आपके घर के द्वार तक प्राण प्रतिष्ठित साधना सामग्री पूजन विधान सहित पहुंचा रहे है। आपको तो बस गुरु आज्ञा से पूजन-साधना-मंत्र जप अवश्य ही सम्पन्न करना है।**

**आपकी इच्छा, ज्ञान और क्रिया शक्ति स्वतः ही आपका मार्गदर्शन करेगी एवं आप अपनी कामनाओं, इच्छाओं को पूर्ण करने में सफल होंगे।**

# आद्याशक्ति जगदम्बा सायुज्य नवार्ण शक्ति नवरात्रि पूजन

**आश्विन नवरात्रि - 11 अक्टूबर 2026 से 20 अक्टूबर 2026**
**घट स्थापन प्रातः - 06:19 से 10:12 तक**

**आश्विन नवरात्रि में आपके घर में आद्याशक्ति जगदम्बा सायुज्य नवार्ण शक्ति का पूजन अवश्य ही होना चाहिए। संसार के सारे काम से महत्वपूर्ण नवरात्रि में आद्याशक्ति जगदम्बा सायुज्य नवार्ण शक्ति की साधना है।**

**इस हेतु निखिल मंत्र विज्ञान कार्यालय द्वारा प्रत्येक पत्रिका सदस्य को "आद्याशक्ति जगदम्बा सायुज्य नवार्ण शक्ति नवरात्रि पूजन-साधना" पैकेट 550/- रुपये की स्पीड पोस्ट से भेजा जायेगा। गुरुदेव की आज्ञानुसार 07 सितम्बर 2026 से यह पैकेट भेजना प्रारम्भ कर दिया जायेगा।**

**साधना पैकेट भेजने की जानकारी आपको आपके मोबाईल पर भेज दी जायेगी। इस सम्बन्ध में आप कार्यालय को 9799988915, 9799988930, 9799988937, 9799988938 पर फोन कर एवं वॉटसअप - 9602334847 पर मैसेज कर अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।**

**पूजन सामग्री पोस्ट द्वारा भेजते ही आपको एक 13 अंकों का पोस्टल कोड कार्यालय में रजिस्टर्ड आपके मोबाईल पर भेज दिया जायेगा। जिन गुरु भाईयों के मोबाईल पर 22 सितम्बर 2026 तक इस प्रकार की कोई सूचना प्राप्त नहीं हो तो वे तुरन्त निखिल मंत्र विज्ञान कार्यालय जोधपुर से सम्पर्क करें और अपनी सामग्री प्राप्त करने का अनुरोध करें।**

**नवरात्रि में नवार्ण साधना सम्पन्न कर, सद्गुरुदेव से शक्तिपात नवार्ण दीक्षा अवश्य ग्रहण करनी चाहिये।**




आप सब अनेकों तीर्थ स्थानों की यात्रा करते है, पर्वतों में स्थित शक्तिपीठों में जाते है और वहां प्रणाम कर, पूजा कर वापिस आ जाते है। वहां पर आपने देखा होगा कि दुर्गम से दुर्गम स्थानों पर भी जटाजूट बढ़ाये एकाध वस्त्र या लंगोट धारण किये व्यक्ति साधना कर रहे होते है। कौन है ये व्यक्ति जो संसार की भीड़-भाड़ से दूर अपना जीवन शिव साधना और शक्ति साधना में लगा देते है।

आपके मन में यह प्रश्न आ रहा होगा कि क्या संसार को त्याग कर ही साधना की जा सकती है या संसार में रहकर भी शिव और शक्ति की साधना की जा सकती है। परम आराध्य तो जगत को चेतना देने वाले और चेतना का विस्तार करने वाले शिव और शक्ति ही है जो अदृश्यमान है।

आपने जो शिव का स्वरूप बनाया है वह आपकी कल्पना का मूर्तरूप है वास्तव में **शिव और शक्ति चेतना का स्वरूप है और चेतना सदैव अदृश्य होकर मनुष्य की तन की शक्ति से क्रिया करती है इसीलिये तंत्र का अर्थ है - चेतना का विस्तार करने वाली प्रणाली।**

**तंत्र का उद्देश्य है - मनुष्य की सुप्त शक्तियों का जागरण, प्रकृति और पुरुष का समन्वय और अपने स्वयं में शिव स्वरूप की अनुभूति करना।**

हर व्यक्ति को अपने जीवन की दिशा निर्धारित करने का अधिकार होता है। इसी प्रकार तंत्र साधना में अनेक शाखाएं विकसित हुई, जिन्हें व्यवहारिक रूप में ऋषियों-योगियों ने सिद्ध किया। आश्रम में भी साधना होती थी, विद्या अध्ययन भी होता था। पुस्तकीय ज्ञान के साथ अस्त्र-शस्त्र का ज्ञान भी दिया जाता था। जीवन मार्ग और अर्थशास्त्र का भी अध्ययन कराया जाता था। जिससे व्यक्ति श्रेष्ठ गृहस्थ बनकर समाज का सर्वांगीण श्रेष्ठ विकास कर सके।

इसी में कुछ व्यक्तियों के मन में प्रश्न आया कि जब जीवन का अन्तिम लक्ष्य शिव से मिलन ही है तो क्यों गृहस्थ जीवन में प्रवेश किया जाये। अपना जीवन शिव को ही क्यों नहीं समर्पित कर दिया जाये और अपनी जीवात्मा को परमात्मा से जोड़ा जाये। जिससे यह जीवन सार्थक हो सके।

इसी कारण तंत्र की दो विधियों का विकास हुआ।

**1. दक्षिणाचार** **2. वामाचार (अघोर पंथ)**

दोनों तंत्र मार्गों का लक्ष्य एक ही है - शिवत्व की प्राप्ति। पर दोनों की साधना पद्धति, मनोविज्ञान और अनुशासन में अन्तर है।

गृहस्थ जीवन में केन्द्र बिन्दू होता है - घर-परिवार, संतति, समाज, सम्मान इत्यादि।

अघोर जीवन में केन्द्र बिन्दू होता है शिव और शक्ति से मिलन, तन को कितना ही तपाना पड़े तपाया जाये। वहां तन एक छोटा सा साधन है। मूल लक्ष्य है - शिवत्व की प्राप्ति।

दक्षिणाचार का अर्थ है - धर्म, संयम के साथ तंत्र साधना और अधिकांश समाज को यह मार्ग स्वीकार्य होता है इसीलिये गृहस्थ और संन्यासी इसी मार्ग का अनुसरण करते है और इसमें शुद्धता का विशेष स्थान है। शरीर की शुद्धि, मन की शुद्धि, स्थान की शुद्धि, आहार की शुद्धि, विचारों की शुद्धि।

इसी में मंत्र साधना भी महत्वपूर्ण साधना है। जिनके बीज मंत्र - **श्रीं, ह्रीं, क्लीं, ऐं, गं इत्यादि है। मंत्र का उद्देश्य चेतना को जाग्रत करना है।**

इसी के साथ यंत्र भी आवश्यक है। उस यंत्र को स्थापित कर यंत्र में देव शक्ति का आह्वान किया जाता है। यंत्र देव शक्ति का स्वरूप होता है। इस मार्ग में ध्यान और हवन आवश्यक है।

अब अघोर पंथ की चर्चा करते है जिसे वामाचार कहा जाता है। वास्तव में वाम का अर्थ है - सुन्दर, विशिष्ट। यह दक्षिणाचार से बिल्कुल उल्टा मार्ग नहीं हैं

वामाचार अघोर पंथ के भाग है, जिन्हें आप पंचमकार मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा, मैथुन कहते है। वास्तविक उद्देश्य है - 1. भय समाप्त करना, 2. वासना अर्थात् लालसा पर विजय, 3. मृत्यु पर अतिक्रमण, 4. अहंकार का विनाश, 5. द्वैत से अद्वैत की यात्रा।

सामान्य मनुष्य को सबसे अधिक डर लगता है- 1. मृत्यु, 2. श्मशान, 3. अंधकार, 4. वासना, 5 सामाजिक भय।

इसी से उसके जीवन में निरन्तर बंधन बढ़ते जाते है और अघोर पंथ, वामाचार इन बंधनों को तोड़ने का मार्ग माना गया है। दक्षिणाचार हो या वामाचार, दोनों में ही गुरु के बिना कोई साधना सम्पन्न नहीं होती। इसीलिये दक्षिणाचार व्यक्ति हो या अघोर पंथ हो वह पहले गुरु को धारण करता है और गुरु से आज्ञा लेकर अपनी साधना प्रवृत हो जाता है।

सामान्य व्यक्ति जीवन में दक्षिणाचार को चुनता है क्योंकि वह सरल लगता है लेकिन वामाचार अघोर पंथ दक्षिणाचार से बहुत उच्च पंथ है क्योंकि वहां शरीर नहीं चेतना जीवन का आधार है। अब प्रश्न उठता है कि क्या सामान्य गृहस्थ व्यक्ति अघोर पंथ की साधना कर सकता है? वास्तव में प्रत्येक मनुष्य के मन में दक्षिणाचार और वामाचार दोनों विद्यमान रहते है। जब व्यक्ति भौतिक संसार के साथ-साथ अपने जीवन को उच्चतम शिखर पर ले जाना चाहते है तो वह अघोर पंथ का अनुसरण करता है। इसके लिये आवश्यक नहीं है कि हर बार श्मशान में ही जाया जाये, घर-परिवार को छोड़ा जाये। जटा-जूट बढ़ाये जाये, नग्न रहा जाये।

जब मन की धारा को हम अघोर तत्व से जोड़ते है तो अपने भीतर शिवत्व का बीज आरोपित करते है और वह मन में स्थापित बीज विकसित होकर बिल्व पत्र के वृक्ष के समान बन जाता है। जिसके पत्ते-पत्ते त्रिदल रूप में शिव को अर्पित किये जाते है अर्थात् शिव के साथ एकाकार हुआ जाता है।

**अघोर साधना का आधार गुरु में श्रद्धा, शिव के प्रति समर्पण, मंत्र-जप, ध्यान, यंत्र, सेवा, वैराग्य भाव और आत्मनुशासन है।**

**अघोर तंत्र की सरलता उसके बाहरी स्वरूप में नहीं, बल्कि उसके मूल दर्शन में निहित है। यह साधक को बताता है कि परमात्मा तक पहुंचने का मार्ग बाहरी जटिलता से नहीं, बल्कि आन्तरिक पवित्रता, गुरु-भक्ति, शिव-समर्पण, करुणा और समभाव से प्रशस्त होता है।** अघोर परम्परा के अनुसार जब साधक का मन निर्मल, स्थिर और अहंकार से मुक्त हो जाता है, तब उसकी चेतना में शिवतत्त्व का सूक्ष्म स्पन्दन प्रकट होने लगता है। यही स्पन्दन साधक को आत्मबोध, शान्ति, निर्भयता और परम कल्याण की दिशा में अग्रसर करता है। अतः अघोर तंत्र का वास्तविक उद्देश्य भय उत्पन्न करना नहीं, बल्कि भय का अंत करना, अज्ञान का नाश करना और प्रत्येक जीव में शिव के दिव्य स्वरूप का अनुभव कराना है।

अघोर हैं भगवान शिव। भगवान शिव को अघोरेश्वर कहा गया है, जो अपने प्रलयंकारी रूप में दसों दिशाओं को आन्दोलित कर सकते हैं, जो अपने नृत्य द्वारा सृष्टि में उथल-पुथल ला सकते हैं। **अघोर तंत्र** को तो वही समझ सकता है, जो पूर्ण शिव भक्त हो, जिसने अपने जीवन में तंत्र को पूर्ण रूप से समझने का निश्चय ठान रखा हो। अघोरियों का भी एक विशुद्ध मत रहता है अतः उन्होंने अपना एक अलग ही सम्प्रदाय बना रखा है। ऐसे सम्प्रदाय को अघोर सम्प्रदाय कहते हैं। **इस सम्प्रदाय द्वारा प्रदत्त अघोर साधनाओं का विशेष महत्त्व है, जिसके माध्यम से समस्त इन्द्रियों को वशीभूत कर कुण्डलिनी जागरण के द्वारा शिवत्वमय हुआ जाता है। भगवान शंकर इस पद्धति के प्रथम आचार्य हैं, जनक हैं।**

यह स्वाभाविक है, कि इन्द्रिय निग्रह के बाद चेतना का विकास स्वतः होने लगता है। प्राणवायु के द्वारा मूलाधार में प्रसुप्त कुण्डलिनी स्वतः ही जाग्रत होकर विभिन्न चक्रों का भेदन करती हुई सहस्रार में पहुंच जाती है। यही अघोर सम्प्रदाय में जीव को शिवमय बनाने की उदात्त प्रक्रिया कही जाती है। प्रत्येक गृहस्थ को अघोर साधना अवश्य सम्पन्न करनी चाहिये, जिससे मेरुदण्ड में स्थित चेतना का आधार इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना में एकात्म स्थापित हो सके।




अघोर तत्व के इस विशुद्ध स्वरूप की साधना करना ही साधक के जीवन का सौभाग्य है, क्योंकि धन, यश, मान, पद, प्रतिष्ठा तो किसी अन्य साधना से भी प्राप्त हो सकते हैं, परन्तु यह सब प्राप्त हो, और साथ ही प्राप्त हो एक आन्तरिक आनन्द, एक आन्तरिक मस्ती, एक आन्तरिक खुमारी, हृदय के अन्दर लहराता हुआ शांति का समुद्र, ...ऐसा तो केवल अघोर तंत्र साधना के माध्यम से ही संभव है। **एक तरफ जहां साधक के भौतिक जीवन में किसी प्रकार की कोई अड़चन, कोई न्यूनता नहीं रहती, सभी प्रकार के भौतिक सुख उसे प्राप्य होते हैं, वहीं वह जीवन में सभी प्रकार के आनन्द का रसास्वादन करता है, जो कि एक आध्यात्मिक उपलब्धि है।**

## अघोरेश्वर साधना आवश्यक

1. शरीर में स्थित दैहिक दोष पूर्ण रूप से समाप्त हो जाते हैं और शरीर में एक कान्ति या द्युति छा जाती है।
2. मूल रूप से शिवत्व प्राप्ति की साधना होने से **साधक के व्यक्तित्व में एक गजब का सम्मोहन, आकर्षण व्याप्त हो जाता है** और उसके प्रशंसकों की संख्या बढ़ने लगती है।
3. अघोर रूप सिद्ध होने पर व्यक्ति शत्रुओं का शमन करने में समर्थ हो जाता है या दूसरे अर्थों में **शत्रु स्वयं ही उसके सामने आने से कतराने लगते हैं।**
4. **उसके ऊपर मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण आदि का प्रभाव नहीं पड़ता।**
5. शिव के औघड़दानी, अघोर स्वरूप की कृपा प्राप्त होने से उसके जीवन में **धन-धान्य की कमी नहीं रहती।**
6. भगवान शिव की तरह ही वह **निरन्तर आनन्द और मस्ती में डूबा रहता है,** उसकी चिन्ताएं धीरे-धीरे समाप्त हो जाती हैं।

### साधना विधान -

इस साधना को **अघोर चतुर्दशी (10 सितम्बर 2026)** अथवा **किसी भी सर्वार्थ सिद्धि योग, पुष्प योग, प्रदोष, अमावस्या अथवा किसी भी सोमवार** के दिन प्रारम्भ किया जा सकता है। प्रातः काल स्नानादि कर पीले वस्त्र धारण कर गुरु पीताम्बर ओढ़ लें। भगवान सदाशिव के अघोरेश्वर अर्थात् आरोग्य प्रदाता स्वरूप की साधना से पूर्व सद्गुरुदेव निखिल का पूजन अवश्य सम्पन्न करना चाहिए। इस हेतु सर्वप्रथम अपने सामने गुरु चित्र/विग्रह/यंत्र/पादुका स्थापित कर लें और दोनों हाथ जोड़कर गुरुदेव निखिल का ध्यान करें -

*गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।*
*गुरुः साक्षात् पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।*

निखिल ध्यान के पश्चात् गुरु चित्र/विग्रह/यंत्र/पादुका को जल से स्नान करावें -

*ॐ निखिलम् स्नानम् समर्पयामि।।*

इसके पश्चात् स्वच्छ वस्त्र से पौंछ लें निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए कुंकुम, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, धूप-दीप से पंचोपचार पूजन करें -

*ॐ निखिलम् कुंकुम समर्पयामि।*
*ॐ निखिलम् अक्षतान समर्पयामि।*
*ॐ निखिलम् पुष्पम् समर्पयामि।*
*ॐ निखिलम् नैवेद्यम् निवेदयामि।*
*ॐ निखिलम् धूपम् आघ्रापयामि, दीपम् दर्शयामि।*

(धूप, दीप दिखाएं)

अब तीन आचमनी जल गुरु चित्र/विग्रह/यंत्र/पादुका पर घुमाकर छोड़ दें। इसके पश्चात् गुरु माला से गुरु मंत्र की एक माला मंत्र जप करें –

*ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः*

गुरु पूजन के पश्चात् गुरु चित्र के समक्ष ही किसी ताम्र पात्र में **'अघोरेश्वर यंत्र'** को स्थापित करें, उस पर **'रुद्राक्ष माला'** रखें तथा दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करें –

*ॐ विष्णु र्विष्णु र्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णुराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे श्वेत वाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरत खण्डे आर्यावर्तैक देशान्तरगर्ते पुण्यक्षेत्रे अमुक गोत्रीयः (अपना गोत्र बोलें) अमुक शार्माऽहं (नाम बोलें) अद्य सकल मनोकामना पूर्ति निमित्तं अघोराख्यं साधनां संपत्यस्ये*

जल भूमि पर छोड़ दें।

**दिग्बन्धन**

चारों दिशाओं में जल छिड़कते हुए बोलें –

**पूर्व –**

*ॐ ह्रीं स्फुर स्फुर दुरितान्तक पूर्व दिशं बन्धय बन्धय। माम् रक्ष रक्ष। प्रस्फुर प्रस्फुर।*

**दक्षिण –**

*घोर पशुपते दक्षिण दिशं बन्धय बन्धय माम् रक्ष रक्ष।*

**पश्चिम –**

*त्रिलोचन पश्चिमदिशं बन्धय बन्धय। माम् रक्ष रक्ष। प्रचट प्रचट।*

**उत्तर –**

*गंगाधर उत्तरदिशं बन्धय बन्धय। माम् रक्ष रक्ष। वम वम।*

**विनियोग –**

*अस्य श्री अघोर मंत्रस्य अग्नि ऋषिः अनुष्टुप छन्दः अघोर रुद्रो देवता। मम इष्टकाम्यार्थ सिद्धयर्थे विनियोगः।*

– जल को जमीन पर छोड़ दें।

**न्यास**

निम्न मंत्र बोलते हुए निर्दिष्ट अंगों को स्पर्श करें –

**ॐ अघोरेभ्यो हृदयाय नमः।** (हृदय)
**अथ घोरेभ्यः शिरसे स्वाहा।** (सिर)
**घोरघोरतरेभ्यः शिखायै वौषट्।** (शिखा)
**सर्वेभ्यः कवचाय हुं।** (पूरा शरीर)
**सर्व शर्वेभ्यो नेत्रत्रयाय वषट्।** (दोनों नेत्र)
**नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः अस्त्राय फट्।** (अपने सिर पर हाथ घुमा कर ताली बजाएं)

**ध्यान**

*ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारु-चन्द्रावतंसं, रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्ग परशु-मृग-वराभीतिहस्तं प्रसन्नम्। पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं, विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।*

भगवान सदाशिव हिमगिरि के समान, चक्रधर, रत्न जैसी उज्ज्वल देह, चारों हाथों में परशु, मृग, वर और अभय मुद्रा को धारण किए हुए, प्रसन्न, पद्म पर विराजमान, देवगणों से स्तुत्य व्याघ्र चर्म धारण किए हुए। सर्वादि, सर्ववन्द्य, समस्त श्रमहारी, पंचमुख एवं त्रिनेत्र रूपी शिव को मेरा प्रणाम्।

दोनों हाथ जोड़कर अघोरेश्वर भगवान शिव को प्रणाम करें तथा पूर्ण श्रद्धायुक्त होकर **रुद्राक्ष माला** से निम्न मंत्र का जप 11 दिन तक नित्य 5 माला जप करें –

*//अघौरेभ्यौ अथ् घोरेभ्यौ घोर घोर तरेभ्यः सर्वत शर्व सवेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्र रुपेभ्यौ नमः//*

अघोरेश्वर साधना 11 दिवसीय साधना है, ग्यारहवें दिन मंत्र जप के पश्चात् घृत से उपरोक्त मंत्र बोलते हुए अग्नि में 108 बार आहुति दें। ऐसा करने से यह साधना पूर्ण मानी जाती है। साधना समाप्ति के तीन दिन तक यंत्र व माला को पूजा स्थान में ही रहने दें, इसके पश्चात् यंत्र व माला को जल में विसर्जित कर दें।

**प्राण प्रतिष्ठत अघोरेश्वर यंत्र – 450/–, रुद्राक्ष माला – 300/–**

अघोर चतुर्दशी - 10 सितम्बर 2026

## शरीरं साधयति वा पातयति वा

स्वस्थ तन, तो स्वस्थ मन और यही है जीवन का सर्वोपरि धन

# अघोर रोग मुक्ति साधना

## रोग-शोक की समाप्ति

**अघोर चतुर्दशी (10 सितम्बर 2026) अथवा किसी भी रविवार, मंगलवार अथवा किसी भी शुभ मुहूर्त में** रात्रि को काले रंग के ऊनी आसन पर बैठ जाएं। सर्वप्रथम अपने सामने एक बाजोट पर लाल वस्त्र बिछाकर उस पर गुरु चित्र स्थापित कर दें। अघोरेश्वर शिव साधना में दी गई विधि अनुसार गुरुदेव निखिल का पूजन सम्पन्न करें।

गुरु पूजन के पश्चात् गुरु चित्र के आगे ही अष्टगंध की ढेरी बना लें। उस पर **'रोग मुक्ति शिव यंत्र'** स्थापित करें। सर्वप्रथम दोनों हाथ जोड़कर भगवान सदाशिव के मृत्युंजय स्वरूप का का ध्यान करें -

*हस्ताम्भोजयुगस्थकुम्भयुगला दुद्धृत्य तोयं शिरः,*
*सिञ्चन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वांके सकुम्भौ करौ।*
*अक्षस्रङ्मृगहस्तमम्बुगतं मूर्द्धेस्थचन्द्रस्रवत्,*
*पीयूषार्द्रतनुं भजे सगिरिजंत्र्यम्बकं च मृत्युञ्जयम्।।*

**भगवान मृत्युञ्जय के आठ हाथ हैं। ऊपर के दो हाथों से दो कलश उठाये हुए हैं और नीचे वाले दो हाथों से वे सिर पर जल डाल रहे हैं। सबसे नीचे वाले दो हाथों में भी वे दो कलश लिए हुए हैं, जिन्हें गोद में रखा हुआ है। सातवें हाथ में रुद्राक्ष और आठवें हाथ में मृग धारण कर रखा है, उनका आसन कमल का है, उसके सिर पर स्थित चन्द्रमा निरन्तर अमृत वर्षा कर रहा है, जिससे शरीर भीग गया है, वे त्रिनेत्र युक्त हैं, और उन्होंने मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ली है, उनके बांयीं ओर भगवती गिरिजा विराजमान हैं।** ध्यान के पश्चात् **'अघोर माला'** से निम्न मंत्र की 7 माला मंत्र-जप करें-

**मंत्र**

*।। ॐ ह्रां ह्रीं हूं अघोरेभ्यो सर्व सिद्धिं देही देही अघोरेश्वराय हूं ह्रीं ह्रां फट्।।*

यह मंत्र-जप दूसरे के लिए भी संकल्प करके किया जा सकता है। मंत्र-जप समाप्ति के बाद अष्टगंध (अथवा राख) से रोगी को टीका (7 दिन तक) लगाएं तथा यंत्र व माला को उसी वस्त्र में लपेट कर नदी या जल में प्रवाहित कर दें।

अघोर रोग मुक्ति साधना की विशेषता है, कि कैसा भी गम्भीर रोगी हो, उसकी तबीयत में निश्चित रूप से सुधार होने लगता है। इस साधना को हजारों-हजारों साधक ने सम्पन्न कर इस साधना का लाभ प्राप्त किया है। इस साधना से लाभ प्राप्त कर चुके साधकों ने अघोर रोग मुक्ति साधना को पत्रिका में प्रकाशित करने का निवेदन किया है।

**- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/-**

# अनंत शक्ति की चाबी



**हर साधक में अनंत शक्ति है, जिसका निवास उसके मन में है। अनंत साधना का प्रयोजन है उस अनंत शक्ति से साधक के संपर्क सूत्र को जोड़ देना।**

## अनंत शक्ति का स्रोत

हर साधक में अनंत शक्ति है, जिसका निवास उसके मन में है। अनंत साधना का प्रयोजन है उस अनंत शक्ति से साधक के संपर्क सूत्र को जोड़ देना।

**हम सब ऊर्जा की प्रतिमूर्ति हैं। हमारी ऊर्जा का सबसे बड़ा भंडार हमारे मन में स्थित है। जब हम अपने मन से संपर्क स्थापित कर लेते हैं, तब हमें उस खजाने की चाबी मिल जाती है जो सदैव से हमारी ही थी, परंतु जिसका ज्ञान हमें नहीं था। वही खजाना है, हमारे मन की शक्ति।**

किन्तु समस्या यह है कि हम अपनी शक्ति का आकलन केवल शारीरिक बल के आधार पर करते हैं और यही हमारी उन्नति में सबसे बड़ी बाधा बन जाता है।

सोचिए, जब कोई कलाकार एक अद्भुत चित्र बनाता है, कोई कवि अमर कविता रचता है या कोई वैज्ञानिक महान आविष्कार करता है, तो उसकी प्रेरणा का वास्तविक स्रोत क्या होता है?

वह है, मन की शक्ति। शारीरिक बल केवल विचारों को कर्म में परिवर्तित करने का माध्यम है, वह उन विचारों का कारण नहीं है।

मन और शरीर के बीच यदि किसी एक को प्रधान माना जाए, तो वह मन है। परंतु हमने शरीर को ही सबसे अधिक महत्त्व देना आरंभ कर दिया है, क्योंकि शरीर की आवश्यकताएं बहुत तीव्र है और बार-बार सामने आती हैं, जैसे भूख, प्यास और निद्रा, यदि इन्हें समय पर पूरा न किया जाए तो शरीर दुर्बल हो जाता है।

एक दुर्बल शरीर रोगग्रस्त हो सकता है। उसे ज्वर हो सकता है, पीड़ा हो सकती है। परंतु, एक दुर्बल मन हमारी अनंत शक्ति को क्षीण कर देता है। इसका परिणाम होता है हम अपने जीवन को संकुचित कर देते हैं, महानता से दूर हो जाते हैं।

शरीर के ज्वर को मापने के लिए थर्मामीटर है, रक्तचाप मापने के लिए यंत्र है, अनेक प्रकार की चिकित्सीय जांच उपलब्ध हैं। लेकिन मन अस्वस्थ है, इसका पता कैसे चले?

## बीमार मन की पहचान

इसे जानने का सूत्र है मनोभाव। हमारे मनोभाव का सीधा सम्बन्ध मस्तिष्क से है। मस्तिष्क पूरे शरीर का संचालन करता है और मन उसके लिए निर्देशक का कार्य करता है। मन, शरीर में होने वाले प्रत्येक परिवर्तन का अदृश्य रिमोट कंट्रोल है। मन के भावों को शरीर तक पहुंचने में कुछ समय लग सकता है, किन्तु मस्तिष्क तो उसी क्षण उनका प्रतिबिंब बन जाता है। जब मन बिखर जाता है, तब मस्तिष्क तनाव ग्रस्त हो जाता है। जब मन भय से भर जाता है, तब मस्तिष्क की कार्यक्षमता भी प्रभावित होने लगती है।

**बुद्धि की शक्ति और मन की शक्ति भिन्न नहीं हैं, बल्कि एक-दूसरे से गहराई से संयुक्त हैं। यदि मन चिड़चिड़ा, अशांत और क्रुद्ध है, तो वह बुद्धि को भी दिग्भ्रमित कर देता है। हमारी निर्णय लेने की क्षमता, विवेक और सोचने की शक्ति मन की अवस्था से ही प्रभावित होती है।**

हमारे शरीर की डोर मन के हाथों में है। **मन सारथी है और शरीर रथ। मन जैसा होगा, शरीर भी वैसा ही होगा।**

**यदि मन दुर्बल, भयभीत और तनावग्रस्त है, तो उसका प्रभाव शरीर पर भी स्पष्ट दिखाई देगा। इसके विपरीत यदि मन प्रसन्न, स्थिर और संतुलित है, तो शरीर भी उसी अनुरूप स्वस्थ और ऊर्जावान रहेगा।**

इसलिए एक सुदृढ़, शांत और संतुलित मन केवल स्वस्थ शरीर के लिए आवश्यक ही नहीं, बल्कि अनिवार्य भी है।

एक बीमार मन अत्यधिक चिंतन और मनन करता रहता है। इसे ओवरथिंकिंग कहा जाता है। वह स्पर्धा में इतना डूब जाता है कि स्वयं को भूल जाता है। वह अत्यधिक संवेदनशील होता है और भीतर ही भीतर आत्मग्लानि से भरा रहता है। आत्मग्लानि के कारण उसका आत्मविश्वास क्षीण हो जाता है और वह कई बार दूसरों के सामने कमजोर, निम्न स्तर के व्यक्ति की तरह व्यवहार करने लगता है। उसे ऐसा प्रतीत होता है कि हर व्यक्ति उसका अपमान कर रहा है। छोटी-छोटी बातें भी उसे गहराई से आहत कर देती हैं। उसका हास्य बोध समाप्त होने लगता है। उसमें स्वयं को बड़ा सिद्ध करने की इच्छा रहती है। वह दिखावा करता है और चाहता है कि लोग उसकी महत्ता को स्वीकार करें।

महत्वपूर्ण बात यह है कि मन में ब्रह्म का निवास है, इसलिए उसे किसी के सामने स्वयं को सिद्ध करने की कोई आवश्यकता नहीं होती। आवश्यकता केवल इस बात की है कि वह अपनी अनंत शक्ति के कोश की चाबी प्राप्त करे, जिससे वह उस दिव्य शक्ति का पूर्ण उपयोग कर सके।

**जानते हो, वह चाबी क्या है? वह चाबी एक नहीं, बल्कि तीन हैं -**

1. **'महत्त्वाकांक्षा', जो जीवन को ऊंचे लक्ष्य देती है।**
2. **'साधना', जो उन लक्ष्यों तक पहुंचने की शक्ति और पात्रता प्रदान करती है।**
3. **'धैर्य', जो कठिनाइयों के बीच भी साधक को मार्ग से विचलित नहीं होने देता।**

**इन्हीं तीन चाबियों से मनुष्य अपने भीतर छिपे अनंत सामर्थ्य के द्वार खोल सकता है।**

## सफलता की तीन चाबियां :

चंद्रगुप्त मौर्य के जीवन में इन तीनों चाबियों का अद्भुत संगम दिखाई देता है।

एक समय था जब चंद्रगुप्त के पास न विशाल सेना थी, न धन था, न कोई बड़ा राज्य। सामान्य परिस्थितियों में जन्मे उस युवक ने एक ऐसा स्वप्न देखा जिसे उस समय लगभग असंभव माना जाता था, समस्त भारत को एक शक्तिशाली साम्राज्य के रूप में संगठित करना। यही थी उसकी **महत्त्वाकांक्षा**। यदि लक्ष्य छोटा होता, तो इतिहास भी छोटा होता।

पर केवल स्वप्न देखने से साम्राज्य नहीं बनते। आचार्य चाणक्य के मार्गदर्शन में चंद्रगुप्त ने वर्षों तक युद्धकला, राजनीति, कूटनीति, अनुशासन और नेतृत्व का कठोर अभ्यास किया। उसने अपने शरीर को तपाया, बुद्धि को पैना किया और मन को संयमित किया। यही थी उसकी **साधना**। साधना ने उसे उस महान लक्ष्य के योग्य बनाया।

फिर भी सफलता एक ही प्रयास में नहीं मिली। प्रारंभिक युद्धों में उसे पराजय का सामना करना पड़ा। कई बार उसे पीछे हटना पड़ा, जंगलों में भटकना पड़ा, अपनी योजनाएं बदलनी पड़ीं। यदि वह उन असफलताओं से टूट जाता, तो शायद इतिहास में उसका नाम भी न होता। किंतु उसने हार को अंत नहीं, शिक्षा माना। यही था उसका **धैर्य।**

अंततः वही युवक, जिसके पास प्रारंभ में कुछ भी नहीं था, नंद साम्राज्य को परास्त कर अखंड भारत के सबसे विशाल साम्राज्यों में से एक का निर्माता बना।

गुरु की कृपा से चंद्रगुप्त मौर्य अपने शक्ति कोष को खोलने में सफल हुए क्योंकि गुरु ने उन्हें निराश नहीं होने दिया।

**सत्य है, गुरु के मार्गदर्शन के अभाव में साधक इस अनंत शक्ति को खोल नहीं सकता है। साधना पथ कठिन है। सफलता अधिकांशतः पहले प्रयास में प्राप्त नहीं होती।**

साधक का मन एक दोधारी तलवार के समान होता है। वह एक ओर उसके शत्रुओं पर प्रहार करता है, तो दूसरी ओर असफलता की स्थिति में उसी के आत्मविश्वास को भी जर्जर कर देता है।

**गुरु साधक को वही विद्या सिखाते हैं, जिससे वह अपने मन पर नियंत्रण स्थापित कर सके। जब मन नियंत्रित हो जाता है, तब उसके भीतर सुप्त पड़ी अनंत शक्तियां जागृत होने लगती हैं, और वही जागृत शक्ति उसे सफलता के शिखर तक पहुंचा देती है।**

अनन्त चतुर्दशी - 25 सितम्बर 2026

सृष्टि विष्णु की ही माया, लीला का स्वरूप है।
भगवान श्री विष्णु का सगुण स्वरूप भी है और निर्गुण स्वरूप भी।
माया रूपी स्वरूप में वे लक्ष्मी के साथ अपने भक्तों को अभीष्ट फल प्रदान करते हैं...

# अनन्त विष्णु साधना

यतो यतो निश्चरति मनश्चञ्चलम् स्थिरम्।
ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयेत्।।

**यह चंचल और अस्थिर मन जहां-जहां भटक जाए, वहां-वहां से उसे संयमपूर्वक हटाकर पुनः आत्मा में, परम सत्य में स्थिर करना चाहिए।**

**विष्णु-तत्त्व मन को केवल शान्त ही नहीं करता, बल्कि उसे धर्म, कर्तव्य और करुणा की दिशा में प्रेरित करता है।**

**विष्णु उपासना को अन्तःकरण की निर्मलता और जीवन की स्थिरता का आधार माना गया है।**



विष्णु साधना अनन्त साधना है, जो साधक के शरीर ही नहीं, मन के ऊपर आए दोषों का भी निराकरण कर उसमें तेज, कर्मशीलता का उद्भव कर उसकी शक्ति को जाग्रत कर, शक्ति का विकास कर, साधक को अनन्त की ओर अर्थात् विशालता की ओर ले जाती है, सूक्ष्म से विराट की ओर, धरती से आकाश की ओर उठने की साधना ही तो अनन्त विष्णु साधना है। भगवान विष्णु के अनन्त स्वरूप की साधना करने से अनन्त साधनाओं का, अनन्त देवों के प्रभाव का फल मिलता है। अनन्त चतुर्दशी भगवान विष्णु की साधना का श्रेष्ठ दिवस है।

अनन्त चतुर्दशी का शास्त्रों में विशेष महत्व है और बताया गया है कि जीवन में हमें बाधाएं या अड़चनें इसीलिए आती रहती हैं कि हम पूर्ण रूप से शुद्ध और पवित्र नहीं हैं अर्थात् हमारे जीवन में पाप-दोष अधिक हैं।

...और जब दोष समाप्त हो जाते हैं, तो मन शुद्ध और चैतन्य हो जाता है, फलस्वरूप चेहरे पर तेजस्विता आ जाती है, उसकी वाणी में दृढ़ता एवं स्पष्टता आ जाती है और वह जीवन में सफलता की ओर अग्रसर होने लगता है।

**जीवन से पाप दोष समाप्त कर, मन को सुदृढ़ करने वाले विष्णु तत्व से समाहित होने की क्रिया का नाम ही अनन्त साधना है। भगवान विष्णु की अनन्त साधना से मनुष्य के मन की अनन्त शक्तियां जाग्रत होती है तथा साधक पुरुष से पुरुषोत्तम बनने की क्रिया प्रारम्भ कर देता है। इस साधना को सम्पन्न करने पर तत्क्षण साधक के चेहरे पर ओज और तेजस्विता में वृद्धि होती है और अपनी मनोकामनाओं को पूर्ण करने में सक्षम होता है।** कई बार तो साधना समाप्त होते-होते उसके कार्य की पूर्ति के समाचार प्राप्त हो जाते हैं।

ऐसे कई साधक हैं जिन्होंने संकल्प पूर्वक अनन्त साधना को अपने जीवन का एक अंग बना लिया है। प्रत्येक वर्ष साधक गुरु द्वारा प्राप्त अनन्त चतुर्दशी साधना सम्पन्न करते हैं। जो पुरुष हैं और पुरुषोत्तम बनने की इच्छा रखते हैं उन्हें तो निश्चय ही अनन्त चतुर्दशी को साधना सम्पन्न करनी चाहिए।

## साधना-विधान

भगवान **अनन्त (विष्णु)** से सम्बन्धित यह महत्वपूर्ण पर्व इस वर्ष दिनांक **25 सितम्बर 2026** को आ रहा है।

साधक को चाहिए कि **अनन्त चतुर्दशी** के दिन ही (यह साधना पूरे दिन में कभी भी सम्पन्न की जा सकती है) साधक स्नान कर पीला या सफेद आसन बिछा कर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाए और अपने सामने एक बाजोट पर पीला वस्त्र बिछा दें।

किसी भी साधना-पूजन की पूर्णता गुरुदेव निखिल के आशीर्वाद के बिना संभव ही नहीं है। अतः सर्वप्रथम गुरुदेव का विधिवत् पूजन अवश्य ही सम्पन्न कर लेना चाहिए। आप अपने दैनिक पूजन में गुरुदेव के जिस चित्र, पादुका, यंत्र अथवा विग्रह का पूजन करते हैं उसे स्वच्छ कर अपने सामने स्थापित कर लें। दोनों हाथ जोड़कर गुरुदेव निखिल का ध्यान करें -

*गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।*
*गुरुः साक्षात् पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥*

निखिल ध्यान के पश्चात् गुरु चित्र/विग्रह/यंत्र/पादुका को जल से स्नान करावें -

*ॐ निखिलम् स्नानम् समर्पयामि॥*

इसके पश्चात् स्वच्छ वस्त्र से पौंछ लें निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए कुंकुम, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, धूप-दीप से पंचोपचार पूजन करें -

*ॐ निखिलम् कुंकुम समर्पयामि।*
*ॐ निखिलम् अक्षतान समर्पयामि।*
*ॐ निखिलम् पुष्पम् समर्पयामि।*
*ॐ निखिलम् नैवेद्यम् निवेदयामि।*
*ॐ निखिलम् धूपम् आघ्रापयामि, दीपम् दर्शयामि।*
(धूप, दीप दिखायें)

अब तीन आचमनी जल गुरु चित्र/विग्रह/यंत्र/पादुका पर घुमाकर छोड़ दें।

इसके पश्चात् गुरु माला से गुरु मंत्र की एक माला मंत्र जप करें -

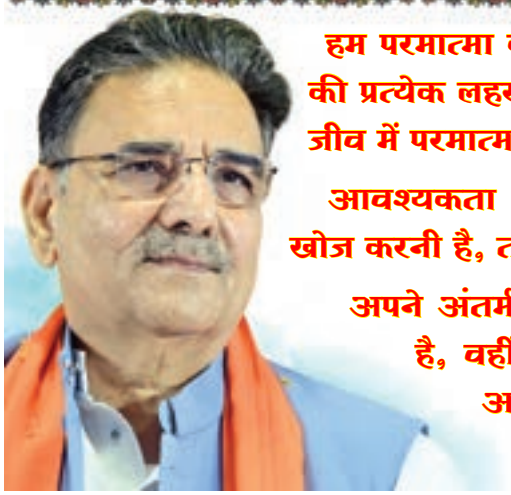
*ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः*

गुरु पूजन के पश्चात् मूल साधना-पूजन निम्न प्रकार सम्पन्न करें -

गुरु चित्र के समक्ष किसी ताम्र पात्र में **'सर्वकामना सिद्धि अनन्त यंत्र'** को स्थापित कर दें। यह यंत्र एक बार घर में स्थापित होने पर भविष्य में प्रति वर्ष यही यंत्र प्रयोग में आता रहता है।

सर्वप्रथम यंत्र को पंचामृत से स्नान करायें, फिर उसे पुनः शुद्ध जल से स्नान कराकर किसी अन्य ताम्र पात्र में *'ऐं ह्रीं श्रीं'* केसर से लिख कर उसमें यंत्र स्थापित करें।

इसके पश्चात् यंत्र का पूजन *'अनन्ताय नमः'* का उच्चारण करते हुए कुंकुम, अक्षत एवं पुष्प आदि से करें और शुद्ध घृत का दीपक व अगरबत्ती जलाएं।



**हम परमात्मा की सर्वोत्तम और दिव्यतम कृति हैं। जिस प्रकार समुद्र की प्रत्येक लहर में समुद्र का ही अस्तित्व होता है, उसी प्रकार प्रत्येक जीव में परमात्मा की चेतना स्पंदित होती है।**

**आवश्यकता केवल उस चेतना को पहचानने की है। इसलिए यदि खोज करनी है, तो बाहर नहीं, अपने भीतर कीजिए।**

**अपने अंतर्मन के मौन में उतरिए, क्योंकि वहीं गुरु का मार्गदर्शन है, वहीं इष्ट का सान्निध्य है और वहीं परमात्मा का असीम आनन्द-साम्राज्य है।**

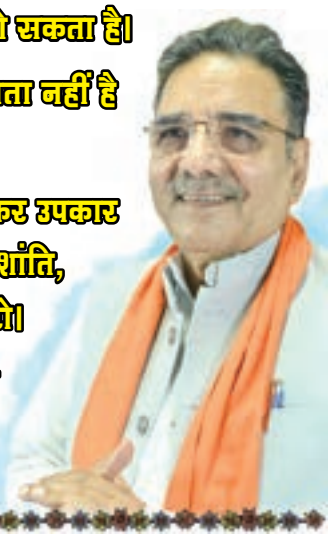
**- सद्गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली**

**मन से ही ईश्वर जाग्रत हो सकता है और मन से ही घृणा का दानव जाग्रत हो सकता है।**

**यदि तुम अपनी स्वयं की पहचान जानना चाहते हो, जो पहचान किसी को पता नहीं है वह पहचान तुम्हारा मन है।**

**इस मन की धारा को देवत्व की ओर जोड़ो, जिससे ईश्वर ने जो यह जन्म देकर उपकार किया है, उस उपकार को घर-परिवार समाज में प्रेम, दया, सद्भावना, आशा, शांति, सहानुभूति, कृतज्ञता, उदारता, सत्य, करुणा और विश्वास के रूप में वितरित करो।**

**मन से ही इस मनुष्य जीवन को सार्थक करना है, जीवन है तो सार्थक होना ही चाहिये।**



**– सद्गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली**

इस पश्चात् यज्ञोपवीत को यंत्र पर स्थापित कर दें और यज्ञोपवीत में आह्वान करें कि यज्ञोपवीत के प्रत्येक धागे में भगवान अनन्त आकर स्थापित हों।

इसके बाद यज्ञोपवीत के सिर पर जो तीन गांठें होती हैं, उन तीन गांठों के मूल में ब्रह्मा, मध्य में विष्णु, ऊपरी गांठ पर भगवान शिव का निवास है। तीनों गांठों पर केसर लगावें तथा संक्षिप्त पूजन करें।

इसके बाद यज्ञोपवीत को खोल कर दोनों हाथों में लेकर उसे आकाश की ओर ऊपर उठाएं और *'ॐ सूर्याय नमः'* मंत्र द्वारा उस यज्ञोपवीत में सूर्य की तेजस्विता का आह्वान करें, और मन में यह चिन्तन करें कि इस यज्ञोपवीत के प्रत्येक धागे में सूर्य स्थापित हो रहे हैं जो कि मुझे पूर्ण तेजस्विता प्रदान करने में समर्थ हैं, साथ ही साथ भगवान सूर्य मेरे पूर्व जीवन के और इस जन्म के सभी पापों को समाप्त कर रहे हैं और साथ ही साथ जो तीन प्रकार के दोष व्याप्त होते हैं, उन तीनों प्रकार के दोषों को भी भगवान सूर्य समाप्त कर मुझे पूर्ण चैतन्य और शुद्ध बना रहे हैं।

ऐसी भावना मन में रखते हुए यज्ञोपवीत को नीचे उतार लें और फिर उसे समेट कर अनन्त यंत्र के सामने स्थापित कर दें और उस यज्ञोपवीत को भगवान अनन्त का स्वरूप मान कर उसकी संक्षिप्त पूजा करें, उन्हें नैवेद्य समर्पित करें और हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें कि भगवान अनन्त मेरे जीवन की समस्त कामनाओं को पूर्ण करें और अमुक इच्छा को तो तुरन्त ही पूर्ण करें।

इसके उपरान्त भगवान अनन्त का ध्यान करें –

*यस्तं विश्वमनाद्यन्तमाद्यं स्वात्मनि संस्थितम्।*
*सर्वज्ञममलं विष्णुं सदा ध्यायन् विमुच्यते।।*

भगवान विष्णु शंख-चक्र-गदा-पद्मधारी तथा किरीट और कुण्डलों से विभूषित हैं, पीताम्बर से सुशोभित, सुन्दर कमलों के समान नेत्रों वाले, वनमाला तथा कौस्तुभमणि को धारण करने वाले, जो सदा उन विश्व रूप, आदि-अन्त से रहित, सबके आदि कारण, स्वरूपनिष्ठ, अमल एवं सर्वज्ञ भगवान विष्णु का ध्यान करता हूं।

इसके बाद साधक **विद्युत स्फटिक माला** से निम्न मंत्र का एक माला मंत्र जप करें –

**अनन्त मंत्र**

*।। ॐ ऐं अनन्ताय ऐं नमः ।।*

जब एक माला मंत्र-जप पूरी हो जाए, तब भगवान नारायण की जगदीश आरती और गुरु आरती सम्पन्न करें।

उसके बाद यज्ञोपवीत को धारण कर लें और पुराना यज्ञोपवीत उतार दें। कुछ साधक पुराना यज्ञोपवीत गले में ही रहने देते हैं और उस यज्ञोपवीत को 24 घंटों के लिए दाहिनी भुजा पर बांध लेते हैं। इन दोनों में से किसी भी प्रकार का विधान साधक कर सकते हैं।

इस प्रकार का प्रयोग करने के बाद ही साधक अपने परिवार के साथ भोजन करें और यथोचित दान आदि दें।

अनन्त व्रत करने वाले साधक प्रति वर्ष अनन्त चतुर्दशी के दिन अवश्य ही यह साधना सम्पन्न कर वर्ष भर के लिये भगवान विष्णु की अनन्त कृपा प्राप्त करते है।

**प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. – 600/-**

सद्गुरु वेद वचन

# "आत्मविश्वास"

## भीतर जागृत होने वाली चेतना सफलता का प्रथम सोपान



**आत्मविश्वास वह दिव्य शक्ति है जो मनुष्य को असाधारण उपलब्धियों तक पहुंचा देती है। यह केवल अपने ऊपर विश्वास करने का नाम नहीं, बल्कि शरीर, मन और विचारों पर विजय प्राप्त करने की जीवनशैली है।**

**जिसे तुम हताशा और निराशा समझते हो, वह वास्तव में कुछ और नहीं, केवल आत्मविश्वास का अभाव है। जिस दिन तुम अपने ही मित्र बन जाओगे, उस दिन संसार की कोई शक्ति तुम्हें पराजित नहीं कर पाएगी।**

**जो स्वयं का मित्र बन जाता है, उसके लिए सफलता केवल समय का प्रश्न रह जाती है।**

आत्मविश्वास, केवल एक शब्द नहीं है, यह एक संपूर्ण जीवन दृष्टि है। शब्द स्वयं अपना अर्थ बता रहा है, आत्म का विश्वास अर्थात अपने ऊपर भरोसा करना। परन्तु आज संसार में जहां भी दृष्टि डालो, यही दिखाई देता है कि मनुष्य का अपने ऊपर विश्वास कम होता जा रहा है और दूसरों की राय पर विश्वास बढ़ता जा रहा है। इसीलिए तुम इस बात से अधिक व्याकुल होते हो कि दूसरे तुम्हारे विषय में क्या सोचते हैं, दूसरे तुम्हारी सराहना करते हैं या तुम्हारे कर्मों की उपेक्षा। यह जो निरंतर दूसरों की दृष्टि में जीने की प्रवृत्ति है, यही आत्मविश्वास के क्षय का मूल कारण है।

आत्मविश्वास का सच्चा अर्थ है यह मान लेना कि **मैं सफल अवश्य होऊंगा और जब तक सफलता न मिले, तब तक रुकूंगा नहीं।**

यह किसने निश्चित कर दिया कि सफलता तुम्हारे भाग्य में नहीं लिखी? किस जन्मपत्री ने, किस ग्रह नक्षत्र ने तुम्हें यह संदेश भेजा कि सफलता तुम्हारे लिए नहीं है? सत्य तो यह है कि **सफलता तुम्हें अवश्य मिलेगी, क्योंकि तुम उस परम पिता परमेश्वर की संतान हो, जिसके सामर्थ्य की कोई सीमा नहीं।**

समस्या यह नहीं कि ईश्वर तुम्हारी नहीं सुनता, समस्या यह है कि तुम्हें अपनी प्रार्थना ईश्वर तक पहुंचाना नहीं आता और यह कला है आत्मसंयम की कला, आत्मसम्मोहन की कला, जो अभी तुमने सीखी नहीं।

तुम सदैव यह चाहते हो कि दूसरों को अपने वश में कर लो, दूसरों को सम्मोहित कर लो, परन्तु दूसरे तभी तुम्हारे वश में आएंगे जब तुम स्वयं अपने वश में होना सीख जाओंगे।

श्रीमद् भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं –

*उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।*
*आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः।।*

अर्थात **मनुष्य को चाहिए कि वह स्वयं अपने द्वारा अपना उद्धार करे, स्वयं को अधोगति में न ले जाए क्योंकि आत्मा ही अपना मित्र है और आत्मा ही अपना शत्रु भी।**

यह आत्मविश्वास का मूल सूत्र है। जब तुम स्वयं के मित्र बन जाते हो, तब संसार की कोई शक्ति तुम्हें पराजित नहीं कर सकती और जब तुम स्वयं के विरुद्ध खड़े हो जाते हो, तब बाहर की कोई विजय तुम्हारी रक्षा नहीं कर सकती।

अब स्वयं विचार करके देखो,

प्रातः पांच बजे के कितने ही अलार्म लगाते हो, फिर भी आठ बजे तक शय्या नहीं छोड़ पाते।

प्रतिदिन यह संकल्प लेते हो कि प्रातः उठकर योगाभ्यास करूंगा, प्राणायाम करूंगा परन्तु वह प्रभात कभी नहीं आती।

प्रतिदिन सोचते हो कि आज से धूम्रपान त्याग दूंगा, गुटखा तंबाकू छोड़ दूंगा, परंतु वह दिन भी नहीं आता।

प्रतिदिन संकल्प करते हो कि स्वास्थ्यवर्धक भोजन करूंगा, बाजार का भोजन नहीं करूंगा, परन्तु सायं होते ही चटपटे भोजन के लिए मन व्याकुल हो उठता है।

जब तुम्हारा अपने ऊपर इतना भी अधिकार नहीं, जब तुम्हारा अपना शरीर ही तुम्हारे वश में नहीं, तो तुम्हारा मन तुम्हारे वश में कैसे होगा? और जिसका शरीर पर नियंत्रण नहीं, जिसका मन पर नियंत्रण नहीं, उसका आत्मविश्वास स्वतः ही डगमगाने लगता है।

## आत्मविश्वास के तीन सूत्र –

अपने आत्मविश्वास को स्थिर रखने के लिए जीवन में कुछ बातें अनिवार्य हैं।

पहली बात, तुम्हारा अपने शरीर पर नियंत्रण हो। शरीर पर नियंत्रण का अर्थ है **यह जानना कि तुम क्या खा रहे हो, क्यों खा रहे हो, कब सो रहे हो, कब जाग रहे हो, कितना व्यायाम कर रहे हो।**

दूसरी बात, तुम अपने श्वास के प्रति सजग रहो। श्वास और ध्यान दोनों एक दूसरे से गुंथे हुए हैं। **जिसका ध्यान बिखरा हुआ है, उसकी श्वास भी अस्त-व्यस्त हो जाती है। क्रोध आते ही सबसे पहले श्वास उथली होने लगती है।** इसलिए अपनी श्वास के प्रति पुनः सजग होना आवश्यक है।

तीसरी बात, अपनी मुद्रा के प्रति, अपने चाल ढाल के प्रति, अपने खड़े होने बैठने के ढंग के प्रति सजगता रखो। **पसर कर बैठ जाना, बिना इच्छा के लेट जाना, यह सब धीरे धीरे आत्मविश्वास को शिथिल करता चला जाता है।**

देखो, तुम्हारे पास एक शरीर है, एक मस्तिष्क है और एक मन है। ये तीन साधन हैं, जिनके साथ ईश्वर ने तुम्हें इस संसार में भेजा है। इन्हीं तीनों के समन्वय से तुम महान कार्य कर सकते हो, या फिर छोटा बने रह सकते हो। यह चुनाव सर्वथा तुम्हारा है। यह चुनाव मस्तिष्क से आता है, कार्य शरीर से होता है, और कार्य की प्रेरणा मन से मिलती है। इसलिए आत्मविश्वास को समझो एक ऐसे माध्यम के रूप में, जिसके द्वारा तुम स्वयं को उस दिशा में मोड़ते हो, जहां से सफलता का मार्ग प्रारंभ होता है।

गीता में ही आगे कहा गया है –

*बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः।*
*अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत्।।*

**जिसने अपने आप को अपने ही द्वारा जीत लिया है, उसके लिए आत्मा ही मित्र है, परंतु जिसने स्वयं को नहीं जीता, उसके लिए वही आत्मा शत्रु के समान व्यवहार करती है। यही रहस्य है आत्मविश्वास के उदय और पतन का।**



**सम्मोहन-वशीकरण की शक्ति अर्थात् स्वयं के प्रति विश्वास मनुष्य के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी उपलब्धि है...**

**आत्मविश्वास (स्वयं पर विश्वास) स्वयं की क्षमताओं, मूल्यों और उद्देश्य पर अटूट विश्वास रखने की शक्ति है...**

**जब सम्मोहन-वशीकरण की शक्ति का विकास होता है तब परिस्थितियां चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, वह उनसे संघर्ष करने का सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है।**

**आत्मविश्वासी साधक असफलताओं को अंत नहीं मानता, बल्कि उन्हें सीख और अनुभव का माध्यम समझकर आगे बढ़ता है।**

– सद्गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली

## देह और वाणी में झलकता आत्मविश्वास

तुम्हारे शरीर के आसन में आत्मविश्वास का सूत्र छिपा है।

**पहली, तुम्हारी पीठ सीधी होनी चाहिए, रीढ़ की हड्डी सीधी रहनी चाहिए।** योग और प्राणायाम के प्रत्येक अभ्यास में रीढ़ को सीधा रखने पर विशेष बल दिया जाता है, क्योंकि मूलाधार से जो ऊर्जा उठती है, उसे ऊपर की ओर प्रवाहित करने का मार्ग सुषुम्ना है, और उस मार्ग का सीधा रहना अनिवार्य है।

शरीर की मुद्रा और आत्मविश्वास के बीच एक गहरा, अटूट संबंध है, जिसे प्राचीन योग परंपरा और आधुनिक मनोविज्ञान दोनों ही स्वीकार करते हैं। जब हम रीढ़ को सीधा रखकर, कंधों को खुला रखकर और सिर को ऊंचा उठाकर बैठते या खड़े होते हैं, तो मस्तिष्क को एक सूक्ष्म संकेत मिलता है कि हम सक्षम हैं, सुरक्षित हैं, नियंत्रण में हैं। यह केवल बाहरी दिखावा नहीं, बल्कि शरीर से मन की ओर बहने वाली एक ऊर्जा है, जिसे मनोविज्ञान में एम्बॉडिड कॉग्निशन कहा जाता है। इसके विपरीत **जब कंधे झुके होते हैं, गर्दन नीची होती है, तो शरीर तनाव, भय और असुरक्षा की भाषा बोलने लगता है, और मन धीरे धीरे उसी भावना को आत्मसात कर लेता है।**

योगशास्त्र में ताड़ासन जैसी स्थिर मुद्राओं का अभ्यास इसीलिए कराया जाता है, क्योंकि स्थिर शरीर से स्थिर चित्त उत्पन्न होता है। जब रीढ़ सीधी होती है, तो श्वास गहरी होती है, प्राण शक्ति सुचारु रूप से प्रवाहित होती है और यही प्राणशक्ति आत्मविश्वास का मूल आधार बनती है। इसलिए यदि मन कमजोर लगे, तो पहले शरीर को सीधा करना चाहिए, शेष स्वयं ठीक होने लगता है।

**दूसरी बात, तुम्हारी वेशभूषा स्वच्छ, सुथरी और सुंदर होनी चाहिए।** अपने रूप रंग और सज्जा पर ध्यान देना आवश्यक है, क्योंकि जब तुम स्वयं पर ध्यान नहीं दोगे, तो तुम्हारा अपने ऊपर विश्वास कहाँ से जन्म लेगा?

**तीसरी बात, तुम्हारी वाणी में स्पष्टता और उत्साह होना चाहिए।** बहुत से लोग इस प्रकार बात करते हैं मानो उन्हें विवश करके बोलने के लिए खड़ा कर दिया गया हो।

**चौथी बात, तुम्हारी चाल में गंभीरता और भरोसा दोनों झलकने चाहिए, डगमगाते हुए नहीं, स्थिर होकर।**

### एक आत्मविश्वासी साधक की प्रार्थना -

**हे ईश्वर,**

**मुझे वह शक्ति देना कि मेरा विश्वास स्वयं से कभी डिगे नहीं। परिस्थितियां कितनी भी भयावह क्यों न हों, मेरी करुणा कभी रुकने न पाए। मेरी विनम्रता कभी छूटे नहीं, मेरी श्रद्धा कभी टूटे नहीं।**

**कोई मेरा साथ दे या न दे, मैं अपना साथ कभी न छोड़ूं। मैं हार न मानूं, मैं दान न मांगूं। मैं अकेला भी चलूं, तो भी अपने पथ से विचलित न होऊं।**

**क्योंकि मुझे ज्ञात है कि मेरा मार्ग कठिन अवश्य हो सकता है, पर असंभव नहीं।**

**मुझे पूर्ण विश्वास है कि मैं अवश्य जीतूंगा और जब तक विजय प्राप्त नहीं कर लेता, तब तक रुकूंगा नहीं।**

इस प्रकार आत्मविश्वास कोई एक वस्तु नहीं, यह एक संपूर्ण जीवन पद्धति है। इसमें तुम्हारा स्वास्थ्य सम्मिलित है, तुम्हारा जीवन के प्रति दृष्टिकोण सम्मिलित है और तुम्हारा आचरण भी सम्मिलित है। स्वयं को एक भवन के समान समझो। जिस भवन की नींव गहरी होती है, उसमें रहते हुए मनुष्य भयभीत नहीं होता। जिसके द्वार सुदृढ़ होते हैं, उस भवन में मनुष्य निश्चिंत होकर विश्राम करता है। जिसकी खिड़कियां सुरक्षित होती हैं, वहां रात्रि में सोते समय भय नहीं सताता। ठीक उसी प्रकार, जिस देह में तुम निवास कर रहे हो, उस पर विश्वास रखने के लिए उसके रूप, रंग, चाल ढाल, सज्जा और आचरण, इन सबका एक निश्चित मानदंड होना चाहिए। जब ये सारी बातें एक साथ मिल जाती हैं, तब स्वतः ही अपने ऊपर विश्वास जन्म लेता है, तब मन में यह भाव उठता है कि मैं यह कार्य कर सकता हूं, मैं कुछ भी कर सकता हूं।

और यह भाव तुम्हें बारम्बार स्वयं को स्मरण कराना है। ईश्वर तुम्हारे माता-पिता हैं, तो फिर भय किस बात का, दुर्बलता किस बात की। **आत्मविश्वास कोई बाहर से प्राप्त होने वाली वस्तु नहीं, यह भीतर से जागृत होने वाली चेतना है और जिस दिन यह चेतना जाग जाती है, उस दिन से जीवन की दिशा ही परिवर्तित हो जाती है।**




श्रीकृष्ण षोडश कला सम्पन्न व्यक्तित्व हैं। उनके व्यक्तित्व की विशेषता है कि कोई जो श्रीकृष्ण से जुड़ा उसे लगा श्रीकृष्ण उसी के हैं। देवकी के कान्हा, राधा के प्रियतम, द्रौपदी के सखा, रुक्मिणी के पति, अर्जुन के गुरु, गोपियों के कृष्ण, सुदामा के द्वारकाधीश, श्रीकृष्ण सबके है और नहीं भी!

**ये है श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व की खासियत, हर व्यक्ति से एक सम्बन्ध स्थापित कर लेते है, परन्तु इसके बाद भी श्रीकृष्ण को भली भांति जानने का कोई दावा नहीं कर सकता। एक रहस्यमय गहराई है श्रीकृष्ण में। भगवद्गीता के माध्यम से संसार को योग का संदेश देने वाले श्रीकृष्ण रास रचैया हैं, बंशी बजैया भी!**

निष्काम कर्म का सिद्धान्त देने वाले श्रीकृष्ण के जीवन में रस का प्रवाह धारा प्रवाह है क्योंकि कृष्ण सम्मोहन का दूसरा नाम है। वरन जिसका नाम ही कृष्ण, श्याम, मेघवर्ण (काला) हो, उसके व्यक्तित्व में इतना प्रबल आकर्षण कहां देखने को मिलता है? यह सम्मोहन नहीं तो और क्या है?

श्री कृष्ण की भांति सम्मोहक व्यक्तित्व हर व्यक्ति प्राप्त करना चाहता है। इसे प्राप्त करने के लिए वाक्शक्ति को प्रखर एवं व्यक्तित्व को प्रभावी बनाना पड़ेगा जिसके सम्मुख हर कोई नतमस्तक हो जाए और लोग आपकी बात मानने के लिए तत्पर रहें। उन्हें ऐसा लगे कि जो कुछ भी आप कहते हैं, वही सही हैं। वे आपसे जुड़ने के लिए आपके सम्मुख बातचीत करने के लिए उत्सुक रहें। ऐसा सम्मोहक व्यक्तित्व का स्वामी प्रभावशाली व्यक्तित्व बन जाता है। हर कोई उसे अपना आदर्श मानने लगता है। कार्यक्षेत्र में उनका विशेष प्रभाव हो जाता है। विपरीत लिंग के बीच वह आकर्षण का केन्द्र रहता है क्योंकि उसका हर कोई सम्मान करते है। श्रीकृष्ण समान व्यक्तित्व प्राप्त करने की का अमोघ अस्त्र है - **'श्रीकृष्ण तंत्र सम्मोहन साधना।'**

वृंदावन के गोपियां-गंवालें, गांववासी सभी श्रीकृष्ण के सम्मोहन-वशीकरण के अभिभूत थे। भाद्र शुक्ल पक्ष की अष्टमी अर्थात् राधाष्टमी श्रीकृष्ण की सम्मोहन-वशीकरण शक्ति को साधने का श्रेष्ठ मुहूर्त है। इसके अतिरिक्त साधक शरद पूर्णिमा की महारात्रि को भी यह साधना सम्पन्न कर सकता है। इसके अतिरिक्त किसी भी शुक्रवार से यह साधना प्रारम्भ की जा सकती है। श्रीकृष्ण तंत्र सम्मोहन साधना का प्रारम्भ करें और 30 दिन की इस साधना को सम्पन्न कर अपने व्यक्तित्व को सम्मोहक बनाएं।

## साधना विधान

श्रीकृष्ण तंत्र सम्मोहन साधना के लिये आपके पास तीन चीजें होनी आवश्यक हैं - **सम्मोहन-वशीकरण यंत्र, सम्मोहन-वशीकरण माला** तथा **श्रीकृष्ण तंत्र गुटिका।**

**श्रीकृष्ण तंत्र सम्मोहन साधना को राधाष्टमी 19 सितम्बर 2026 और शरद पूर्णिमा 25 अक्टूबर 2026 के शुभ मुहूर्त** अथवा **किसी भी शुभ मुहूर्त या किसी भी शुक्रवार** से प्रारम्भ किया जा सकता है।

साधना के लिए स्वच्छ पीले वस्त्र धारण कर लें। इत्र छिड़क लें। पीले आसन पर पूर्व की ओर मुख कर बैठ जाएं। सामने बाजोट पर पीला वस्त्र बिछा दें।

सर्वप्रथम साधना में सफलता हेतु गुरु पूजन सम्पन्न करें। पंचोपचार गुरु पूजन सम्पन्न कर, गुरुदेव से साधना में सफलता की प्रार्थना करें।

इसके पश्चात् बाजोट पर एक ताम्र पात्र में पीले पुष्पों के आसन पर **'सम्मोहन-वशीकरण यंत्र'** को स्थापित करें। यंत्र के ऊपर गुटिका को रखें।

सबसे पहले गणपति का स्मरण करें -

*लम्बोदराय वरदाय सुरेश्वराय,*
*गणपत्यै रूप मपराय भवताम सदैव:*
*श्रीकृष्ण मेव भवताम भवदेव नित्यं*
*सांदीपनाय भवताय प्रणमम गुरुत्वं।*

इसके पश्चात् साधक/साधिका हाथ में जल लेकर संकल्प लें - **मैं (अमुक) पूर्ण सम्मोहन प्राप्ति हेतु सांदीपन प्रणीत यह श्रीकृष्ण तंत्र सम्मोहन साधना कर रहा हूं।**

और सर्वप्रथम यंत्र को शुद्ध जल से स्नान कराएं। फिर दूध, दही, घी, मधु तथा शक्कर से स्नान कराएं। तत्पश्चात पांचों को मिलाकर पंचामृत से स्नान कराएं। एक बार पुन: शुद्ध जल से स्नान कराएं।

इसके पश्चात् स्वच्छ वस्त्र से यंत्र को पोंछकर, बाजोट पर ही पुष्पों का आसन देकर स्थापित कर दें।

निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए यंत्र पर कुंकुम से पांच बिंदियां लगाएं -

*ॐ सांदीपनाय नम: ।*
*ॐ श्री कृष्णाय नम: ।*
*ॐ सम्मोहन वशीकरणाय नम: ।*
*ॐ कामदेवाय नम: ।*
*ॐ रति प्रियायै नम: ।*

यंत्र से कुंकुम लेकर अपने आज्ञा चक्र पर लगाएं।

तत्पश्चात यंत्र पर दृष्टि गड़ाते हुए **सम्मोहन-वशीकरण माला** से निम्न मंत्र का 1 माला जप करें -

*ॐ ह्रीं सं सम्मोहनाय वशीकरणाय फट्।।*

इस प्रकार यह साधना पूर्ण होती है। साधना के पश्चात् यंत्र एवं गुटिका को लाल वस्त्र में बांधकर किसी सुरक्षित स्थान या पूजा स्थान पर रख दें तथा **'सम्मोहन वशीकरण माला'** को धारण कर लें। इस माला से 30 दिनों तक नित्य उपरोक्त मंत्र की एक माला जप करनी है। मंत्र जप करके दिन भर माला को पहने रखें। एक दिन में एक माला ही जप करें क्योंकि यह बड़ा ही विस्फोटक मंत्र है और तंत्र पर आधारित है। एक दिन में एक माला मंत्र की शक्ति ही आप पचा पाएंगे।

आप पूरे महीने का भोजन एक साथ, एक बार में ग्रहण नहीं कर सकते हैं। आपका शरीर एक महीने का भोजन एक दिन में पचा भी नहीं पाता है। उसी प्रकार यह 30 दिवसीय साधना प्रतिदिन एक माला मंत्र जप कर करें।

और एक माला करेंगे तो शरीर का एक अंग खिलेगा। प्रतिदिन ऐसा होगा। शरीर के तीस अंग हैं - पन्द्रह गुप्त अंग हैं तथा पन्द्रह दृश्य अंग हैं। गुप्त अंग का अर्थ है जो अंदर ग्रंथियां हैं और दृश्य अंग आपका चेहरा, हाथ, पांव आदि।

एक-एक माला से एक-एक अंग खिलेगा। इसलिए तीस दिन तक एक-एक माला का जप करें। मंत्र जप सुबह सूर्योदय के समय या रात्रि को दस बजे के बाद करें और प्रयत्न कर उसी निश्चित समय पर जप करें।

माला मंत्र जप करने से चैतन्य हो जाएगी। तीस दिवसीय मंत्र जप की पूर्णता के पश्चात् यंत्र, गुटिका और माला को जल में विसर्जित कर दें।

**तीस दिन के बाद आप अपने स्वयं का परीक्षण करें कि आपका शरीर, आपके बोलने की शक्ति, आपकी देखने की शक्ति स्वयं अद्भुत होते जा रहे हैं। लोग आपका अनुसरण करने लगेंगे कि आप कैसे चलते हैं, बोलते हैं, व्यवहार करते हैं।**

यह मंत्र अपने आप में अद्भुत क्षमता युक्त है तथा पूरे शरीर को चार्ज करता है। इसलिए आप कर सकें तो साधना के बाद भी प्रतिदिन बस 11 बार यंत्र के सामने बैठकर मंत्र का उच्चारण करें। इससे निरंतरता बनी रहेगी।

यह साधना तो एक क्रियात्मक पक्ष को समेटे हुए है इसलिए करके देखें तभी एहसास होगा कि वास्तव में इसके द्वारा आप अपने क्षेत्र में अद्वितीय व्यक्ति बन सकते हैं, जीवन में पूर्ण विजय प्राप्त कर सकते हैं।

**प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/-**




ज्ञान आध्यात्मिक पथ है, जबकि अर्थ भौतिक मार्ग है। दोनों ही जीवन में आवश्यक हैं। भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति किए बिना अध्यात्म केवल कोरा ज्ञान बनकर रह जाता है और **अध्यात्म के अभाव में भौतिकता एक ऐसी अंधी दौड़ बन जाती है, जिसका न कोई पूर्ण विराम होता है और न ही कोई अल्पविराम।**

हमारे जीवन के अधिकांश द्वंद्वों का मूल कारण यही है कि हम ज्ञान और अर्थ के बीच सामंजस्य स्थापित करना नहीं जानते। इसका कारण यह नहीं है कि हम ऐसा करना नहीं चाहते, बल्कि यह है कि हम इस बात से अनभिज्ञ हैं कि यह संतुलन स्थापित कैसे किया जाए?

इसका ज्वलंत उदाहरण द्रोणाचार्य हैं। द्रोणाचार्य ने ज्ञान के क्षेत्र में अनेक कीर्तिमान स्थापित किए थे, परंतु अपने परिवार के लिए अर्थ की समुचित व्यवस्था नहीं कर पाए। परिणाम यह हुआ कि उनकी पत्नी कृपी को अश्वत्थामा को चावल के आटे में पानी मिलाकर दूध बताकर पिलाना पड़ा। जब सहपाठियों ने अश्वत्थामा का उपहास उड़ाया, तब द्रोणाचार्य अपने बालसखा द्रुपद के पास आर्थिक सहायता की आशा लेकर पहुंचे। किंतु वहां उन्हें सहायता नहीं, बल्कि घोर अपमान का सामना करना पड़ा।

वह अपमान द्रोणाचार्य के भीतर प्रतिशोध की ऐसी अग्नि बनकर धधकने लगा, जिसने आगे चलकर महाभारत के युद्ध की पृष्ठभूमि तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यदि उनके जीवन में ज्ञान के साथ-साथ अर्थ का भी संतुलन होता, तो संभवतः इतिहास की दिशा कुछ और होती।

अर्थ की आवश्यकता तो प्रत्येक क्षण पड़ती है। उसके बिना न भोजन की व्यवस्था हो सकती है, न सिर पर छत मिल सकती है और न ही परिवार का पालन-पोषण किया



**भुवनेश्वरी महाविद्या अनन्त आकाश के समान व्यापक चेतना, ज्ञान, करुणा, सौन्दर्य और ऐश्वर्य की प्रतीक हैं। तांत्रिक एवं शाक्त परम्परा में उन्हें सृष्टि, पालन और संहार की मूल शक्ति माना गया है।**

**महाविद्या भुवनेश्वरी ज्ञान रूपी समृद्धि प्रदान करती है, जिससे निर्मल हृदय, उच्च विचार, आत्मज्ञान और समस्त सृष्टि के प्रति प्रेम एवं करुणा का भाव जाग्रत होता है।**

**महाविद्या भुवनेश्वरी साधक के जीवन में शांति, संतुलन और दिव्य चेतना का संचार करती है...**

**– सद्गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली**

जा सकता है। इसलिए स्वाभाविक है कि हम अर्थ को महत्त्व दें। परंतु अर्थ के साथ यदि ज्ञान की ज्योति न जले, तो अनर्थ होते देर नहीं लगती। मनुष्य अज्ञान के भंवर में ही उलझा रह जाता है।

**केवल धन कमा लेना ही पर्याप्त नहीं है, उसके सदुपयोग की बुद्धि भी होनी चाहिए। अन्यथा वही धन कभी अहंकार का कारण बन जाता है, कभी अशांति का और कभी विनाश का।**

## वर्तमान जीवन की चुनौती

अर्थोपार्जन करते समय यह जानना भी उतना ही आवश्यक है कि कितना धन पर्याप्त है। यदि इस प्रश्न का उत्तर हमारे पास नहीं है, तो हम अपना पूरा जीवन धन अर्जित करने में लगा दें, फिर भी प्रसन्न नहीं रह पाएंगे। धन कमाना एक कला है, पर उससे भी बड़ी कला है उसका विवेकपूर्ण उपयोग। यदि धन का उपयोग ही न किया जाए, तो जीवन में आवश्यक सुविधाएं नहीं आएंगी और यदि सारा धन व्यर्थ व्यय कर दिया जाए, तो भविष्य असुरक्षित हो जाएगा। फिर संतुलन कैसे स्थापित होगा?

आज के समय का यही यक्ष-प्रश्न है, विशेषकर तब, जब लगभग हर सुविधा ईएमआई के सहारे सहज उपलब्ध दिखाई देती है। पचहत्तर इंच का टेलीविज़न, डबल डोर फ्रिज, बड़ी कार, विशाल घर, विदेश यात्रा मानो प्रत्येक इच्छा के सामने ईएमआई कल्पवृक्ष की तरह खड़ी हो, जो हर आकांक्षा पर 'तथास्तु' कहने को तैयार हो।

आज वस्तुओं को प्राप्त करना पहले जितना कठिन नहीं रहा; कठिनाई तो उन्हें प्राप्त करने की इच्छा पर संयम रखने में है। बाजार दिन-रात हमारे मन को यह विश्वास दिलाने में लगा है कि अभी जो तुम्हारे पास है, वह पर्याप्त नहीं है। तुम्हें इससे बड़ा घर चाहिए, इससे महंगी गाड़ी चाहिए, इससे नवीनतम मोबाइल चाहिए। इस प्रकार आवश्यकताएं धीरे-धीरे इच्छाओं में और इच्छाएं लालसा में परिवर्तित हो जाती हैं।

किन्तु प्रश्न यह है कि इस ईएमआई के जंजाल को कितना बढ़ाया जाए? पांच हजार, दस हजार, पचास हजार या उससे भी अधिक? इसका निर्णय कौन करेगा? यह ज्ञान कहां से आएगा?

यदि हमारी आय बढ़े, तो क्या उसी अनुपात में हमारी ईएमआई भी बढ़ती चली जाए? क्या जीवन का उद्देश्य केवल अगली किस्त चुकाने के लिए काम करना है? यदि ऐसा है, तो हम धन के स्वामी नहीं, बल्कि उसके सेवक बन चुके हैं।

वास्तविक प्रश्न ईएमआई का नहीं, विवेक का है। **ऋण तभी तक उपयोगी है, जब तक वह जीवन को सरल बनाता है; जिस क्षण वही ऋण मन की शांति, पारिवारिक संबंधों और स्वास्थ्य पर बोझ बनने लगे, उसी क्षण वह सुविधा**

**नहीं, बंधन बन जाता है।** इसलिए यह निर्णय बैंक नहीं कर सकता, बाजार नहीं कर सकता, पड़ोसी नहीं कर सकता। इसका निर्णय केवल ज्ञान कर सकता है वही ज्ञान, जो हमें यह बताता है कि आवश्यकता कहां समाप्त होती है और लालसा कहां से प्रारम्भ होती है।

**बुद्धि तो ज्ञान से ही आएगी कि हम अंतर्मुखी बनें या फिर दूसरों को देखकर अपने सुख की परिभाषा निर्धारित करते रहें।**

ऐसा सुख कभी स्थायी नहीं हो सकता। जैसे झूले पर खड़े होकर संतुलन प्राप्त नहीं किया जा सकता, वैसे ही **ज्ञान के बिना अर्थ की अंधी दौड़ में भागते हुए मनुष्य केवल एक सुख से दूसरे सुख का पीछा करता रहता है। अंततः या तो उसका शरीर बीमार पड़ जाता है या उसका मन निराशा से भर जाता है। वास्तव में दोनों स्थितियां एक ही असंतुलन की भिन्न अभिव्यक्तियां हैं।**

अर्थ जीवन का एक महान सत्य है, परंतु यह सत्य ज्ञान के प्रकाश में ही अपना वास्तविक स्वरूप प्रकट करता है। **ज्ञान अर्थ को दिशा देता है और अर्थ ज्ञान को आधार।** जब ये दोनों एक-दूसरे के पूरक बन जाते हैं, तभी जीवन में समृद्धि के साथ शांति, सुविधा के साथ संतोष और सफलता के साथ सार्थकता का उदय होता है। यही ज्ञान और अर्थ का वास्तविक सामंजस्य है।

## ज्ञान हमारे जीवन में दीपक के समान है।

जिस प्रकार अंधकारमय मार्ग पर एक छोटा-सा दीपक भी यात्री को दिशा दिखा देता है, उसी प्रकार ज्ञान जीवन के कठिन पथ पर हमें उचित निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करता है। **ज्ञान केवल यह नहीं बताता कि क्या प्राप्त करना है, बल्कि यह भी सिखाता है कि उसे किस प्रकार प्राप्त करना है और प्राप्त होने के बाद उसका उपयोग किस उद्देश्य के लिए करना है।**

एक बार एक व्यक्ति एक संत के पास पहुंचा। उसने अत्यन्त व्याकुल होकर कहा, 'गुरुदेव! मेरे जीवन में चारों ओर अंधकार ही अंधकार है। मुझे समझ ही नहीं आता कि किस मार्ग पर चलूं।'

संत मुस्कुराए। उन्होंने कोई लंबा उपदेश नहीं दिया। केवल एक छोटा-सा दीपक जलाया और उस व्यक्ति के हाथ में देते हुए बोले, 'अब चलो।'

**शक्ति है ''ज्ञान''**

**ज्ञान का स्वरूप है - चेतना**

**ज्ञान का स्वरूप है - बुद्धि**

**ज्ञान का स्वरूप है - विवेक**

**ज्ञान का स्वरूप है - निर्भयता,**

**ज्ञान का स्वरूप है - निरन्तर कार्य करने की भावना**

**ज्ञान का स्वरूप है - एकाग्रता**

**ज्ञान का स्वरूप है - कुशलता**

**ज्ञान का स्वरूप है - अभ्यास**

**ये सब हमारी चेतना के स्वरूप है।**

वह व्यक्ति बोला, 'गुरुदेव, यह छोटा-सा दीपक पूरे मार्ग को कैसे प्रकाशित करेगा?'

संत ने उत्तर दिया, 'तुम्हें पूरे मार्ग का प्रकाश एक साथ नहीं चाहिए। तुम्हें केवल अगला कदम दिखाई देना चाहिए। जब तुम वह कदम बढ़ा दोगे, तब अगला भाग स्वयं प्रकाशित हो जाएगा।'

यही ज्ञान का स्वरूप है। ज्ञान भविष्य के प्रत्येक क्षण का उद्घाटन नहीं करता, बल्कि वर्तमान में सही निर्णय लेने का विवेक देता है और जब विवेक के साथ अर्थ का अर्जन होता है, तब धन साधन बनता है, साध्य नहीं।

भुवनेश्वरी महाविद्या हमें इसी संतुलन का संदेश देती हैं। वे सिखाती हैं कि संसार से भागना अध्यात्म नहीं है और संसार में डूब जाना भी बुद्धिमानी नहीं है। वास्तविक साधना यह है कि अर्थ का अर्जन करो, पर उसके स्वामी बनो, दास नहीं। ज्ञान प्राप्त करो, पर उसे केवल विचारों तक सीमित मत रखो; उसे अपने व्यवहार और जीवन में उतारो।

जब ज्ञान और अर्थ का सामंजस्य स्थापित हो जाता है, तभी जीवन में समृद्धि भी आती है और शांति भी। तभी मनुष्य केवल सफल नहीं होता, बल्कि सार्थक भी बनता है।




**महाविद्या भुवनेश्वरी महातेजस्वी अद्वितीय एवं अनिवर्चनीय शक्ति है। इस जगत में अधिकांश बाधाएं अज्ञानता के कारण आती है और महाविद्या भुवनेश्वरी अपने साधक को ज्ञान से आप्लावित कर देती है जिससे उसका मन मस्तिष्क शांत हो जाता है और उसके जीवन में आने वाली बाधाओं और समस्याओं का त्वरित समाधान भी कर लेता है। भुवनेश्वरी साधना सम्पन्न करने वाला साधक शांत, शीतल, धैर्यवान होता है और उसके जीवन में निम्न स्थितियां स्वतः अंकुरित होने लगती है -**

1. साधक का व्यक्तित्व अत्यधिक आकर्षक एवं भव्य हो जाता है। उसके इर्द-गिर्द एक तेजयुक्त आभा मण्डल निर्मित हो जाता है, जिससे उसके आसपास के लोग स्वतः उसकी ओर आकर्षित होते हैं और उसकी हर आज्ञा का ना-नुच किए बिना पालन करते हैं।
2. इस साधना के सिद्ध होते ही व्यक्ति की दरिद्रता, रोग, शत्रुभय, ऋण आदि की स्थिति स्वतः ही नष्ट हो जाती हैं और मान-सम्मान में अभिवृद्धि होती है।
3. व्यक्ति के घर में निरन्तर धन का आगमन होता ही रहता है। उसका व्यापार तरक्की करता है और अगर वह नौकरीपेशा हो, तो उसकी पदोन्नति शीघ्र होती है।
4. इस साधना के प्रभाव से घर में अगर कोई तांत्रिक प्रयोग हो, तो वह नष्ट होता है।
5. कुण्डली में निर्मित दुर्योग फलहीन हो जाते हैं...अगर दुर्घटना एंव अकाल मृत्यु का योग हो, तो वह भी अल्प हो जाता है, एक प्रकार से नष्ट ही हो जाता है।
6. **साधक जिस कार्य में हाथ डालता है, उसमें विजय ही प्राप्त करता है, हर क्षेत्र में सफल होता है, इंटरव्यू परीक्षा आदि में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।**
7. **ऐसा व्यक्ति समाज में सम्मानीय एवं पूजनीय होता है। उसका प्रभाव और प्रतिष्ठा का समाज में व्यापक विस्तार होता है, उसके वचन प्रभावकारी होते है। वह सभी का प्रिय होता है और जीवन में उसे किसी चीज का अभाव नहीं रहता।**
8. इसके साथ ही साथ उसका पारिवारिक जीवन अत्यधिक सुखी होता है, यदि कोई क्लेश व्याप्त हो, तो भी वह समाप्त हो जाता है।
9. उसकी समस्त इच्छाएं और कामनाएं पूर्ण होती हैं और वह स्वयं भी आश्चर्यचकित रह जाता है, कि किस प्रकार से उसकी सारी अभिलाषाएं स्वतः ही पूर्ण हो रही हैं।

10. **भगवती भुवनेश्वरी वास्तव में सम्पूर्ण 64 कलाओं से परिपूर्ण हैं, अतः इस साधना को सम्पन्न करने से व्यक्ति को जहां भोग, धन, वैभव, ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है, वहीं वह अन्त में मोक्ष की स्थिति प्राप्त कर ब्रह्म का पर्याय हो जाता है... और सम्पूर्ण सुखों को प्राप्त करता है।**

ऊपर बताई गई स्थितियां तो मात्र सूर्य को रोशनी दिखाने के समान हैं। वास्तव में तो साधक अपने-आप में ही अद्वितीय तेजस्वी बन जाता है। उसके अन्दर भगवती भुवनेश्वरी की शक्ति का वह तीव्र प्रवाह समाहित हो जाता है।

भुवनेश्वरी साधना शक्ति साधना ज्ञान स्वरूप है और एक तरह से मात्र इस साधना को करने से आद्या शक्ति के समस्त स्वरूपों की साधना स्वतः ही हो जाती है। यह 9 दिन की साधना है और इसे आप **भाद्रपद शुक्ल द्वादशी 23 सितम्बर 2026** से प्रारम्भ कर सकते है। इसके अतिरिक्त **नवरात्रि, सर्वार्थ सिद्धि योग अथवा शुक्ल पक्ष के किसी भी गुरुवार** से प्रारम्भ कर सकते हैं।

भुवनेश्वरी साधना में **1. भुवनेश्वरी यंत्र, 2. मूंगे का दाना और 3. भुवनेश्वरी माला** की आवश्यकता है।

रात्रि में नौ बजे के उपरान्त साधक स्नान आदि से निवृत्त होकर श्वेत स्वच्छ धोती धारण कर श्वेत आसन पर पूर्व की ओर मुख कर बैठें। गुरु चित्र का स्थापन करें तथा **'निखिल साधना विधान'** पुस्तक में दी गई विधि से गुरु पूजन करें।

अपने सामने लाल वस्त्र से ढके बाजोट पर **भुवनेश्वरी यंत्र** स्थापित कर उसका **(कुंकुम, अक्षत, धूप, दीप, पुष्प)** पंचोपचार पूजन सम्पन्न करें। फिर साधक दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न प्रकार से विनियोग करें -

**विनियोग**

*ॐ अस्य श्री भुवनेश्वरी हृदय स्तोत्रस्य श्री शक्तिः ऋषिः, गायत्री छन्दः, भुवनेश्वरी देवता, ह्रीं बीजं, ईं शक्तिः, रं कीलकं सकल-मनोवांछित-सिद्धयर्थ पाठे विनियोगः ।।*

जल भूमि पर छोड़ दें तथा शरीर के विभिन्न अंगों को दाहिने हाथ से स्पर्श करते हुए निम्न न्यास सम्पन्न करें -

**ऋष्यादि न्यास**

*श्री शक्ति ऋषये नमः शिरसि ।।*
*गायत्री छन्दसे नमः मुखे ।।*
*श्री भुवनेश्वरी देवतायै नमः हृदि ।।*
*ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये ।।*
*ईं शक्तये नमः नाभौ ।।*
*रं कीलकाय नमः पादयोः ।।*
*सकल-मनोवांछित सिद्धयर्थे पाठे विनियोगाय नमः सर्वांगे ।*

न्यास के पश्चात् महाविद्या भुवनेश्वरी से अपनी मनोकाम ना पूर्ति की प्रार्थना करें और **'मूंगे का दाना'** यंत्र पर अर्पित करें। इसके पश्चात् दोनों हाथों में पुष्प लेकर भुवनेश्वरी का ध्यान करें और पुष्प यंत्र पर अर्पित कर दें।

**भुवनेश्वरी ध्यान**

*ॐ बालरविद्युति मिन्दु किरीटां तुङ्गकुचां*
*नयनत्रयुक्ताम्।*
*स्मेरमुखीं वरदाङ्कुशपाशाभीतिकरां प्रभजे*
*भुवनेशीम्।।*

महाविद्या भुवनेश्वरी को मेरा प्रणाम, जिनके श्रीअंगों की आभा सूर्य के समान है, मस्तक पर चन्द्रमा का मुकुट है। वे उभरे हुए स्तनों और तीनों नेत्रों से युक्त हैं। उनके मुखपर मुस्कान की छटा छायी रहती है और हाथों में वरद, पाश एवं अभय मुद्रा शोभायमान है।

फिर **भुवनेश्वरी माला** पर सिन्दूर से तिलक करें तथा उसी माला से निम्न मंत्र की 12 माला मंत्र जप करें -

**मंत्र**

*।।ॐ ह्रीं ॐ ।।*

फिर नित्य साधना करने से पूर्व यंत्र एवं माला का तिलक कर पूजन करें तथा 9 दिवसीय साधना काल में **भुवनेश्वरी माला** से 108 मालाएं करें। उसके उपरांत समस्त साधना सामग्री को किसी जलाशय में अर्पित कर दें। श्रद्धा पूर्वक सम्पन्न साधना निश्चय ही सिद्ध होती है; इसमें कोई संशय नहीं।

निश्चित ही यह साधना एवं मंत्र परम गोपनीय और सामान्यतः अप्राप्य है, पर जिस किसी को भी यह साधना सिद्ध हो जाती है, उसके भाग्य से तो स्वयं देवी-देवता भी ईर्ष्या करने लगते हैं और वह दिनों-दिन उन्नति की ओर अग्रसर होता ही रहता है।

**- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/-**

# महाविद्या भुवनेश्वरी दीक्षा

सम्पूर्ण चराचर जगत महाविद्या भुवनेश्वरी की ही दिव्य चेतना का विस्तार है
और प्रत्येक जीव उसी परम शक्ति का अंश है।
भुवनेश्वरी अर्थात् भुवन + ईश्वरी।
भुवन - सम्पूर्ण जगत, तीनों लोक, समस्त ब्रह्माण्ड।
ईश्वरी - अधिष्ठात्री, स्वामिनी, परम शक्ति।

महाविद्या भुवनेश्वरी इच्छा शक्ति, ज्ञान शक्ति और क्रिया शक्ति का ही स्वरूप है

**इच्छा शक्ति अर्थात् शुभ संकल्प और दिव्य प्रेरणा**

**ज्ञान शक्ति अर्थात् सत्य, विवेक और आत्मबोध की शक्ति**

**क्रिया शक्ति अर्थात् उचित कर्म,**
**लक्ष्य तथा सफलता प्राप्त करने की शक्ति**

महाविद्या भुवनेश्वरी तीनों शक्तियों को संतुलित करती है,
जिससे साधक का जीवन सफल, संतुलित और सार्थक बनता है।

महाविद्या भुवनेश्वरी साधक को समृद्धि एवं इच्छित फल प्रदान करती है। भय से मुक्ति प्रदान कर दिव्य संरक्षण प्रदान करती है। साधक के मन, मोह और आसक्ति पर अंकुश रखती है। साधक की इन्द्रियों और मन को सही दिशा प्रदान करती है। सद्गुरु की कृपा से ही भुवनेश्वरी का आशीर्वाद प्रदान किया जाता है।

महाविद्या भुवनेश्वरी की कृपा से- ❁ प्रत्येक क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन आता है। ❁ मन में शांति और स्थिरता आती है। ❁ आत्मविश्वास और निर्णय क्षमता बढ़ती है। ❁ नकारात्मक विचारों में कमी आती है। ❁ करुणा और सहनशीलता का विकास होता है। ❁ कार्यों में एकाग्रता और सफलता प्राप्त होती है। ❁ आध्यात्मिक चेतना का विस्तार होता है। ❁ भोग और मोक्ष के मध्य संतुलन स्थापित होता है। ❁ जीवन का उद्देश्य स्पष्ट होने लगता है।

सद्गुरु से प्राप्त भुवनेश्वरी दीक्षा श्रद्धा, संयम और नियमित साधना के माध्यम से साधक धीरे-धीरे अपने भीतर स्थित उसी दिव्य चेतना का अनुभव करता है। यही अनुभव उसे आत्मविश्वास, शांति, समृद्धि, विवेक, आध्यात्मिक उन्नति और अंततः आत्मबोध की ओर ले जाता है।

**- महाविद्या भुवनेश्वरी दीक्षा- 3100/- (प्रति चरण)**




# पितृकृपा से ही सुख-सौभाग्य

## श्रद्धया दीयते यत् तत् श्राद्धम्

### श्रद्धा से अर्पित किया जाए, वही वास्तविक श्राद्ध है...

जब तक माता-पिता हमारे साथ रहते हैं, तब तक उनके स्नेह की छाया हमारे सिर पर बनी रहती है। उनके रहते हुए हमें कभी यह अनुभव भी नहीं होता कि उनका संरक्षण कितना बड़ा था। जीवन की अनेक कठिनाइयां उनकी उपस्थिति मात्र से छोटी प्रतीत होती हैं। किन्तु क्या माता-पिता का सम्बन्ध केवल शरीर तक ही सीमित है? क्या मृत्यु के साथ उनका दायित्व समाप्त हो जाता है?

सनातन धर्म का उत्तर है, नहीं।

सनातन धर्म मानता है कि माता-पिता शरीर त्यागने के बाद भी अपने वंश की रक्षा के लिए तत्पर रहते हैं। वे पितृरूप में अपने वंशजों का मंगल चाहते हैं, उनके जीवन में सुख, समृद्धि और उन्नति का आशीर्वाद देते हैं। यही कारण है कि हमारे शास्त्रों में पितरों का स्थान अत्यंत उच्च माना गया है। इसी भाव को व्यक्त करने का पर्व है, श्राद्ध।

श्राद्ध शब्द श्रद्धा से बना है अर्थात् अपने पितरों के प्रति श्रद्धा, कृतज्ञता और स्मरण प्रकट करना ही श्राद्ध है। यह केवल एक कर्मकाण्ड नहीं, बल्कि उस ऋण को स्वीकार करने का संस्कार है जिसे हम जीवनभर कभी पूर्णतः चुका नहीं सकते। हम जो कुछ भी हैं, जो कुछ भी प्राप्त करते हैं, उसकी नींव में कहीं न कहीं हमारे पूर्वजों का परिश्रम, त्याग और आशीर्वाद निहित रहता है।

इसीलिए शास्त्रों में कहा गया है कि मनुष्य जीवन में जितना महत्व देवकृपा का है, उससे कम महत्व पितृकृपा का नहीं है। अनेक ग्रंथों में तो पितृकार्य को देवकार्य से भी श्रेष्ठ कहा गया है। देवता हमें शक्ति देते हैं, परन्तु पितर हमें अस्तित्व देते हैं। देवता हमारे जीवन का संरक्षण करते हैं, पर पितर हमारे वंश की निरन्तरता के आधार हैं।

आज आधुनिकता की दौड़ में हम अपने पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने की इस परम्परा से दूर होते जा रहे हैं। श्राद्ध पक्ष को केवल एक औपचारिक कर्म मान लिया गया है, जबकि शास्त्र इसे श्रद्धा का सबसे पवित्र अवसर बताते हैं।

ऐसी मान्यता है कि इन पंद्रह दिनों में पितृगण पितृलोक से अपने वंशजों के समीप आते हैं, जिससे वे श्रद्धापूर्वक तर्पण ग्रहण कर सकें। यदि यह अवसर श्रद्धा से निभाया जाए तो पितृकृपा प्राप्त होती है और यदि इसकी उपेक्षा की जाए तो जीवन में अनेक प्रकार की बाधाएं उत्पन्न होने लगती हैं।

## पितर कौन हैं?

पितर शब्द संस्कृत के पितृ शब्द का ही रूप है। इसका अर्थ केवल हमारे पिता नहीं, बल्कि सम्पूर्ण पूर्वज हैं वे सभी जिन्होंने इस वंश को आगे बढ़ाया, जिन्होंने अपने परिश्रम, त्याग और संस्कारों से आने वाली पीढ़ियों का भविष्य निर्मित किया।

ऋग्वेद के दशम मंडल में पितरों का अत्यंत सुंदर वर्णन मिलता है। वहां पितृलोक का उल्लेख है और उसके अधिपति यम बताए गए हैं। यम को संसार का प्रथम मर्त्य पुरुष माना गया है। वे प्रथम हैं जिन्होंने इस लोक से उस लोक की यात्रा की। इसी कारण वे पितरों के अधिपति कहे गए और वही उस मार्ग के ज्ञाता हैं जिस मार्ग से एक दिन प्रत्येक जीव को जाना है।

ऋग्वेद में यजमान से कहा गया है कि **वह यम और पितरों का सम्मान करे, क्योंकि वे अपने वंशजों का कल्याण चाहते हैं। यह केवल मृत्यु का दर्शन नहीं, बल्कि पीढ़ियों की अखंड निरन्तरता का दर्शन है।**

## श्राद्ध का उद्देश्य क्या है?

ऋग्वेद में पितरों का आह्वान करते समय यजमान अत्यंत विनम्र भाव से प्रार्थना करता है। वह स्वीकार करता है कि मनुष्य होने के कारण उससे भूल हो सकती है, पाप हो सकता है; किन्तु दयालु पितर उसके अपराधों को क्षमा करें, उससे अप्रसन्न न हों और उसे अपना आशीर्वाद प्रदान करें।

## यही श्राद्ध का वास्तविक उद्देश्य है –

श्राद्ध केवल अन्न या जल अर्पित करने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि विनम्रता का संस्कार है। यह स्वीकार करना कि हम अकेले नहीं बने; हमारे जीवन के पीछे अनेक पीढ़ियों का तप, संघर्ष और त्याग है।

जब पितर प्रसन्न होते हैं, तब वे अपने वंशजों को पुष्टि, आरोग्य, धन, धान्य, संतति और सौभाग्य का आशीर्वाद देते हैं। पद्मपुराण में स्पष्ट कहा गया है कि पितृगण अत्यंत शीघ्र प्रसन्न होते हैं। वे सदैव प्रिय वचन बोलते हैं और अपने वंशजों के कल्याण की ही कामना करते हैं।

सोचिए, जो अपने वंश के सुख के लिए इतने आतुर रहते हैं, उनकी उपेक्षा करना कितनी बड़ी भूल है।

## श्रद्धा ही श्राद्ध है

श्राद्ध का वास्तविक अर्थ केवल तिल, जल या पिंड अर्पित करना नहीं है। यदि केवल कर्मकाण्ड ही पर्याप्त होता, तो उसका नाम श्राद्ध नहीं रखा जाता। उसका नाम ही इस बात की घोषणा करता है कि इसका आधार श्रद्धा है।

**श्रद्धा का अर्थ है – कृतज्ञ होना।**

**श्रद्धा का अर्थ है – अपने पूर्वजों को स्मरण रखना।**

**श्रद्धा का अर्थ है – उनके अधूरे सत्कर्मों को आगे बढ़ाना।**

**श्रद्धा का अर्थ है – ऐसा जीवन जीना, जिसे देखकर हमारे पितर भी प्रसन्न हों।**

इसीलिए भारतीय संस्कृति में केवल श्राद्ध पक्ष में ही नहीं, प्रत्येक शुभ कार्य से पूर्व पितरों का स्मरण करने की परम्परा रही है। माना गया है कि जिस घर में पितरों का सम्मान होता है, वहां समृद्धि, संतोष और सौभाग्य स्वयं चलकर आते हैं। जहां पूर्वजों को भुला दिया जाता है, वहां वैभव होते हुए भी स्थिरता नहीं रहती।

अतः इस पितृपक्ष केवल तर्पण ही न करें, अपने भीतर श्रद्धा भी जगाइए। अपने माता-पिता और पूर्वजों के प्रति कृतज्ञ बनिए। उनके आदर्शों को अपने जीवन में उतारिए। उनके अधूरे सत्कर्मों को पूरा करने का संकल्प लीजिए।

जब वंशज श्रद्धा से पितरों का स्मरण करता है, तब पितर भी उसी श्रद्धा से उसके जीवन की रक्षा करते हैं। यही पितृकृपा है और यही जीवन में स्थायी सुख, सौभाग्य और समृद्धि का वास्तविक आधार है।

**पितर सूक्ष्म रूप में हैं और उनका मोह या फिर उनके द्वारा अधूरे छोड़े गए कार्य उन्हें परिवार से बांध कर रखते हैं। इस कारण से ना तो वे नवीन देह धारण करते हैं, और ना ही ब्रह्म में विलीन हो पाते हैं। एक बात और समझना बहुत आवश्यक है कि मोह ग्रस्त पितर उत्पात ही नहीं मचाते हैं, वरन आशीर्वाद भी देते हैं। अगर आपके परिवार को निरंतर पितरों का आशीर्वाद मिल रहा है, तो और भी आवश्यक है कि आप उनके प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करें और बार-बार करें। सिर्फ श्राद्ध पक्ष में तर्पण करके अपने कर्त्तव्यों की इतिश्री नहीं करें, क्योंकि ऐसे पितरों का आशीर्वाद छत्र रूप में आपके परिवार को समग्र संकटों से बचाता है।**

श्राद्ध पक्ष - 26 सितम्बर 2026 से 10 अक्टूबर 2026

# पितृदोष मुक्ति - अष्टवसुगण साधना

मनुष्य द्वारा जब अपने पितरों का श्रद्धा पूर्वक पूजा, ध्यान एवं आह्वान समय-समय पर नहीं किया जाता है तो वे रुष्ट हो जाते है और अपनी कृपा अपने वंशजों से हटा लेते है। पितृदेव के आशीर्वाद से वंचित मनुष्यों के जीवन में दुष्ट शक्तियां भूत, प्रेत, डाकिनी, चुण्डेल इत्यादि क्रूर शक्तियां जीवन में प्रवेश कर जाती है और जीवन में संतान स्वास्थ्य बाधा, परिवार में स्वास्थ्य बाधा, कार्य में बाधा, आर्थिक हानि, दुर्घटना और नकारात्मक का प्रवेश हो जाता है।

इन परिस्थितियों के निराकरण हेतु व्यक्ति तांत्रिकों, झाड़-फूंक करने वालों से मिलता है। लेकिन वह उनसे उचित उपाय नहीं प्राप्त कर पाता और वह अनभिज्ञ की भांति अपनी परेशानी को समाप्त करने हेतु एक से दूसरे के पास जाता है तथा व्यय भी करता है, लेकिन हल न मिलने के कारण वह व्यथित हो जाता है।

**इसके लिए तो एक ही उपाय शेष बचता है, कि मनुष्य अपने पितरों की कृपा प्राप्त कर अपने ऊपर व्याप्त पितृ दोष से मुक्त होने के लिये अष्टवसुगण साधना सम्पन्न करें।**

- इस साधना में आवश्यक सामग्री है - '**अष्टवसु यंत्र**', '**सर्व सिद्धि प्रदायक गुटिका**' तथा '**काली हकीक माला**'
- एक दिवसीय साधना को **किसी भी अमावस्या** अथवा **श्राद्ध पक्ष** (26 सितम्बर 2026 से 10 अक्टूबर 2026) में सम्पन्न किया जा सकता है। **पितृ अमावस्या** (10 अक्टूबर 2026) के अवसर पर इस साधना को सम्पन्न करना विशेष रूप से फलदायी माना गया है।
- साधक पीले वस्त्र पहन कर यह साधना करे।
- एक बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर गुरु चित्र/विग्रह/पादुका/यंत्र को पौंछ कर स्थापित कर अष्टवसुगण पितृ मुक्ति साधना में सफलता हेतु निम्न प्रकार गुरुदेव का पंचोपचार पूजन सम्पन्न करें।
- गुरु पूजन के पश्चात् गुरु माला से गुरु मंत्र की एक माला मंत्र जप करें -

*ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः*

गुरु पूजन के पश्चात् मूल साधना-पूजन सम्पन्न करें -

- गुरु चित्र के सामने **एक ताम्र पात्र** में **अष्टवसु यंत्र** स्थापित करें, फिर उसकी दाहिनी ओर पीले चावल की ढेरी बनाकर उस पर गुटिका रखकर यंत्र और गुटिका का पूजन करें।
- अब अष्टवसुओं का आह्वान करें, जो पितरों तक आपके तर्पण भोग और भावना को ले जाते हैं।

*ॐ धर वसुगण नमामि*
*ॐ ध्रुव वसुगण नमामि*
*ॐ सोम वसुगण नमामि*
*ॐ अप वसुगण नमामि*
*ॐ अनिल वसुगण नमामि*
*ॐ अनल वसुगण नमामि*
*ॐ प्रत्यूष वसुगण नमामि*
*ॐ प्रभास वसुगण नमामि*

- यंत्र पर पुष्प चढ़ाएं व धूप-दीप दिखायें।
- **काली हकीक माला** से 51 माला मंत्र जप करें -

*//ॐ वं वसुभिः वं ॐ नमः //*

- श्राद्ध पक्ष के किसी भी दिन यह साधना सम्पन्न करें। अपने पितरेश्वरों को श्रद्धा पूर्वक याद करें। उन्हें जल अर्पण करें। मंत्र साधना पूर्ण होने पर तीन लोटे जल आकाश की ओर मुंह कर तर्पण करना चाहिये।
- मंत्र जप की समाप्ति पर विभिन्न भोज्य पदार्थों, पकवानों से सजी भोजन की थाली का भोग लगायें तथा भोग के पश्चात् स्वयं उस भोजन को ग्रहण करें।

**- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 430/-**




भाद्रपद पूर्णिमा से आश्विन माह की अमावस्या तक की सोलह तिथियां श्राद्ध कहलाती हैं, धर्म ग्रंथों में यह मान्यता है कि एक पीढ़ी पहले के पूर्वजों अर्थात् जो भी हमसे बड़े हैं, जो भी हमारे पूर्वज हैं उनके प्रति हम श्रद्धावनत हों, उन्हें स्मरण करें और उनके प्रति कृतज्ञ बनें।

इसलिए यदि दादा-दादी, नाना-नानी, मां-बाप, बड़ा भाई या अन्य हमारे स्वजन जिनसे हमारा सम्बन्ध रहा है और उनका देहान्त हो गया है, उनका श्राद्ध करना मनुष्य का प्रथम कर्त्तव्य है। जिस भी तिथि को उनका देहान्त हुआ हो, श्राद्ध पक्ष की उसी तिथि को उनका श्राद्ध किया जाता है।

**श्राद्ध पक्ष में प्रत्येक शिष्य-साधक को पितरेश्वर तर्पण-समर्पण अवश्य ही करना चाहिए। आपके बड़े, पारिवारिक सदस्य, स्वजन, बन्धु आदि जो पूर्णगति को प्राप्त कर चुके हैं, उन्हें श्राद्ध पक्ष में तर्पण-समर्पण द्वारा आप उनका आशीर्वाद प्राप्त कर सकते हैं। श्राद्ध पक्ष में आपके पूर्वज, बन्धु-बांधव धरती पर आकर आपसे तर्पण-समर्पण प्राप्त कर पुनः उच्चलोक की यात्रा करते हैं। उन्हें प्राप्त श्रद्धा से वे आशीर्वाद प्रदान करते हैं जो हमें शक्ति प्रदान करता है।**

## साधना विधान

**यह साधना श्राद्ध पक्ष में किसी भी दिन प्रातः काल सम्पन्न करें। यह एक दिवसीय साधना है, और इसमें 'पितृ मुक्ति यंत्र' एवं 'प्रायण गुटिका' की आवश्यकता होती है। साधक ब्रह्म मुहूर्त में उठे और सफेद धोती पहन कर दक्षिणाभिमुख हो सफेद आसन पर बैठें।**

**साधक को चाहिए, कि अपने सामने सफेद वस्त्र पर 'पितृ मुक्ति यंत्र' स्थापित करे, उसके चारों ओर दिव्य माला को रखें। कुंकुम से पितृ या पितरों का नाम या दिवंगत व्यक्ति का नाम यंत्र पर लिखें। दिवंगत आत्मा का नाम एक कागज पर लिखकर भी यंत्र के नीचे रख सकते हैं। अगर साधना सभी पितरों लिए कर रहें हों, तो 'सर्व पितृ' लिखें।**

**यंत्र और माला का पूजन करें, यंत्र पर 'प्रायण गुटिका' स्थापित करें और उसका भी पूजन करें तथा 'दिव्य माला' से निम्न मंत्र की 21 मालाएं जप करें -**

*// ॐ ऐं सर्व पितृभ्यो स्वधा //*

**साधना से पूर्व संकल्प में पितृ और पितरों के नाम अवश्य लें। साधना समाप्ति के उपरान्त दक्षिण दिशा में किसी निर्जन स्थान में एक गड्ढे में यंत्र, माला एवं गुटिका को रख दें और उस पर मिट्टी डाल दें।**

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 430/-




☆ तुम प्रेम का क... ख... ग... भी नहीं जानते, तुम्हें प्रेम करना आता ही नहीं।

☆ प्रेम कोई बच्चों का खेल नहीं है, यह तो फना हो जाने की तासीर है। यह तो तलवार की धार पर चलने के समान है, जिसमें पैर लहूलुहान हो जाते हैं और सारा दिल जख्मी हो जाता है।

☆ इसमें लेने का कोई भाव ही नहीं, इसमें तो देना ही देना होता है, शरीर, प्राण, आत्मा... सर्वस्व... और सब कुछ फना करके भी मुस्कुराना होता है।

☆ प्रेम तो हजारों-लाखों में से किसी एक आध के नसीब में ही होता है।

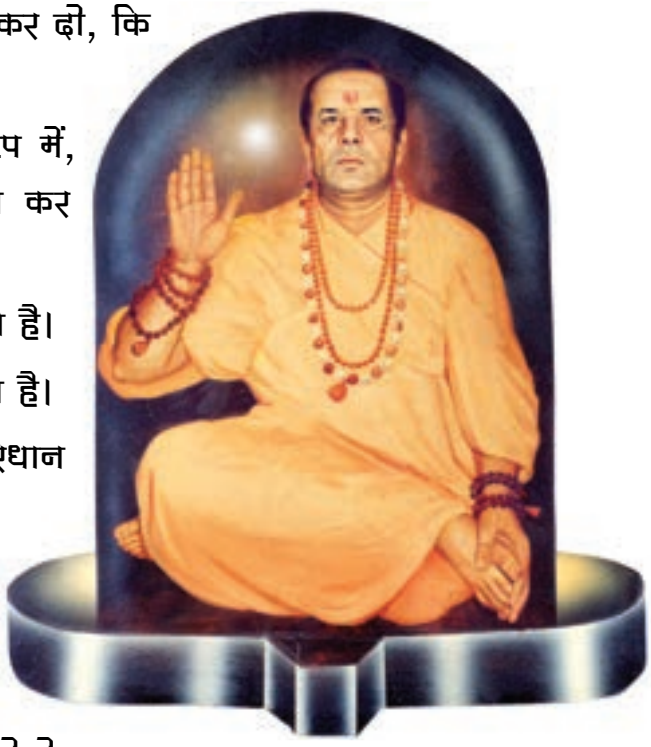
☆ और प्रेम-पात्र... पत्नी, पति, पुत्र या स्वजन हो ही नहीं सकते, क्योंकि इनसे तो वासना के सम्बन्ध होते हैं।

☆ प्रेम तो केवल और मात्र केवल गुरु से ही हो सकता है, क्योंकि उनसे कुछ भी सम्बन्ध न होते हुए भी वे सब कुछ होते हैं।

☆ और जब गुरु से सही रूप में प्रेम हो जाता है तो बुद्धत्व का प्रादुर्भाव हो जाता है।



☆ अब पतझड़ बीत गया है, ऐलान कर दो, कि मैं वसन्त ऋतु ले आया हूं।



☆ शिष्यों के रूप में, साधकों के रूप में, वसन्त ऋतु ने आने का ऐलान कर दिया है।

☆ फिर साधना की पुरवाई बहने लगी है।

☆ फिर मंत्रों की कोयल कुहूकने लगी है।

☆ फिर पेड़ों ने पत्तों के नए-नए परिधान पहिनने शुरू कर दिए हैं।

☆ फिर दुनिया के होठों पर आपकी मुस्कुराहट उभरने लगी है।

☆ मैंने बहुत परिश्रम किया है, विश्व को सजाने के लिए, हरा-भरा करने के लिए, वसन्त को लाने के लिए और वसन्त ऐलान के साथ आ गया है।

☆ तुम मूढ़ हो, नासमझ हो, अज्ञानी हो, ईश्वर रूपी बहेलिये ने तुम्हें दुनियादारी के जाल में उलझाकर रख दिया है।

☆ तुमने स्वयं को इस दलदल में फंसा दिया है, पर कब निकलोगे इस दलदल से, इस कीचड़ से। बिना स्वार्थ के कोई तुमसे बात ही नहीं करेंगे।

☆ फिर किसके लिए इतना खटराग कर रहे हो, किसके लिए बैल की तरह बोझा ढो रहे हो।

☆ क्या मरने के बाद भी धन-दौलत तुम्हारे काम आयेगी, क्या धन-दौलत तुम्हारे साथ जायेगी।

☆ चेत! अभी संभल! जिन्दगी के इस मोड़ पर मैं मिला हूं, तो कसकर मेरा हाथ पकड़ ले, मैं तुम्हें 'अमृत्यु' के पथ पर गतिशील कर दूंगा।

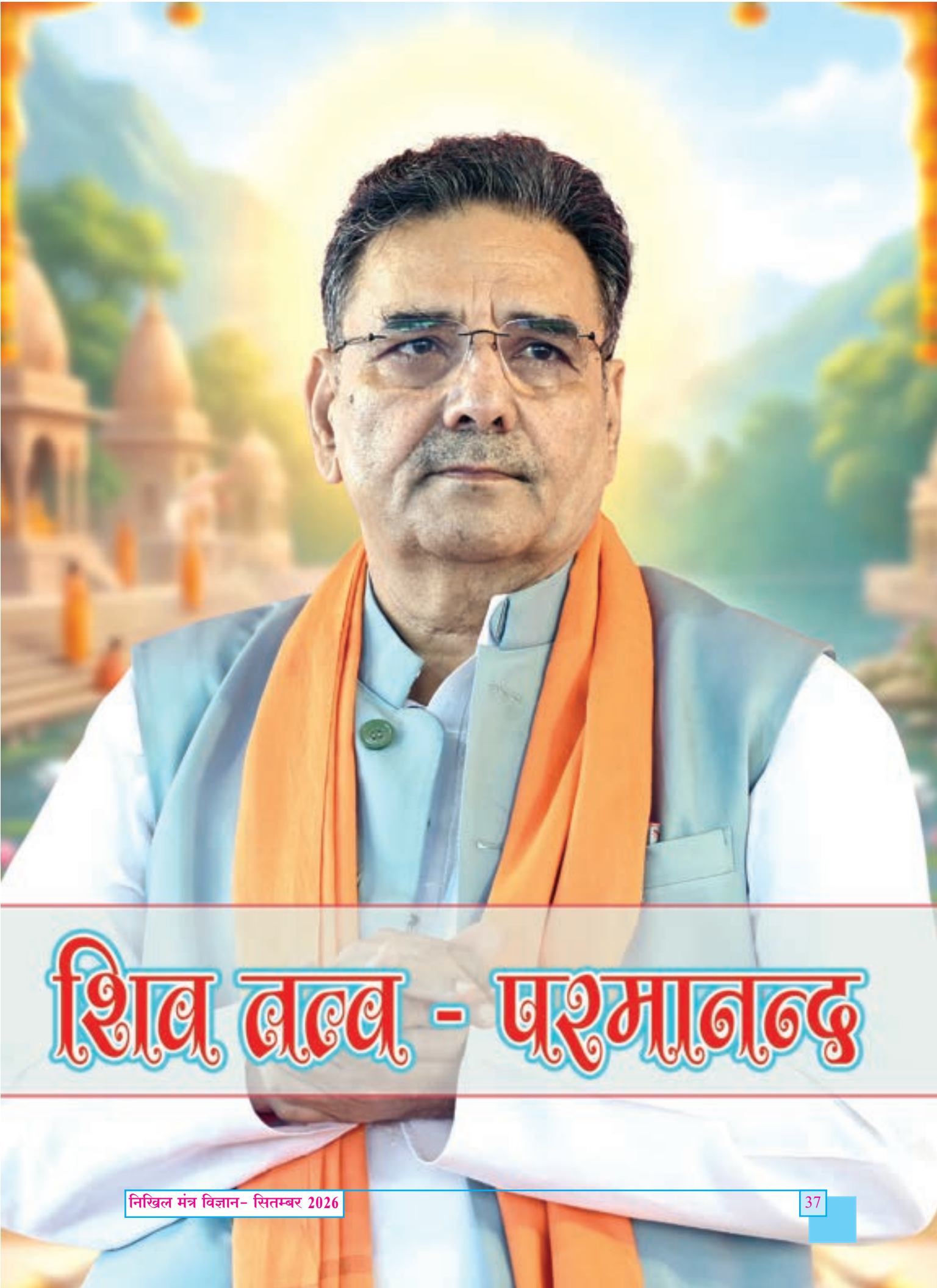
☆ क्योंकि मैं, और केवल मैं ही तुम्हारा हितैषी, निःस्वार्थ गुरु हूं।






शिष्य और गुरु का सम्बन्ध जीवन में श्रेष्ठतम सम्बन्ध माना गया है। इन सम्बन्धों को संसार की किसी तराजू में तोला नहीं जा सकता। एक श्रेष्ठ शिष्य में निम्न गुण अवश्य ही होने चाहिए। इन गुणों से विश्वास, निष्ठा बढ़ती है।

- शिष्य वह है जिसकी हर समय मन में इच्छा होती है कि दौड़ कर गुरु के पास जाऊं। गुरु से प्राणगत सम्बन्ध होना चाहिए, देहगत नहीं।
- गुरु जानता है शिष्य को जीवन की पगडंडी पर कहां और कब खड़ा करना है, और जहां खड़ा करना है उसके लिए क्या आज्ञा देनी है। इसलिए शिष्य को आज्ञा-पालन में विलम्ब नहीं करना चाहिए।
- शिष्य के पास जो भी चिंताएं हैं, दुख हैं, परेशानियां हैं, बाधाएं हैं उन सबको गुरु चरणों में समर्पित कर देना है।
- कोई आवश्यक नहीं कि समस्या होने पर ही गुरु से मिला जाए। गुरु के दर्शन मात्र से ही शिष्य का सौभाग्य एवं पुण्य जाग्रत होते हैं। इसलिए शिष्य निरंतर गुरु से सम्पर्क बनाए रखें।
- गुरुदेव की सेवा किए बिना जो शिष्य कुल-धर्म का पालन करते हैं उनसे मंत्र तथा देवता कभी प्रसन्न नहीं होते। अंतरवाणी, मन और शरीर तीनों से ही सदा गुरु-कार्य में तत्पर रहें।
- शिष्य के पास केवल तीन रास्ते हैं जिनसे वह लोहे से कुंदन बन सकता है - सेवा, समर्पण एवं श्रद्धा, और इन सबका समन्वय है प्रेम। गुरु से प्रेम द्वारा ही शिष्य सब प्राप्त कर सकता है।
- गुरु ईश्वर का प्रतिबिम्ब है जिसे शिष्य साकार, अपनी आंखों से देख सकता है। ईश्वर को शिष्य ने भले ही न देखा हो पर गुरु के माध्यम से ईश्वर को हृदय में स्थापित कर सकता है।
- जब आंखों से प्रेम के आंसू बहने लगें तब शिष्य को समझना चाहिए कि गुरु के दर्शन कर लिए।



# शिव तत्व - परमानन्द



**शताब्दी का सबसे विशिष्ट महाकुंभ जिसे प्रयागराज में सम्पन्न किया। उस महाकुंभ में त्रिवेणी संगम में सूर्य को अर्घ्य देते हुए और शिवरात्रि को पारदेश्वर शिव का अभिषेक सम्पन्न करने के साथ सद्गुरुदेव ने शिव शक्ति और अमृत घट के बारे में सारगर्भित प्रवचन दिया। उसी प्रवचन के प्रथम दिन के कुछ विशिष्ट अंश –**

प्रयाग संगम तीर्थ महाकुंभ का अवसर और गुरु-शिष्य का समागम इससे विशिष्ट शिवरात्रि महोत्सव और क्या हो सकता है?

मेरे जीवन का तो यह स्वर्णिम अवसर है जो मुझे इस जीवन में, इस कुंभ में प्राप्त हुआ है। हमारा शिविर महाशिवरात्रि शिविर है और दो दिन तक हम केवल और केवल प्रेम रस की ही चर्चा करेंगें अभिषेक भी करेंगे, शिव का भी और अपने स्वयं का भी।

सबसे पहले शिव स्तुति –

शंकराचार्य **'नमः शिवाय'** पंचाक्षरी स्तोत्र में शिव प्रार्थना करते हुए कहते है –

*नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय, भस्माङ्गरागाय महेश्वराय ।*

*नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय, तस्मै न काराय नमः शिवाय ।।*

हे शिव! आप नागों को धारण किये हुए है, त्रिनेत्र वाले है, भस्म लेपन किये हुए है, महेश्वर है। नित्याय अर्थात् नित्य-नित्य है, शाश्वत् है। शुद्धाय अर्थात् परम विशुद्ध है। दिगम्बर है अर्थात् आडम्बर रहित है। आपको मेरा प्रणाम है।

क्यों करते है हम शिव स्तुति, क्यों करते है हम अभिषेक, क्यों चढ़ाते है जल, दूध इत्यादि? क्योंकि हमारे शिव ही रसों के अधिष्ठाता है हम रस प्राप्ति के लिये ही शिव अभिषेक करते है।

श्लोक है –

*जटा-टवी-गलज्-जल-प्रवाह-पावित-स्थले,*
*गलेऽव-लम्ब्यत् लम्बितां भुजङ्ग तुङ्ग मालिकाम् ।*
*डमड्-डमड्-डमड्-डमन् निनाद वड्-डमर्वयं,*
*चकार चण्ड ताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ।।*

जटा रूपी वन से निकलती हुई गंगा की धाराएं, जिनके कण्ठ प्रदेश को प्रक्षालित करती हैं, गले में सर्पों की विशाल माला को धारण करके, डमरू के डम-डम ध्वनि के साथ ताण्डव नृत्य करते हुए शिव हम उपासकों का कल्याण करें।

तो शिव ही तो रसों के अधिष्ठाता है जिनकी जटाओं में गंगा है।



**संसार में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं होगा जिसे रस नहीं चाहिये। बिना रस के सूखा-सूखा जीवन, आनन्द से भी सूखा है। क्या आप अपने हृदय पर हाथ रख कर कह सकते हो कि आपको अपने जीवन में कितना रस मिल रहा है?**

अभी आपमें से कितने लोगों ने कुंभ में डुबकी लगाई है। अब डुबकी लगाई है तो कुछ तो सोचा ही होगा। आमतौर पर यह सोचते है कि डुबकी लगायेंगे तो पाप कटेंगे जीवन के दुःख समाप्त होंगे, बिगड़ी बन जायेगी और ऐसा होता भी है यह ब्रह्म सत्य है।

क्योंकि जब कुंभ स्थान अर्थात् अमृत कुण्ड में डुबकी लगाने से आपके बिगड़े काम क्यों बन जाते है क्योंकि उस समय हमारे भीतर अमृत रूपी रस का प्रवाह प्रारम्भ हो जाता है।

देखों भाई! जीवन को सजाने संवारने और आनन्द युक्त बनाने के लिये रस चाहिये। कहीं पिकनिक पर जाते हो और वहां खाना बनाना हुआ तो अनाज को गीला करते हो और सूखी लकड़ी खोजते हो। भोजन बनाने में भी गीला दाल-भात भलीभांति पकता है और सूखी लकड़ी शीघ्रता से जलती है।

कुंभ में आपने डुबकी लगाकर अपने मन को रस से सिक्त किया है क्योंकि रस के बिना जीवन नीरस है और नीरस जीवन में आनन्द कैसे?

तो जीवन का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है रस। जब यह मन रस से युक्त होता है तो प्रसन्न रहता है। आप उत्साह में रहते हो। ऐसा लगता है कि सारा संसार मेरे वश में है।

इतना समझ लो कि जीवन में जो कुछ भी महत्वपूर्ण है वह रस है या रस का प्रतीक है।

यौवन का अर्थ रस है।

प्रेम का अर्थ रस है।

श्रद्धा-भक्ति का अर्थ रस है।

सौन्दर्य का अर्थ रस है।

यही तो चाहिये जीवन में - यौवन, प्रेम, भक्ति, शक्ति, सौन्दर्य।

इसीलिये कहा गया है कि -

*प्रेम नदी में नाव चले, बिना पतवार, बिन पानी।*
*वहे खिवया पार लगावे जांकि प्रीत स्यानी।।*

तो भाई शिव प्रेम में, प्रभु प्रेम में जिनकी प्रीत चलती है, जिनकी प्रीत होती है उसकी नाव अवश्य किनारे पर पहुंचती है। तूफानों के बीच भी सुरक्षित रहती है।

मैं रस की बात कर रहा था। रस के आदि स्रोत है महादेव जिन्हें रसेश्वर कहा गया है। इसीलिये हम शिव अभिषेक करते है क्योंकि शिव हमें रस से युक्त करते है और रस की उत्पत्ति सबमें अलग-अलग स्तर पर होती है।

भोजन ग्रहण किया उसका रस शरीर में प्रवाहित हुआ, शरीर स्वस्थ हुआ। प्रार्थना सम्पन्न की, उसका रस मस्तिष्क में पहुंचा।

प्रेम किया चाहे वह संतान से हो या और किसी से, उसका रस हृदय में पहुंचा।

और प्रार्थना करते हुए क्या भाव निकलना चाहिये?

*त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुम्यमेव समर्पये*

आपने यही दिया है आपको ही समर्पित।

शिव हमें रस से युक्त करते है इसलिये हम शिव को रस प्रदान करते है।

**बिना रस के तो भोजन भी स्वादिष्ट नहीं लगता। बिना रस से युक्त संगीत भजन भी नहीं शोभता।**

**बिना रस से युक्त हुए श्रृंगार अर्थात् बिना श्रृंगार के वधु भी नहीं शोभती।**

**बिना रस से युक्त हुए अर्थात् बिना सजावट के मकान भी नहीं शोभता वह घर नहीं बनता।**

ठीक ऐसे ही बिना रस से आपूरित हुए मन भी प्रसन्न नहीं होता है।

हम शिव का अभिषेक करते है - दूध, दही, घृत, मधु और जल से। गंगाजल चढ़ाते है शिव पर । कल करेंगे अभिषेक, गंगा जल से शिव का।

थोड़ी विचित्र बात हो गई ना? अब शिव की जटाओं में ही गंगा है और गंगाजल से शिव का अभिषेक क्यों? आकाश मार्ग से शिव की जटाओं से निकलकर ही तो गंगा हमारे पास आई है। फिर गंगा जल से शिव का अभिषेक क्यों?

वही बात जो मैंने अभी कही थी -



*त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुम्यमेव समर्पये*

शिव हमें रस से सिंचते है इसलिये हम शिव का अभिषेक करते है।

आप आये हो प्रयाग और तीन नदियों का मिलन है - गंगा, यमुना और सरस्वती। प्रयाग में ही तीनों नदियां मिलती है गंगा और युमना दृश्यमान है, सरस्वती लुप्त है।

क्यों नहीं दिखाई दे रहीं है सरस्वती क्योंकि हमारे जीवन में सरसता लुप्त हो गई है।

जहां सरसता है वहां सरस्वती है और सरसता ज्ञान से आती है।

ज्ञान के बिना भक्ति, प्रेम, सौन्दर्य केवल बाहरी दिखावा है।

ज्ञानयुक्त यौवन, प्रेम, भक्ति, सौन्दर्य गंगा, युमना, सरस्वती के मिलन का स्वरूप है।

सरसता तो ब्रह्मा में भी नहीं है। चाहे उन्होंने सृष्टि का निर्माण किया। और सरस्वती उनसे अलग हो गई। ब्रह्मा का स्वरूप कैसा बताया गया है?



सब देवताओं का स्वरूप युवा और सुन्दर होता है लेकिन ब्रह्मा का चित्रण हमेशा वृद्ध के रूप में बताया गया है। बड़ी-बड़ी दाढ़ी, ऐसा क्यों है? मेरी बात को ध्यान से समझना, जो बात में कह रहा हूं वह और कहीं नहीं सुनी होगी।

ब्रह्मा है अतीत का स्वरूप, विष्णु है वर्तमान का स्वरूप और शिव है भविष्य का स्वरूप, काल का स्वरूप, समय का स्वरूप।

ब्रह्मा की उत्पत्ति कहां से हुई, विष्णु के नाभि कमल से। आध्यात्मिक अर्थ क्या है? किसी का भी जन्म जब और चाहे जहां हुआ हो वह वर्तमान से ही उत्पन्न होता है क्योंकि अतीत के सारे दुःख, तकलीफ हम वर्तमान में याद करते है।

यह तो वैसी ही बात हो गई कि किसी घाव को, अतीत के घाव को ठीक होने ही नहीं दिया जाये और रोज उसे खुरेद-खुरेद कर ताजा कर दिया जाये।

**बहुत कम लोग है जो अपने अतीत से प्रसन्न है क्योंकि ज्यादातर लोगों को अपने अतीत से बहुत तकलीफ है। वह उनके स्मृति पटल पर अंकित हो गया है और बार-बार उभर कर सामने आता है।**

अब विष्णु है वर्तमान के देव, क्यों कहा गया है उन्हें वर्तमान के देव। ये जो दस अवतार है - **मत्स्य अवतार, कूर्म अवतार, वराह अवतार, नृसिंह अवतार, वामन अवतार, परशुराम अवतार, राम अवतार, कृष्ण अवतार, बुद्ध अवतार, कल्कि** अवतार हमारी सृष्टि की कथा बताते है - वर्तमान का स्वरूप है,

ऐसा है, इसका भी एक पौराणिक आख्यान है कि शिव की काशी नगरी में शिव और शिवा दोनों आनन्द से रहते थे इसीलिये काशी को आनन्द वन कहा गया है। एक काल में आनन्द वन में रमण करते हुए शिव और शिवा के मन में यह इच्छा हुई कि सृष्टि संचालन का महान् भार किसी अन्य पुरुष को सौंप देना चाहिये। जिससे हम लोग काशी में आनन्द पूर्वक निवास कर सके।

ऐसा विचार कर शिव ने अपने वाम भाग के दसवें अंग पर अमृत का सिंचन किया जिससे एक पुरुष उत्पन्न हुआ।

वह अमृत तत्व से युक्त शांत स्वभाव का था और उमसें सत्वगुण की अधिकता थी और शिव और शिवा ने उसे नाम दिया विष्णु क्योंकि विष्णु यत्र-तत्र-सर्वत्र है।

तो यह सृष्टि भगवान विष्णु की सृष्टि हुई ताकि शिव ओर शिवा आनन्द पूर्वक रह सके ओर पालन का काम अर्थात् संसार चलाने का काम विष्णु जी करें। इसलिये विष्णु जी शेषनाग पर सोते है। जिसके 100 फन है, शेषनाग।

संसार के प्रणियों की सौ प्रकार की मांगे है और विष्णु को बैलेन्स बनाना पड़ता है।

कोई-कोई मुझे कहता है कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश अलग-अलग है।

आप शिव आरती में क्या गाते हो?

**एकानन चतुरानन पंचानन राजे।**
**हंसासन गरूड़ासन वृषवाहन साजे।।**

**ॐ जय शिव ॐकारा...**

**दोऊ भुज चारु चतुर्भुज दशभुज अति सोहै।**
**तीनों रूप निरखते त्रिभुवन-जग मोहे।।**

**ॐ जय शिव ॐकारा...**

तो भाई! ब्रह्मा, विष्णु, महेश शिव का ही स्वरूप है क्योंकि शिव शाश्वत् है, शिव अवतार नहीं लेते। विष्णु बार-बार अवतार लेते है। जगत का पालन करने के लिये और ब्रह्मा एक बार जगत की रचना कर देते है आगे का काम विष्णु का और शिव का।

**अब हमारे शिव तो अलख निरंजन वे तो विष को अपने कण्ठ में दबाकर सबको अमृत प्रदान करते है। मृत्यु भय से मुक्ति प्रदान करते है। महाकाल है इसीलिये महामृत्युंजय अमृत मंत्र का सब जाप करते है।**

*ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।*
*उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।*

सबको चाहिये सुगन्ध, पुष्टि, बंधनों से मुक्ति ऐसा कोई है क्या जिसका अमृत नहीं चाहिये।

अमृत सबको चाहिये, शायद इसीलिये भारतवर्ष में सबसे अधिक शिव मन्दिर है। जहां शिव शिवलिंग रूप में स्थापित है और सबसे विशेष बात क्या है?

आप रुद्राष्टाध्यायी के मंत्रों से रूद को अभिषेक करते है। उसमें एक महत्वपूर्ण मंत्र है, जो रुद्र महिमा को विस्तार से बताता है -

*च प्रवाह्याय च नमः कि गुंग शिलाय च क्षयणाय च नमः।*
*कपर्दिने च पुलस्तये च नमः इरिण्याय च प्रथध्याय च।।*



जो रुद्रदेव नदियों के रेत में, प्रवाहमान जल में, कंकड़-पत्थर आदि में, शिला आदि में सर्वत्र विद्यमान हैं, जो सीप-शंख आदि में विद्यमान हैं, जो पूर्णजल में अन्तर्यामी रूप से निहित हैं, जो भूमि में उत्पन्न तृण, गुल्म आदि में विद्यमान हैं, जो बहु सेवित मार्गों में भी विद्यमान है, उन सर्वत्र व्यापी रुद्र को मैं प्रणाम करता हूं।

तो हमारे रूद्र तो सर्वत्र विद्यमान है। इसका सीधा सादा अर्थ है कि पूरे मनुष्य का जीवन और शरीर रुद्र स्वरूप है। इस रुद्र स्वरूप शरीर में जो सुगन्धित पुष्टिवर्द्धक है मनुष्य उसमें अपनी खोपड़ी से कुछ जोड़तोड़ करता रहता है। सीधा सरल सहज जीवन अच्छा नहीं लगता।

जीवन का कौन सा काल कैसा है? इस पर बार-बार विचार करते रहते हो। तीन ही काल है आपके जीवन में - भूतकाल-वर्तमान काल और भविष्य काल। तीनों के स्वामी महाकाल ही है।



**अब विचित्र बात क्या है? भूतकाल अतीत के प्रति आप थोड़े से दुःखी होते हो और सोचते हो कि काश उसमें मुझे सहयोग दिया होता, काश! उस समय मैंने यह गलती नहीं की होती और उस कारण वर्तमान के लिये थोड़े अनमने रहते हो क्योंकि भूतकाल को बहुत हावी कर दिया है। लेकिन एक बात है आप सबको अपने भविष्य के बारे में बड़ी जिज्ञासा होती है।**

**जब मैं वर्तमान के बारे में पूछता हूं, तो कहते हो बस गुरुजी कट रही है, चल रही है जिन्दगी। अब वर्तमान काल विष्णु का काल है और विष्णु हम सबका पालन करते है। पालन तो वर्तमान में ही होगा ना, इसलिये वर्तमान विष्णु का काल है।**

ब्रह्मा जगत के निर्माता है और निर्माण हमेशा अतीत में रहता है। इसलिये अतीत के प्रति श्रद्धा से भरे नहीं रहा जा सकता क्योंकि वह तो बीत गया, अब उसमें कुछ सुधार हो नहीं सकता।

शिव है हमारे महाकाल, महाकाल का अर्थ है? काल से ऊपर। जो काल से ऊपर है, काल से महान् है उसे ही महाकाल कहा गया है। तो काल का सबसे महत्वपूर्ण रूप आपके सामने जो अभी तक आया नहीं है उसके प्रति रस रहता है।

तो भविष्यकाल के प्रति और भविष्य को जानने का रस आप सब के मन में बहुत अधिक है।

भविष्य का विचार कर रस मिलता है और जहां रस नहीं मिलता है वहां आपका मन नहीं झुकता है।

आप किसी अस्पताल में चले जाओं जहां आपका कोई परिवारिक सदस्य, मित्र, रिश्तेदार, जान-पहचान वाला भर्ती है तो आप कितने दुःखी हो जाते हो। एकदम परेशान, हैरान रहते हो जबकि वहां काम करने वाले डॉक्टर नर्स को देखों, वे निर्विकार भाव से इलाज करते रहते है। पर आप तो अपने मरीज को देखकर निर्विकार नहीं रह सकते क्योंकि आपके भाव जुड़े है।

भाव अर्थात् रस।

जहां रस नहीं है वहां भाव भी नहीं है और जिसमें भाव नहीं हो उसके प्रति श्रद्धा भी नहीं पनपती है।

थोड़ा विस्तार से समझाता हूं।

सबसे अधिक रस किसमें है? बात थोड़ी विचित्र हैं।

प्रणय, प्रेम में। शिव और शक्ति की जोड़ी आदर्श है। दोनों नार्थ पॉल और साउथ पॉल की तरह अलग-अलग है पर उनका प्रेम विशिष्ट है।

आज भी कन्याएं सोलह सोमवार का व्रत करती है कि उसे शिव जैसा पति मिले, गौरी पूजन करती है।

क्यों चाहिये शिव जैसा वर? शिव जी के तो घर भी नहीं है। पार्वती है राजकुमारी, शिव है संन्यासी। फिर भी दोनों का प्रेम अमर है क्योंकि शिव शक्ति अर्थात् पार्वती के प्रति दण्डवत् है।

**कैसी विचित्र बात है? कि लक्ष्मी विष्णु के चरण दबाती है, सीता अग्नि परीक्षा देती, राधा विरह गीत गाती है और हमारे शिव पार्वती के अधीन है।**

**इसीलिये हर स्त्री को शिव जैसा पति चाहिये। जिससे उसका गृहस्थ जीवन सुखमय हो।**

सुखी गृहस्थी का क्या रहस्य है? एक कहानी सुनों –

एक बार एक बगीचे में एक विशाल वृक्ष की छाया में 85 वर्षीय रामप्रसाद जी बैठे थे। कुछ युवकों ने पूछा कि काका आप इस उम्र में भी इतने स्फूर्तिवान और स्वस्थ कैसे है? आप नियमित रूप से यहां आते हो कभी बीमार भी नहीं हुए।

रामप्रसाद काका मुस्कुराये और कहा कि बेटा यह कहानी मेरे शादी के पहले दिन की है। मैं और तेरी काकी की शादी हुई, उस रात तेरी काकी के साथ एक अनूठा समझोता किया। कैसा समझोता?

हमने तय किया कि जब भीहमारे बीच कोई विवाद या झगड़ा होगा और जो भी गलत होगा उसे 5 किमी पैदल चलना पड़ेगा। बस वो दिन है और आज का दिन है और रोज मैं 5 किमी सैर पर निकलता हूं।

लड़के लोग हंसे और काकी? काकी तो 60 साल में आवश्यक काम के बिना घर से निकलती ही नहीं। यही मेरे स्वस्थ का राज है।

फिर बोले कि वास्तव में ये मेरे पत्नी की दूर दर्शिता थी कि उन्होंने जानबूझ कर मुझे स्वस्थ रखने का यह तरीका निकाला क्योंकि वह जानती थी कि मैं थोड़ा जिद्दी हूं और गलत बात पर भी बहस कर जीतना चाहता हूं क्योंकि मुझे समझ में आ गया था कि काकी गलती करती ही नहीं है, और मुझे रोज 5 किमी चलना पड़ता है।

देखों एक छोटी सी समझदारी जीवन को खुशहाल और स्वस्थ बना सकती है।



गृहस्थी वही सुखी है जहां पत्नी चला रही है क्योंकि वह शक्ति है भाई।

**आज गुरु ज्ञान दे रहा हूं। यदि शक्ति के सम्मुख नतमस्तक रहोगे तो रसेश्वर ही रहोंगे, रस से आपूरित ही रहोगे। हर जगह आपकी पूछ होगी नहीं तो एकांकी रह जाओंगे। मन की घुटन बढ़ती ही रहेगी और रस सूखता ही रहेगा।**

हर महीने गुरु गीता के श्लोक लिखता हूं, और उनकी व्याख्या भी लिखता हूं। क्या कहा जाता है – गुरु और शिव में कोई भेद नहीं है।

***यः शिवः स गुरुः प्रोक्तो यो गुरुः स शिवः स्मृतः।***
***शिवरूपं गुरुं ध्यायेत् गुरुरूपं शिवं स्मरेत।।***

क्या सीधा अर्थ है जो शिव है वहीं गुरु कह गये है और जो गुरु है वह शिव माने गये है। **इसीलिये गुरु को शिव रूप में ध्यान करना चाहिए और शिव को गुरु रूप में स्मरण करना चाहिये।**

इस कुंभ में, प्रयागराज में शिवरात्रि के पीछे मेरा प्रयोजन क्या है? प्रयोजन है कि आपके जीवन में अमृत रस बहे। यह त्रिवेणी स्थल है और कुंभ वह माध्यम है, जिसके द्वारा अमृत को हम अपने अन्दर लेते है।

*यथा कुम्भो जलपूर्णस्तथा देहो रसैर्युतः*

जैसे घड़ा जल से भरा होता है वैसे ही हमारा कुंभरूपी शरीर रसों से युक्त है।

देखों भाई! शरीर तो काल के अधीन है, धीरे-धीरे काल के मुख में प्रवेश कर रहा है और मिट्टी के कुंभ की भांति कभी भी टूट सकता है। पर उसके अन्दर निवास करने वाली आत्मा समय की सीमा से परे है। वह अविनाशी है, वह शिव है लेकिन हमें उसका ज्ञान उस समय तक नहीं होता है जब तक गुरु हमारी दृष्टि शिव की और हमारी आत्मा की और नहीं मोड़ते।

जब भी कोई शिष्य गुरु के पास आता है तो उसके मन में तीन विचार होते है, तीन प्रकार की कामनाएं होती है। इन तीन कामनाओं में सब संसार की कामनाएं आ जाती है।

हे गुरुदेव!

*असतो मा सद्गमय*

**असत्य (अस्थायी) से सत्य (शाश्वत) की ओर ले चलो।**

*तमसो मा ज्योतिर्गमय*

**अंधकार (अज्ञान) से प्रकाश (ज्ञान) की ओर ले चलो।**

*मृत्योर्मा अमृतं गमय*

**मृत्यु (नश्वरता) से अमरत्व (मोक्ष) की ओर ले चलो।**

इस प्रयाग राज में महाशिवरात्रि का चयन इन तीनों उद्देश्यों को पूरा करता है।

जीवन का असत्य क्या है? असत्य है रस से विहीन हो जाना। इसीलिये जीवन में उदासीनता, थकावट, वृद्धावस्था का भाव।

50 के होत-होते समझते हो कि अब क्या होगा? इसका कारण है रस सूख रहा है। बच्चों को भी देखों, बड़ों को भी देखों सब कहते है कि बोर हो गया हूं। समाज में विखराव का कारण ही बोरीयत है।

छोटे-छोटे बच्चे कहते है मैं बोर हो गया हूं। बोरीयत अर्थात् रस सूख रहा है। अब रस का स्रोत तो है शिव, रस के ईश्वर है शिव।

कहते है प्रयाग में सरस्वती सूख गई है। ये प्रतीक है कि हमारे जीवन में रस सूख रहा है, इसलिये हम प्रयाग में शिवरात्रि मना रहे है क्योंकि शिव ही रसेश्वर है, शिव ही ज्ञान प्रदाता है और हम रसों के द्वारा शिव का अभिषेक कर पुनः अपने जीवन में रस और ज्ञान प्राप्त करना चाहते है।

**जहां ज्ञान रूपी सरस्वती है वहां रस सूख ही नहीं सकता, सदैव याद रखना।**





अब दूसरी बात *तमसो मा ज्योतिर्गमय...* सीधा अर्थ यही हुआ गुरु अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाते है।

रोज तो सूर्य उदय होता है, प्रकाश होता है। पर जीवन के अंधकार क्या है?

एक ऐसी मानसिक स्थिति है जहां मनुष्य को जीवन का सही मार्ग नहीं दिखाई देता है और आत्मविश्वास की कमी और निराशा के घने बादल मन पर छा जाते है जैसे अंधेरी रात में मार्ग दिखाई नहीं देता वैसे ही निराशा में आगे का मार्ग नहीं दिखाई देता। जीवन के प्रति उत्साह और जीवन्तता खो जाती है।

मनुष्य अपने लक्ष्यों और सपनों से दूर होता जाता है और भीतर ही भीतर एक खालीपन अनुभव करता है। सम्बन्धों में दूरियां बढ़ने लगती है। व्यक्ति अपनों से भी कटने लगता है, एकांकीपन का शिकार हो जाता है उसे लगता है कि कोई मेरा है ही नहीं।

देखों, आज गुरु की बात ध्यान से सुनना।

**यह अंधकार स्थाई नहीं है। जैसे सूर्योदय के प्रकाश में अंधेरा छट जाता है वैसे ही आत्मज्ञान, विवेक और सकारात्मक दृष्टिकोण से जीवन में फिर से प्रकाश आ जाता है। आत्मज्ञान के पश्चात् विवेक और सकारात्मक दृष्टिकोण आता है।**

तो भाई जीवन के अंधकार को दूर करने में सबसे प्रमुख भूमिका आत्मज्ञान की है और आत्मज्ञान का अर्थ क्या है बहुत सरल है।

अपने मन के गलियारों में प्रवेश करना, अपने साथ समय व्यतीत करना और सारा ज्ञान हमारे मन में छुपा हुआ है। बस ये ज्ञान अज्ञान के आवरण तले दबा हुआ है।

जो भी हम नया-नया जानते है, मालूम होता है वह वास्तव में अविष्कार है और आपको बार-बार अविष्कार करना है।

आप नया अविष्कार कर सकते है। मन से अज्ञान को दूर हटाने, आपके द्वारा किया गया अविष्कार है। आपने स्वयं किया ना, इसलिये यह अविष्कार है। तब आपका ज्ञान आपके सामने स्पष्ट रूप से आ जायेगा।

**एक बात है, मन पर किसका नियन्त्रण है।**

**मेरी मानों तो मन पर तो नियन्त्रण रसेश्वर शिव का ही है।**

**हमारा मन ही सबसे अधिक शक्तिशाली है और सबसे अधिक कमजोर भी है। इसीलिये मन के विषय में कहते है -**

**मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।**

एक कथा मुझे याद आ रही है। पहले पूरी सुनना। एक लड़का था विवेक बहुत प्रतिभाशाली, हर समय एक बैचेनी रहती। वह हर समय किसी न किसी दौड़ में लगा रहता, अच्छे अंक प्राप्त हो। सब प्रतियोगिताओं में भी जीत हो। हर समय दूसरों से आगे निकलने की जिद्द रहती।

एक दिन व अपने कॉलेज में प्रथम स्थान पाने के लिये दिन-रात पढ़ाई में जुटा रहता था। उसके भी एक गुरु थे।

गुरु होंगे तो बुद्धिमान अवश्य होंगे।

उन्होंने पूछ लिया - विवेक क्या बात है, हर समय परेशान रहते हो? बोला गुरुजी मैं बहुत सफलता प्राप्त करना चाहता हूं। जीवन के हर क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ बनना चाहता हूं।

गुरुजी ने कहा ये तो बहुत अच्छी बात है। गुरु जी ने कहा ठीक है, मुझे यह बताओं गंगा को सबसे पवित्र क्यों कहा जाता है?

अब विवेक ने जो पढ़ा था वही जवाब दे दिया। गुरुजी, गंगा पापों के धो देती है।

गुरुजी ने कहा ऐसी बात नहीं है, गंगा सबसे पवित्र इसलिये है क्योंकि वह निरन्तर बहती रहती है।

अपने मार्ग में आने वाली हर बाधा को पार करती है। किसी से युद्ध नहीं करती।

वह अपनी गति से चलती है और किसी से ईर्ष्यावश प्रतिस्पर्धा भी नहीं करती।

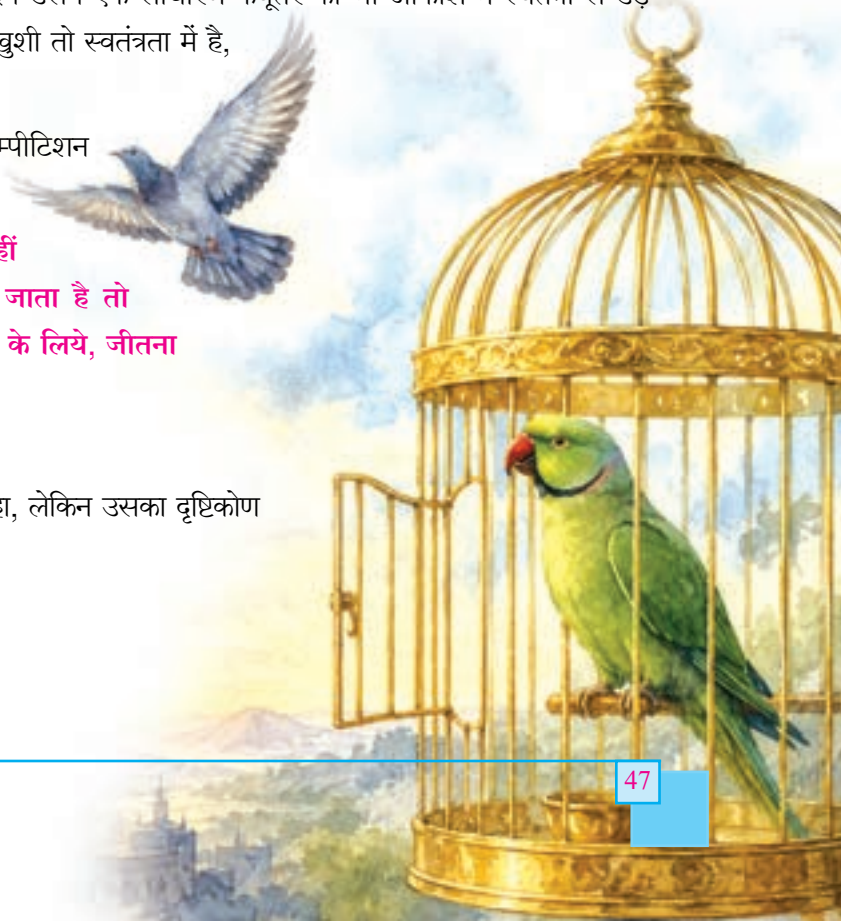
पूरी बात समझ में नहीं आई विवेक को, तो गुरुजी ने कहा कि बेटा तुम्हारे मन में बहुत अशांति है। यह अशांति ही माया का स्वरूप है।

तुम हर समय किसी न किसी चीज को पाने के लिये दौड़ में लगे रहते हो। पर क्या तुम्हें मालूम है तुम कुछ महत्वपूर्ण खो रहे हो।

बड़ा आश्चर्य हुआ, मैं क्या खो रहा हू?

**गुरु ने कहा कि तुम हमेशा भविष्य की चिन्ता में डूबे रहते हो। इस कारण तुम्हारा वर्तमान बीत जाता है और जब तुम दूसरों से निरन्तर आगे निकलने की सोचते हो तो वास्तव में तुम स्वयं अपने आपको पीछे छोड़ देते हो।**

एक नई समझ विवेक को आई। तो गुरु ने कहा, मेरी बात सुनों। एक तोता था जो सोने के पिंजरे में रहता। सब सुख-सुविधा थी लेकिन वह खुश नहीं था। एक दिन उसने एक साधारण कबूतर को जो आकाश में स्वतंत्रा से उड़ रहा था, उसे देखा तब समझ में आया कि सच्ची खुशी तो स्वतंत्रता में है, सोने के पिंजरे में नहीं है।



विवेक ने पूछा कि तो क्या हम जिन्दगी में कम्पीटिशन करें ही नहीं?

**गुरु जी ने कहा कि देखों कम्पीटिशन बुरा नहीं है लेकिन जब यह कम्पीटिशन लोभ में बदल जाता है तो विनाशकारी हो जाता है। तब आप केवल जीतने के लिये, जीतना चाहते हो। पर वास्तव में हार जाते हो।**

**सच्ची जीत तो अपने मन को जीतने में है।**

उसको यह बात समझ में आई। पढ़ाई करता रहा, लेकिन उसका दृष्टिकोण बदल गया।

अब वह सीखने के लिये पढ़ रहा था ना केवल अंक पाने के लिये। अपने साथियों की भी मदद करने लगा और इस प्रक्रिया में उसे बहुत कुछ सीखने का मिला। परीक्षा आई उसने अपना सर्वश्रेष्ठ किया। इस बार परिणाम की चिन्ता नहीं थी। सच बात क्या है उसे नम्बर इस बार और अधिक आये। गुरुजी के पास अपना परीक्षा परिणाम लेकर गया। गुरु जी ने आशीर्वाद दिया।

गुरुजी ने पूछा - अब कैसा महसूस कर रहे हो?

बोला, अब मैं समझ गया हूं। **पहले मैं हर चीज को पाना चाहता था और मैं उसमें खो गया था।**

**अब मैं हर पल को सुख पूर्वक जीना चाहता हूं यह सीखा है कि सच्ची जीत बाहर नहीं भीतर है।**

**जब आप स्वयं प्रसन्न होते है, आपका मन प्रसन्न होता है। यदि आपका मन प्रसन्न नहीं हुआ? तो हर जीत अधूरी है और जब मन को जीत लेते हो तो छोटी-मोटी हार भी एक सीख बन जाती है।**

मेरी बात ध्यान से सुनना, जीवन कम्पीटिशन नहीं है, जीवन है यात्रा और इस यात्रा में सबसे महत्वपूर्ण है। मन की शांति, मन की प्रसन्नता, मन में आनन्द भाव और वह आपके स्वयं के हाथों में है।

तो इस हमारी जीवन यात्रा में सबसे महत्वपूर्ण है मन की शांति। कैसे हो मन की शांति? ***मृत्योर्मा अमृतं गमय*** तीसरा सूत्र। कल जब हम रुद्राभिषेक करेंगे तो **तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु** शब्द बार-बार आयेगा।

रुद्राष्टाध्यायी के पहले अध्याय का आठवां मंत्र है -

***येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परि गृहीत ममृतेन सर्वम्।***
***येन यज्ञस् ता यते सप्त होता तन्मे मनः शिव संकल्प मस्तु।।***

हे शिव मेरा मन अमृतत्व को प्राप्त करे। यह मन ही जो अमृतत्व को प्राप्त करता है वह भूत-भविष्य-वर्तमान काल के सभी पदार्थों को ग्रहण करता है। यह मन ही सात होता वाले मन पांच कमेन्द्रियां, बुद्धि और आत्मा रूपी वाले जीवन यज्ञ को विस्तृत करता है।

मेरा मन भी अमृतवान हो, जिस प्रकार हे शिव आप अमृतधारी हो वैसे ही मेरा मन शिव संकल्पमय हो। शुभ कार्यों में प्रवृतहो।

बहुत गंभीर बात है। जीवन में सबसे महत्वपूर्ण तत्व अमृत तत्व की प्राप्ति जो हमें ***मृत्योर्मा अमृतं गमय...*** की ओर प्रवृत्त करती है वह संकल्प शिव संकल्प है।



बार-बार कहा गया है - कि मेरा मन मंगलकारी, शुभ और सकारात्मक संकल्पों से भरा हो। यह सिद्ध करता है कि शिव का हमारे मन पर नियन्त्रण है।

आज आप अपने मन पर हाथ रखकर, हृदय पर हाथ रखकर अवश्य विचार करना कि आप किस प्रकार का संकल्प लेते है और उन संकल्पों की पूर्णता के लिये किस प्रकार कार्य करते है?

उद्घोषणा कर रहा हूं, जिसके मन में **शिव संकल्पमस्तु** नहीं है वह मन विकल्पों से भरा हुआ है और जो मन विकल्पों से भरा हुआ होता है वह अपने जीवन में कभी भी सुख शांति और संतोष प्राप्त नहीं करता है।

गुरु शिष्य मिलन का तीसरा कारण यही है। ***मृत्योर्मा अमृतं गमय...*** जो व्यक्ति शिव तत्व को अपने भीतर धारण करता है वह मंगलमय हो जाता है। जीवन को मंगलमय बनाने के लिये ही तो शिष्य गुरु के पास आता है और गुरु उसके मन में **'शिव संकल्प मस्तु'** का बार-बार आह्वान करते है।

शिव तत्व गुरु का पथ है। इसलिये गुरु को भी अमृत प्रदाता कहा गया है, शिव कहा गया है। शिव भी अमृत प्रदाता है महामृत्युंजय है। ***मृत्योर्मा अमृतं गमय...*** पथ पर ले जाने वाले है।

महाशिवरात्रि महान् क्यों है? यह अमृत की रात्रि है। उस रात अमृत वर्षा होती है क्योंकि उस रात्रि में शिव और शक्ति में एक दूसरे का वरण किया था।

इस बात को बहुत गंभीरता से समझों। शिव ने शक्ति से विवाह किया।

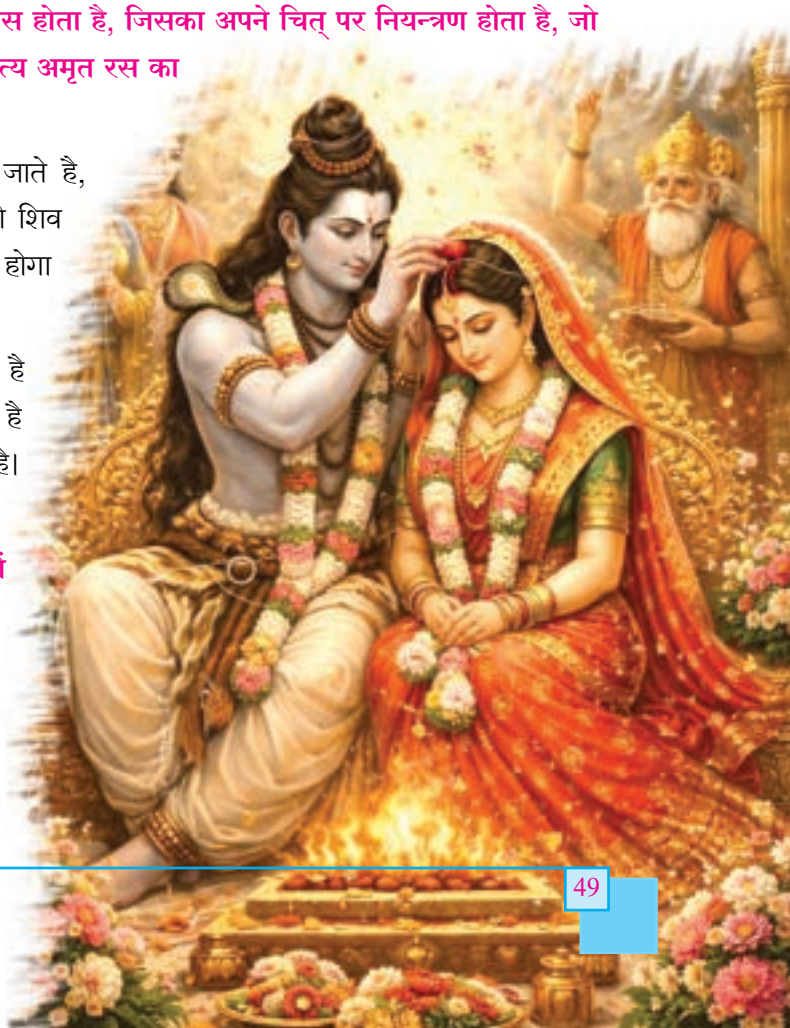
शक्ति को हम कहते है ऊर्जा, ऐनर्जी। तो आपके शरीर रूपी कुंभ में जो ऐनर्जी, ऊर्जा का कारण है वह अमृत, वह है आत्मा।

बार-बार मैं आत्मज्ञान की बात कह रहा हूं। सबकुछ आपके भीतर है। गुरु उसे जाग्रत करते है, जैसे अमृत पीने से व्यक्ति अमर हो जाता है वैसे ही आत्मज्ञान से व्यक्ति जीवन चक्र में क्रियाशील रहते हुए भी मुक्त रहता है।

तो यह हमारी आत्मा जो शिव का स्वरूप है - सद्चित्त आनन्द स्वरूप है। इसका स्वभाव शाश्वत् आनन्द है जो अमृत के समान है।

**आनन्द ही तो हर व्यक्ति अपने जीवन में चाहता है पर आनन्द किसे प्राप्त होता है?**

**जो सत्चित् होता है, जिसके भीतर सत्य का निवास होता है, जिसका अपने चित् पर नियन्त्रण होता है, जो अपने भीतर शिव को स्थापित करता है वह नित्य-नित्य अमृत रस का आस्वादन करता है।**



कहते है ना बिना शक्ति के शिव भी निस्तेज हो जाते है, स्पन्दनहीन हो जाते है। तो हमारी शरीर रूपी कुंभ भी शिव रूपी आत्मा से युक्त नहीं हुआ तो उसमें स्पन्दन नहीं होगा अर्थात् आनन्द नहीं होगा।

मनुष्य को सौन्दर्य, प्रेम, माधुर्य आत्मा से ही आता है और हर प्राणी को सर्वाधिक प्रेम अपनी आत्मा से ही है इसलिये प्रत्येक प्राणी में प्राण रक्षा का स्वभाविक गुण है। कोई भी प्राणी मृत्यु को प्राप्त नहीं होना चाहता है,

**हां वह अपने जीवन में बार-बार आने वाले बंधनों से मुक्त होना चाहता है।**

और वेद स्तुति गाते है कि शिव महामृत्युंजय है। वेद कहते है हे प्राणी मृत्यु भय से मुक्त रह। सदैव और सदैव त्र्यम्बक की स्तुति कर।

त्र्यम्बक अर्थात् तीन नेत्रों वाले, त्र्यम्बक अर्थात् भूत-वर्तमान-भविष्य के अधिपति।

त्र्यम्बक अर्थात् आकाश, धरती, पाताल के अधिपति। इस रूप में सम्पूर्ण सृष्टि में शिव की ही सत्ता है। शिव ही सब प्राणियों में अमृत का संचालन करते है। इसीलिये

*ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।*
*उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।*

को स्वतंत्रता का मंत्र कहा गया है, पुष्टि, सुगन्ध और मुक्ति का मंत्र कहा गया है। यही प्रयाग में होता है।

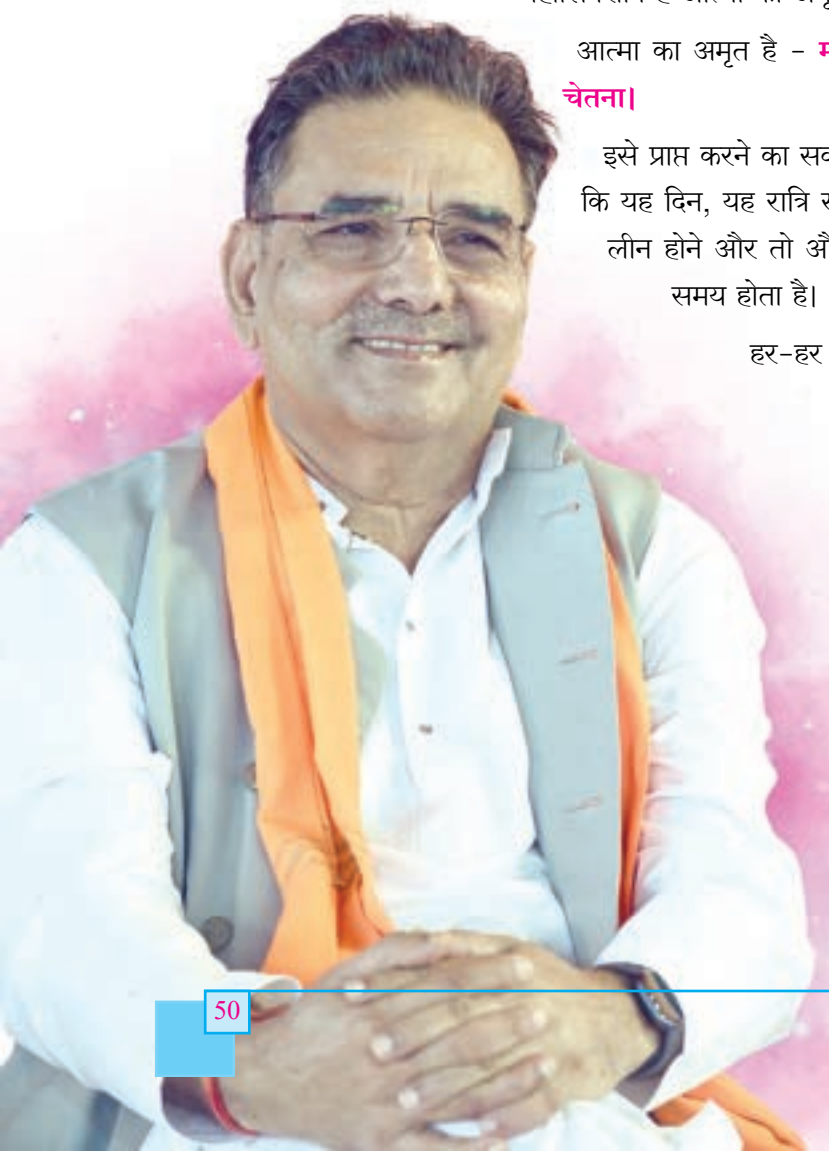
महान् तीर्थराज प्रयाग जहां, गंगा, यमुना, सरस्वती का मिलन होता है अर्थात् सत्य, रज और तम का मिलन होता है, वहां अमृत प्रवाह होता है।

सरस्वती सत्य का स्वरूप, गंगा रज का स्वरूप, यमुना तम का स्वरूप और इन तीनों विशेषताओं से युक्त तीन नदियों के मिलन से अमृत की प्राप्ति होती है।

और प्रयाग में शिवरात्रि तो सोने में सुहागे के समान है क्योंकि शिवरात्रि स्वयं में अमृत दिवस है।

शिवरात्रि पर्व शरीर में ऊर्जा को संतुलित करने और चैतन्य शक्ति को जाग्रत करने के लिये श्रेष्ठतम् अवसर पर्व, मुहूर्त माना गया है। इस दिन ग्रहों की स्थिति भी इस प्रकार से होती है कि ध्यान, साधना और अभिषेक करने से शरीर में ऊर्जा संचारित होती है। ऊर्जा संचारित होने का अर्थ है अमृत तत्व की प्राप्ति।

महाशिवरात्रि है आत्मा का अमृत।



आत्मा का अमृत है - **मोक्ष, ऊर्जा और ज्ञान। स्वतंत्रता शक्ति और ज्ञान चेतना।**

इसे प्राप्त करने का सर्वोत्तम अवसर है - महाशिवरात्रि। इतना समझ लो कि यह दिन, यह रात्रि संसारिक मोह, माया से ऊपर उठकर शिव तत्व में लीन होने और तो और परम शांति और आनन्द की अनुभूति करने का समय होता है।

हर-हर महादेव...

**परम पूज्य गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली**

**(महाशिवरात्रि साधना महोत्सव,**
**प्रयागराज - 2025)**

अगस्त 2026 अंक में प्रकाशित

# आपको याद दिलाने के लिये

आपको इस मास ये साधनाएं सम्पन्न करनी हैं
जिनका पूर्ण विवरण पिछले माह अगस्त 2026 में प्रकाशित है

## लक्ष्य सिद्धि 'क्लीं' साधना

(कृष्ण जन्माष्टमी - 4 सितम्बर 2026
अथवा किसी भी शुभ मुहूर्त में)

क्लीं साधना लक्ष्य निर्धारण और लक्ष्य सिद्धि के लिये बहुत महत्वपूर्ण है। भगवान श्रीकृष्ण का बीज मंत्र 'क्लीं' है। 'क्लीं' सर्वाधिक सम्मोहन प्रदायक बीज मंत्र है जिसके मंत्र जप से व्यक्ति अपनी क्षमताओं, अपनी शक्ति पर नियन्त्रण स्थापित करने में सफल होता है। क्लीं साधना साधक के जीवन में संशयों को समाप्त कर, जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करने की शक्ति प्रदान करती है। जिन साधकों को लक्ष्य निर्धारण अथवा स्वयं की क्षमताओं पर अविश्वास हो वे इस साधना को अवश्य सम्पन्न करें।

लक्ष्य सिद्धि की यात्रा केवल बाहरी उपलब्धि की यात्रा नहीं है। यह स्वयं को अनुशासित करने, भय से ऊपर उठने, निरन्तर कर्म करने और अंततः समत्व को प्राप्त करने की यात्रा है। संकल्प लक्ष्य प्राप्ति का आरम्भ है, पुरुषार्थ उसका मार्ग है और सन्तुलन उसकी अंतिम सिद्धि है।

लक्ष्य प्राप्ति के अभाव में हमारा मन असन्तुलित भावनाओं के बहाव में बह जाता है और असन्तुलित मन निर्णयों को प्रभावित करता है और लक्ष्य के अभाव में विसंगतियों और व्यर्थ के कार्यों में मनुष्य उलझ जाता है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/- (अगस्त 2026 पृष्ठ सं. 10)

## लक्ष्य सिद्धि क्लीं दीक्षा

(कृष्ण जन्माष्टमी - 4 सितम्बर 2026
अथवा किसी भी शुभ मुहूर्त में)

संसार में वही व्यक्ति सफल होते है जिनके कर्म में लक्ष्य की स्पष्टता, श्रद्धा और दिव्य मार्गदर्शन जुड़ा होता है, तभी वह सिद्धि का माध्यम बनता है। लक्ष्य सिद्धि क्लीं दीक्षा इसी आन्तरिक रूपान्तरण का प्रारम्भ है।

'क्लीं' केवल एक बीजाक्षर नहीं है, बल्कि यह आकर्षण, एकाग्रता, संकल्प शक्ति और लक्ष्य से आत्मा के मिलन का दिव्य स्पन्दन है। जब यह बीज मंत्र सद्गुरु की चेतना से अभिमन्त्रित होकर शक्तिपात के माध्यम से शिष्य के भीतर प्रतिष्ठित होता है, तब साधक के भीतर बिखरी हुई ऊर्जा एक केन्द्र पर एकत्रित होने लगती है।

लक्ष्य सिद्धि क्लीं दीक्षा के प्रभाव से * साधक के निर्णयों में स्पष्टता आती है * समय का सदुपयोग होने लगता है * आलस्य और भ्रम कम होने लगते हैं * आत्मविश्वास बढ़ता है * परिस्थितियों से संघर्ष करने का साहस विकसित होता है * जीवन ऊर्जा व्यर्थ के विचारों में नष्ट न होकर लक्ष्य की दिशा में प्रवाहित होती है।

- लक्ष्य सिद्धि 'क्लीं' दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. - 3100/- (अगस्त 2026 पृष्ठ सं. 11)

# महाविद्या महाकाली साधना

(महाकाली जयन्ती - 4 सितम्बर 2026 अथवा किसी भी शुभ मुहूर्त में)

बाधाओं का नाश कर ही जीवन में लक्ष्य सिद्धि प्राप्त की जा सकती है। हमारे जीवन की बाधाएं भी प्रायः आसुरी शक्ति रक्तबीज की भांति ही होती हैं, एक को समाप्त करते हैं तो दूसरा जन्म ले लेता है।

हमारे जीवन के रक्तबीज दूसरों के कारण उत्पन्न होने वाली बाधाएं ही नहीं बल्कि स्वयं का आलस्य, असंयम, आत्मविश्वास की कमी भी है। इन रक्तबीजों को समाप्त कर ही लक्ष्य प्राप्ति संभव है, इनके मूल कारण को पहचानकर समाप्त करना आवश्यक है।

काली की उपासना का यही रहस्य है कि वे साधक के समस्त भय, संकोच और दुर्बलता को जड़ से समाप्त कर देती हैं, जिससे साधक हर बाधा को विघ्न नहीं, अपितु अपने संकल्प की परीक्षा मानकर आगे बढ़ता है। महाकाली साधना से जीवन में बाधा, शत्रु, भय, इत्यादि तो समापन होते ही साधक का जीवन अष्ट पाशों से मुक्त हो जाता है, आरोग्यता प्राप्त होती है, अज्ञान रूपी अंधकार मिट जाता है और धन-धान्य, मान-पद, प्रतिष्ठा में अभिवृद्धि होती है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 750/- (अगस्त 2026 पृष्ठ सं. 12)

# महाविद्या महाकाली दीक्षा

(महाकाली दीक्षा - 4 सितम्बर 2026 अथवा किसी भी शुभ मुहूर्त में)

शक्ति के उग्र स्वरूप को महाकाली की संज्ञा से विभूषित किया गया है। महाकाली का भयावह स्वरूप मनुष्य के मन में जो बाधाएं हैं, अवरोध हैं, निम्नकारी स्थितियां हैं, उनका विनाश करने के लिये है। व्यक्ति को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है, वह हर क्षण आकस्मिक संकट, बाधाओं और तनावों से जूझता रहता है। असफल होने पर अत्यधिक दुःखी और तनावग्रस्त हो जाता है, दिन-प्रतिदिन तनाव में फंसता ही जाता है। ऐसी विषम परिस्थितियों से महाकाली मुक्त करा सकती है।

'महाकाली दीक्षा' प्राप्त कर यदि साधक श्रद्धा से काली साधना सम्पन्न करता है, तो सफलता अवश्य प्राप्त होती है। सद्गुरु द्वारा सात चरणों में महाकाली दीक्षा प्राप्त कर, अपने जीवन को सकरात्मकता और विश्वास से परिपूर्ण करें।

- महाकाली दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. - 3100/- (अगस्त 2026 पृष्ठ सं. 13)

# संतान गोपाल साधना

(गोपाल संतान सप्तमी - 18 सितम्बर 2026 अथवा किसी भी शुभ मुहूर्त)

गृहस्थ जीवन की दृष्टि से संतान वह दिव्य प्रसाद है, जो दाम्पत्य को पूर्णता प्रदान करता है। संतान के अभाव में गृहस्थ सुख की पूर्णता संभव ही नहीं है। संतान के अभाव में नारी पूर्ण नहीं मानी जाती है क्योंकि संतान को वात्सल्य का प्रतिरूप माना जाता है। संतान के अभाव में परिवार में कलह की स्थिति बनी रहती है और आपसी सम्बन्ध शिथिल होने लगते है।

संतान होना जीवन का सौभाग्य है इसके साथ यह भी आवश्यक है कि हमारी संतान तेजस्वी हो, गुणवान हो, पूर्ण आयु प्राप्त करें। उस पर किसी भी प्रकार का तंत्र दोष अथवा नजर का प्रभाव न हो। संतान अपने कुल के सम्मान में अभिवृद्धि करें। इस हेतु संतान गोपाल साधना निरन्तर करनी ही चाहिये।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/- (अगस्त 2026 पृष्ठ सं. 27)

# मदनाक्षी अप्सरा साधना

(किसी भी शुभ मुहूर्त में)

मदनाक्षी अप्सरा सौन्दर्य की साकार प्रतिमा है, जिनमें देवताओं की शक्ति का अंश-आकर्षण भरा है। जो कार्य आपका सच्चा मित्र कर सकता है, जिस प्रकार आप खुल कर अपने मित्र से व्यवहार करते हैं, उसी प्रकार मदनाक्षी अप्सरा भी अपने साधक के प्रति मित्र भाव रहता है और इस सहयोग के पीछे न तो कोई वासना है, न ही अपने से अलग समझने की स्थिति, यह तो भीतर ही भीतर शक्ति जाग्रत कर, मदनाक्षी अप्सरा की शक्ति प्राप्त कर एक श्रेष्ठता प्राप्त करने की सुन्दर, आनन्द युक्त प्रक्रिया है। मदनाक्षी अप्सरा की उत्पत्ति चौदह रत्नों से हुई है, और यह लक्ष्मी तत्व युक्त अप्सरा है। मदनाक्षी सिद्ध व्यक्ति के जीवन में अनंग काम तत्व सहस्त्र गुना बढ़ जाता है तथा उस साधक पर लक्ष्मी की कृपा भी लगातार बनी रहती है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 750/- (अगस्त 2026 पृष्ठ सं. 17)

# सिद्धिदायक गणपति साधना

(गणेश चतुर्थी - 14 सितम्बर 2026)

मनुष्य के दैनिक कार्यों में सफलता, सुख-समृद्धि की कामना, बुद्धि एवं ज्ञान के विकास एवं किसी भी मंगल कार्य को निर्विघ्न सम्पन्न करने हेतु सिद्धिदायक गणपति साधना सम्पन्न की जाती है। गणपति का व्यक्तित्व एवं कृतित्व बहुआयामी एवं बहुरंगी है यानी बुद्धिमत्ता, चातुर्य, युद्धनीति में पारंगत, प्रेमभाव युक्त।

सिद्धिदायक गणपति साधना अत्यन्त ही सरल और सुगम मानी जाती है और तीक्ष्ण प्रभावकारी भी। यदि किसी व्यक्ति का कोई कार्य बार-बार प्रयत्न करने पर भी न हो पा रहा हो तो ऐसे में 'सिद्धिदायक गणपति साधना' करने पर मार्ग में आये अवरोधों को हटाकर सफलता व श्रेष्ठता प्राप्त की जा सकती है। सिद्धिदायक गणपति साधना, साधक के लिये जितनी भौतिक उन्नति में लाभदायक है, उतनी ही आध्यात्मिक उन्नति के लिए भी सर्वोपरि है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/- (अगस्त 2026 पृष्ठ सं. 62)

# कार्य पूर्णता गणपति दीक्षा

(गणेश चतुर्थी - 14 सितम्बर 2026)

सद्गुरु शक्तिपात दीक्षा के माध्यम से आज्ञा चक्र में गणपति भाव को स्थापित करते है। सद्गुरु साधक के जीवन में संशय को समाप्त करते है, जिससे उसकी बुद्धि स्थिर हो, एकाग्र भाव हो। कार्य पूर्णता गणपति दीक्षा साधक के बुद्धि तत्व को जाग्रत करने की महान् चेतना क्रिया है।

ज्ञान और (बुद्धि) के साथ जो कार्य किया जाता है उसमें अवश्य लक्ष्य सिद्धि होकर फल प्राप्त होता है और ज्ञान का स्वरूप गुरु को कहा गया है और भगवान गणेश बुद्धि प्रदाता कहे गये है अर्थात् ज्ञान के स्वरूप गुरु से कार्य पूर्णता शक्तिपात दीक्षा के माध्यम से शिष्य जब शक्ति प्राप्त कर गणेश का आह्वान कर कार्य का श्रीगणेश करता है, तो उस कार्य में पूर्णता अवश्य प्राप्त होती है।

साधक शिष्य कोई भी नवीन कार्य प्रारम्भ करें, भूमि-भवन की खरीद अथवा कोई भी अन्य शुभ कार्य सबसे पहले सद्गुरुदेव से 'कार्य पूर्णता गणपति दीक्षा' ग्रहण कर कार्य प्रारम्भ करें।

- कार्य पूर्णता गपति दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. - 3100/- (अगस्त 2026 पृष्ठ सं. 64)

# मंत्र रहस्य: मन की शांति से शिवत्व तक

**मन स्वभाव से चंचल है और निरंतर इच्छाओं व विचारों के कारण अशांत रहता है। मंत्र-जप की पुनरावृत्ति मन के विचार-प्रवाह को शांत कर उसे स्थिर, निर्मल और एकाग्र बनाती है।**

**मंत्र केवल शब्द नहीं, बल्कि दिव्य चेतना से जुड़ने का माध्यम है, जो साधक के भीतर विद्या, विवेक और आत्मबोध का विकास करता है। जब यह विद्या अंतःकरण में परिपक्व होती है, तब साधक को सूक्ष्म अनुभूतियां प्राप्त होने लगती हैं और उसका चित्त उच्च चेतना की ओर अग्रसर होता है।**

**मंत्र-साधना का परम उद्देश्य है - मन की शांति, आत्मजागरण और शिवत्व की प्राप्ति...**

**मन को शांत करने के सूत्र हैं -**

*चित्तं मन्त्रः।।*

मंत्र का मूल तत्व है - पुनरावृत्ति। निरंतर दोहराव के माध्यम से मन को शांत किया जाता है। हमारे मन में हर समय विचारों का एक अनवरत प्रवाह चलता रहता है, विचारों की विविधता का प्रवाह होता है। प्रत्येक विचार हमारी मानसिक शांति पर एक प्रहार करता है। यदि हम एक क्षण के लिए अपने भीतर झांकें, तो पाएंगे कि वहां विचारों का मानो ट्रैफिक जाम लगा हुआ है। एक विचार समाप्त भी नहीं होता कि दूसरा आकर खड़ा हो जाता है।

इसी कारण हमारा मन अत्यंत चंचल और अस्थिर बना रहता है। कभी हम किसी व्यक्ति के घोर विरोध में होते हैं, और कुछ ही समय बाद उसी के पक्ष में खड़े दिखाई देते हैं। कभी कोई बात हमें अत्यधिक प्रसन्न कर देती है, तो वही बात थोड़ी देर बाद महत्वहीन लगने लगती है। मन का यह असंतुलन ही उसकी सबसे बड़ी कमजोरी है। ऐसा मन विश्वास के योग्य नहीं होता, क्योंकि वह परिस्थितियों के साथ निरंतर बदलता रहता है।

मन का वास्तविक स्वरूप तभी प्रकट होता है जब वह शांत हो जाता है। शांति की अवस्था में ही मन निर्मल दर्पण की भांति बन जाता है, जिसमें हमारा वास्तविक स्वरूप प्रतिबिंबित होता है। जब तक विचारों का कोलाहल चलता रहता है, तब तक हम स्वयं को नहीं, बल्कि केवल अपने विचारों को ही देखते रहते हैं।

अब प्रश्न उठता है कि कैसे जाना जाए कि मन वास्तव में शांत है?

शांत मन शीघ्रता से असंतुलित नहीं होता। वह छोटी-छोटी बातों पर विचलित नहीं होता। वह पल भर में क्रोधित और अगले ही पल प्रसन्न नहीं हो जाता। परिस्थितियां बदलती रहती हैं, लोग बदलते रहते हैं, संसार बदलता रहता है, परंतु शांत मन अपनी स्थिरता बनाए रखता है। उसका निर्णय आवेश से नहीं, विवेक से होता है। उसके भीतर प्रतिक्रियाएं नहीं, बल्कि सजग उत्तर जन्म लेते हैं।

यही मंत्र-जप का उद्देश्य है। मंत्र की पुनरावृत्ति केवल शब्दों को दोहराना नहीं है, बल्कि विचारों की भीड़ को धीरे-धीरे विराम देना है। जब विचारों का शोर कम होने लगता है, तब मन शांत होता है; और जब मन शांत होता है, तभी मनुष्य अपने भीतर स्थित उस असीम शक्ति का अनुभव कर पाता है, जो सदैव से उसके भीतर विद्यमान थी।

*प्रयत्नः साधकः।।*

**मन का स्वभाव है कि वह दुःख ढूंढ़ता है। उसका ध्यान सदैव उस पर केंद्रित रहता है जो उसे मिला नहीं है। इसी कारण मन की अशांति आज एक महामारी का रूप ले चुकी है।**

प्रयत्नशील होना ही साधना है। साधना का अर्थ केवल पूजा-पाठ, जप या ध्यान नहीं है; साधना का वास्तविक अर्थ है निरंतर प्रयत्न करते रहना। यदि जीवन का कोई एक उद्देश्य बताया जाए, तो वह यही है कि मनुष्य कभी प्रयत्न करना न छोड़े।

अनेक बार ऐसा होता है कि हम इसलिए हार जाते हैं, क्योंकि जब हम सफलता के सबसे निकट पहुंच चुके होते हैं, उसी समय प्रयास करना बंद कर देते हैं। हम समझते हैं कि अब कुछ नहीं होगा, जबकि संभव है कि अगला ही प्रयास हमें सफलता के शिखर तक पहुंचा देता। इसलिए प्रयत्नशीलता ही वह शक्ति है, जो मनुष्य को उसकी मंजिल तक ले जाती है।

साधना का उद्देश्य भी यही है कि मनुष्य के भीतर निरंतर प्रयास करने का स्वभाव विकसित हो। इसी सत्य को कबीरदास ने अत्यंत सरल शब्दों में कहा है

*करत-करत अभ्यास ते जड़मति होत सुजान।*
*रसरी आवत-जात ते सिल पर पड़त निशान।।*

अर्थात् निरंतर अभ्यास करते रहने से मंद बुद्धि वाला व्यक्ति भी बुद्धिमान बन जाता है। जैसे कुएं से पानी खींचने वाली रस्सी के बार-बार आने-जाने से कठोर पत्थर पर भी निशान पड़ जाते हैं, वैसे ही सतत प्रयास असंभव प्रतीत होने वाले कार्य को भी संभव बना देता है।

चाहे विद्या अर्जित करनी हो, धन का उपार्जन करना हो, या उत्तम स्वास्थ्य प्राप्त करना हो। इनमें से कोई भी उपलब्धि बिना प्रयत्न के संभव नहीं है। प्रत्येक सफलता के पीछे निरंतर किया गया अभ्यास और अनुशासित प्रयास छिपा होता है।

स्वास्थ्य भी इसका अपवाद नहीं है। **बहुत से लोग चाहते हैं कि वे स्वस्थ रहें, परन्तु केवल इच्छा से स्वास्थ्य प्राप्त नहीं होता। उसके लिए एक निश्चित दिनचर्या चाहिए। समय पर सोना, समय पर जागना, संतुलित भोजन करना, नियमित व्यायाम करना और जीवन में अनुशासन बनाए रखना आवश्यक है। स्वास्थ्य किसी संयोग का परिणाम नहीं, बल्कि सतत् प्रयत्न का फल है।**

**प्रयत्न शब्द का अर्थ ही है - विशेष प्रकार का यत्न, अर्थात् पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ लगातार प्रयास करते रहना। यही प्रयास मनुष्य की सबसे बड़ी विशेषता है। पशु परिस्थितियों के अनुसार जीते हैं, पर मनुष्य परिस्थितियों को बदलने का सामर्थ्य रखता है, क्योंकि वह प्रयत्न कर सकता है।**

इसलिए जब तक जीवन है, तब तक प्रयास है; और जब तक प्रयास है, तब तक संभावना है। जो व्यक्ति प्रयत्न करना नहीं छोड़ता, अंततः वही अपने जीवन को साध लेता है और वही वास्तविक सफलता का अधिकारी बनता है।

*विद्याशरीरसत्ता मन्त्र रहस्यम्।।*

विद्या मनुष्य का आंतरिक धन है, जबकि लक्ष्मी बाह्य धन है। बाह्य धन का हरण हो सकता है, वह नष्ट हो सकता है, छिन सकता है; परन्तु विद्या ऐसा धन है जिसे कोई चुरा नहीं सकता। यही कारण है कि शास्त्रों में विद्या को सर्वोच्च सम्पदा कहा गया है।

मंत्र वह सेतु है जो साधक को विद्या के समीप ले जाता है। वह केवल शब्दों का समूह नहीं, बल्कि चेतना को जाग्रत करने का माध्यम है। विद्या की प्राप्ति में सबसे बड़ी बाधा मन की चंचलता है। चंचल मन न तो किसी विषय पर स्थिर हो पाता है और न ही आत्मज्ञान की दिशा में अग्रसर हो सकता है। इसलिए मंत्र-जप का प्रमुख उद्देश्य मन को शांत करना, उसकी चंचलता का क्षय करना और ध्यान को बाह्य जगत से हटाकर अंतर्मन की ओर मोड़ना है।

जब तक हमारा ध्यान शरीर की सत्ता पर केंद्रित रहता है, तब तक हमारी अनुभूतियां लक्ष्मी की ओर उन्मुख रहती हैं। हमारा अधिकांश समय शरीर को सजाने-संवारने, उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करने और बाह्य सुख-सुविधाओं को बढ़ाने में व्यतीत होता है। यह भी आवश्यक है, परंतु यही जीवन का अंतिम लक्ष्य नहीं है।

जैसे ही ध्यान भीतर की ओर प्रवाहित होता है, विद्या का विराट संसार साधक को अपनी ओर आमंत्रित करने लगता है। तब मनुष्य बाह्य संपदा से अधिक आंतरिक समृद्धि का अनुभव करने लगता है। उसे यह ज्ञात होने लगता है कि वास्तविक वैभव ज्ञान, विवेक और आत्मबोध में निहित है।

मंत्र-जप इस संपूर्ण प्रक्रिया का आधार है। वह न केवल ध्यान प्राप्त करने में सहायक है, बल्कि प्राप्त हुए ध्यान को स्थिर बनाए रखने का भी सबसे प्रभावी साधन है। निरंतर

**मंत्र ध्वनि-रूप में प्रकट हुई एक दिव्य शक्ति है।**

**मंत्र चेतना का वाहक है। दृढ़ विश्वास भाव और साधना के साथ किया गया मंत्र-जप साधक के भीतर छिपी दिव्य चेतना को जागृत करता है और उसे उच्च आध्यात्मिक विकास की ओर ले जाता है।**

**मंत्र, गुरु और आत्मचिंतन - ये तीनों साधना के प्रमुख आधार हैं। मंत्र-जप चित्त की शुद्धि करता है, जिससे आत्मज्ञान की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होता है।**

**चित्त बाहरी विकर्षणों से मुक्त होकर भीतर की ओर मुड़ने लगता है...**



- सद्गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली

मंत्र-जप से मन एकाग्र होता है, चित्त निर्मल होता है और साधक क्रमशः उस विद्या के निकट पहुंचता है, जो उसके जीवन को भीतर से प्रकाशित कर देती है।

मंत्र जप में उच्चारण और पुनरावृत्ति का विशेष स्थान है। मंत्र देवता का शाब्दिक स्वरूप है। देवता दिव्य ऊर्जा की ही अभिव्यक्ति हैं। मंत्र के माध्यम से हम उस दिव्य ऊर्जा, उसी देवता का अपने जीवन में निमंत्रण करते हैं।

इसीलिए साधना में मंत्र-जप केवल निश्चित समय तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि वह मन में निरंतर करते रहना चाहिए। जब जप अखंड हो जाता है, तब साधक और मंत्र के बीच का भेद धीरे-धीरे मिटने लगता है। मंत्र-जप के माध्यम से साधक देवता के गुणों, उनके तेज, उनके भाव और उनकी चेतना को अपने भीतर आत्मसात करता है।

मंत्र से प्राप्त होने वाली विद्या साधक के भीतर जीवित हो जाती है। तब वह केवल स्मृति का विषय नहीं रहती, बल्कि उसके चेतन अस्तित्व का अभिन्न अंग बन जाती है। उस अवस्था में मंत्र केवल ध्वनि नहीं रह जाता, वह साधक के जीवन की शक्ति बन जाता है।

**वास्तव में मंत्र का रहस्य उसके शब्दों या अक्षरों में नहीं, बल्कि उस दिव्य चेतना में निहित है जो उसके सतत जप से जागृत होती है। जब यह चेतना प्रकट होती है, तब मंत्र साधक के भीतर सुप्त शक्तियों को जागृत कर देता है और उसका संपूर्ण व्यक्तित्व देवत्व की ओर अग्रसर होने लगता है।**

*गर्भे विद्या विकास चित्तोऽविशिष्ट स्वप्नः।।*

जब विद्या साधक के अन्तःकरण में गर्भ की भांति विकसित होने लगती है, तब उसका चित्त एक विशिष्ट स्वप्नवत् (दिव्य अनुभूतियों से युक्त) अवस्था को प्राप्त होता है।

अर्थात् जैसे गर्भ में शिशु धीरे-धीरे विकसित होता है, वैसे ही साधना से प्राप्त विद्या भी साधक के भीतर क्रमशः परिपक्व होती है। उस समय साधक का मन सामान्य नहीं रहता; उसे दिव्य संकेत, सूक्ष्म अनुभूतियां और अलौकिक स्वप्न प्राप्त होने लगते हैं।

*विद्यासमुत्थाने स्वभावे खेचरी शिवावस्था।।*

जब विद्या पूर्ण रूप से जागृत हो जाती है, तब साधक का स्वभाव स्वतः खेचरी अवस्था को प्राप्त होकर शिव स्वरूप में स्थित हो जाता है।

अर्थात् जब आत्मविद्या पूर्ण विकसित हो जाती है, **तब साधक का चित्त बाहरी विषयों में नहीं भटकता। वह स्वाभाविक रूप से उच्च चेतना में स्थित हो जाता है। यही खेचरी अवस्था है, जहां मन आकाशवत् व्यापक होकर शिवतत्त्व में लीन हो जाता है।** यह साधना की अत्यन्त उच्च अवस्था है, जिसमें साधक का स्वभाव ही शिवमय हो जाता है। इसकी प्राप्ति में श्वास पर ध्यान केंद्रित करना अनिवार्य है। **जब साधक का ध्यान श्वास पर स्थिर हो जाता है, तब वह धीरे-धीरे अखंड और अभंग बन जाता है। उस अवस्था में मन की चंचलता क्षीण होने लगती है, चित्त एकाग्र हो जाता है और ध्यान सहज रूप से अंतर्मुखी होकर साधना की गहराइयों में प्रवेश करने लगता है।**

# काल निर्णय

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं, और सफलता का प्रतिशत **99.9%** आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

**ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है।**



| वार/दिनांक | श्रेष्ट समय | |
|---|---|---|
| रविवार<br>(सितम्बर 27)<br>(अक्टूबर 4, 11) | दिन | 07:36 से 10:00 तक<br>12:24 से 02:48 तक<br>04:24 से 05:12 तक |
| | रात | 07:36 से 09:12 तक<br>11:36 से 02:00 तक |
| सोमवार<br>(सितम्बर 28)<br>(अक्टूबर 5, 12) | दिन | 06:00 से 10:48 तक<br>01:12 से 06:00 तक |
| | रात | 08:24 से 11:36 तक<br>02:00 से 03:36 तक |
| मंगलवार<br>(सितम्बर 29)<br>(अक्टूबर 6, 13) | दिन | 06:00 से 07:36 तक<br>10:00 से 10:48 तक<br>12:24 से 02:48 तक |
| | रात | 08:24 से 11:36 तक<br>02:00 से 03:36 तक |
| बुधवार<br>(सितम्बर 30)<br>(अक्टूबर 7, 14) | दिन | 06:48 से 11:36 तक |
| | रात | 06:48 से 10:48 तक<br>02:00 से 04:24 तक |
| गुरुवार<br>(अक्टूबर 1, 8, 15) | दिन | 06:00 से 06:48 तक<br>10:48 से 12:24 तक<br>02:48 से 06:00 तक |
| | रात | 10:00 से 12:24 तक |
| शुक्रवार<br>(अक्टूबर 2, 9) | दिन | 09:12 से 10:30 तक<br>11:36 से 12:24 तक<br>02:00 से 06:00 तक |
| | रात | 08:24 से 10:48 तक<br>01:12 से 02:00 तक |
| शनिवार<br>(अक्टूबर 3, 10) | दिन | 10:48 से 02:00 तक<br>05:12 से 06:00 तक |
| | रात | 08:24 से 10:48 तक<br>12:24 से 02:48 तक<br>04:24 से 06:00 तक |




## मेष

परिवर्तन संसार का नियम है, इसे खुले मन से स्वीकार करें। आपकी नौकरी अथवा कैरियर में बदलाव आपके लिये उन्नति लेकर आयेगा। आय में वृद्धि होगी, जिसका प्रभाव आपके सामाजिक स्तर पर पड़ेगा। नवीन वाहन प्राप्ति योग है, परिवार में अतिथि आगमन हो सकता है, जिससे हर्ष का वातावरण रहेगा। आप जीवनसाथी के साथ अच्छा व्यवहार रखें अन्यथा व्यर्थ का वाद-विवाद हो सकता है। आप अनुकूलता हेतु सद्गुरुदेव से **'भाग्योदय दीक्षा'** ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 2, 19, 29, 30 हैं।

## वृषभ

नवग्रहों की गणनानुसार इस माह आपको सुख-दुःख की अनुभूति होती रहेगी। कार्यों में विलम्ब होने से मन खिन्न हो सकता है, नकारात्मक भाव आ सकते हैं किन्तु आप कोशिश करें कि इन परिस्थितियों का प्रभाव आपके मन पर न पड़े। इस माह अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें, स्वास्थ्य सम्बन्धी बाधाएं आ सकती है। आकस्मिक अथवा फंसे हुए धन प्राप्ति के योग है। विद्यार्थीयों को परिश्रम के अनुरूप सफलता प्राप्त होगी। अनुकूलता हेतु सद्गुरुदेव से **'धूमावती दीक्षा'** ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 4, 12, 25, 26 हैं।

## मिथुन

माह के प्रारम्भ में थोड़ी विपरीत स्थितियों का सामना करना पड़ सकता है, किन्तु दूसरी ओर माह का अन्त आपके लिये सफलतादायक रहेगा। आर्थिक पक्ष को लेकर सावधानी रखने की आवश्यकता है। कर्ज लेने और देने से बचने का प्रयास करें, कर्ज के दलदल में फंस सकते है। कार्य विस्तार अथवा नवीन कार्य प्रारम्भ की सोच रहे हैं, तो अभी टाल दें। माह के अन्त में राजकीय कार्य में सफलता प्राप्त होगी। अनुकूलता हेतु **'विन्ध्यवासिनी साधना'** (जून 2026) सम्पन्न करें। शुभ तिथियां - 11, 20, 26, 28 हैं।

## कर्क

वर्तमान समय आपके लिये उन्नतिदायक और प्रगतिदायक है किन्तु आप अपनी महत्वकाक्षाओं को नियन्त्रण में रखें अन्यथा आपकी मानसिक शान्ति समाप्त हो जायेगी और आप वर्तमान खुशियों का आनन्द भी नहीं ले पायेंगें। नौकरी क्षेत्र से जुड़े व्यक्तियों को उनके उच्च अधिकारी प्रसन्न होकर प्रमोशन प्रदान कर सकते हैं। परिवार में चला आ रहा विवाद समाप्त होने से मानसिक शान्ति का अनुभव करेंगें। आप अनुकूलता हेतु **'लक्ष्य सिद्धि क्लीं साधना'** (अगस्त 2026) सम्पन्न करें। शुभ तिथियां 2, 13, 20, 30 हैं।

## सिंह

जीवन में धोखा अथवा विश्वासघात तब ही होता है, जब आंख बंद कर विश्वास किया जाये। सावधानी रखें, निकटतम व्यक्ति से ही धोखा अथवा छल हो सकता है। रुपये-पैसे लेन-देन में सावधानी की आवश्यकता है। आय से अधिक खर्च आपको परेशान कर सकता है, साथ ही क्रोध और वाणी को नियन्त्रण में रखें अन्यथा शत्रु पक्ष में वृद्धि हो जायेगी आपके उच्च अधिकारियों का सहयोग आपको प्राप्त होगा आप अनुकूलता हेतु सद्गुरुदेव से **'बगलामुखी दीक्षा'** अवश्य ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 4, 11, 20, 24 हैं।

## कन्या

समस्या का चिन्तन करने की अपेक्षा बुद्धि-विवेक के साथ उसका निदान खोंजे, समस्याओं को देखकर घबरायें नहीं उनका पराक्रम और साहस के साथ सामना करें। कार्य स्थल पर लापरवाही न करें अन्यथा उच्च अधिकारी के क्रोध का सामना करना पड़ सकता है। राजनीति क्षेत्र से जुड़े व्यक्तियों को विशेष लाभ होगा, बस सफलता हेतु आलस्य का त्याग कर कर्म को साधना मानकर क्रियाशील रहें। आप अनुकूलता हेतु **'लक्ष्य सिद्धि क्लीं साधना'** (अगस्त 2026) सम्पन्न करें। शुभ तिथियां - 4, 17, 23, 25 हैं।

## तुला

वर्तमान समय सर्वलाभकारी है, व्यापार क्षेत्र से जुड़े व्यक्तियों के आय के संसाधनों में वृद्धि होगी। दूसरी ओर नौकरी क्षेत्र से जुड़े व्यक्तियों को उनके उच्च अधिकारी प्रसन्न होकर प्रमोशन के रूप में तरक्की कर सकते है। इस माह आपको भविष्य के लिये कुछ बड़े फैसले लेने पड़ सकते हैं इसलिये बुद्धि और विवेक के साथ निर्णय करें। परिवार में कोई आध्यात्मिक आयोजन आपको शान्ति प्रदान करेगा। लाभ प्राप्ति हेतु सद्गुरुदेव से **'कार्य पूर्णता गणपति दीक्षा'** ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 2, 8, 17, 30 हैं।

## वृश्चिक

लम्बे समय से कोर्ट में लम्बित कार्य का फैसला आपके पक्ष में आने से आत्मविश्वास में वृद्धि और शान्ति प्राप्त होगी। व्यापार क्षेत्र से जुड़े व्यक्ति व्यापार विस्तार के लिये यात्रा इत्यादि पर जा सकते हैं, जिसका भविष्य में आपको लाभ होगा। इस महा नौकरी क्षेत्र से जुड़े व्यक्तियों को बोनस के रूप में लाभ होगा, राजकीय कार्य में सफलता मिलेगी। इस माह परिवार एवं जीवनसाथी का सहयोग आपके लिये लाभकारी होगा। अनुकूलता हेतु **'चन्द्रमौलिश्वर साधना'** (जून 2026) सम्पन्न करें। शुभ तिथियां - 8, 17, 22, 23 हैं।

## धनु

इस माह आपके जीवन में तीव्र धन प्रवाह होने के योग है। किन्तु आपको अनावश्यक खर्च को नियन्त्रित भी करना पड़ेगा अन्यथा जितनी शीघ्रता से धन आयेगा उतनी ही शीघ्रता से समाप्त भी हो जायेगा। आपके लिये उचित रहेगा की भविष्य के लिये निवेश करें। धार्मिक क्रिया-कलापों में आपका रूझान आपको आत्मिक बल प्रदान करेगा। माह के अन्त कोई घटना आपको विचलित कर सकती है। आप अनुकूलता हेतु सद्गुरुदेव से **'हनुमान दीक्षा'** अवश्य ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 4, 11, 20, 25 हैं।

## मकर

समय आपके लिये लाभकारी है अत: इस समय का पूर्ण सदुपयोग अपने क्योंकि समय दोबारा लोटकर नहीं आता। कर्म और परिश्रम के द्वारा अपनी योजनाओं को धरातल पर उतारने का सही समय है। भविष्य के लिये निवेश इत्यादि करने हेतु समय अनुकूल है। भविष्य में उसका आपको लाभ

☆ **सर्वार्थ सिद्धि योग** - 1, 3, 7, 8, 13, 16, 17, 21, 27, 29, 30 सितम्बर / 4, 5, 6, 14 अक्टूबर ☆ **अमृत योग** - 1, 13, 26, 29 सितम्बर / 14 अक्टूबर ☆ **द्विपुष्कर योग** - 11 अक्टूबर ☆ **त्रिपुष्कर योग** - 12 सितम्बर ☆ **रवि पुष्कर योग** - 4 अक्टूबर ☆

होगा। गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें, आपके खिलाफ षडयन्त्र रच सकते हैं। वाहन उपयोग करते सयम भी सावधानी रखें। अनुकूलता हेतु **'बटुक भैरव साधना'** (जून, 2026) सम्पन्न करें। शुभ तिथियां - 7, 18, 23, 25 हैं।

## कुम्भ

जीवन में योजना बनाकर कार्य करने से, सफलता प्राप्त सहज हो जाती है। आप भी अपना कार्य विस्तार करने के लिये योजनाबद्ध रूप से कार्य करें, निश्चित रूप से आपको सफलता प्राप्त होगी। जब व्यक्ति उन्नति, प्रगति करता है तो स्वाभाविक है उसके शत्रु भी बढ़ते हैं। अतः आपको शान्त और संयमित रहते हुए षडयन्त्रों से सावधान रहना है। अपने खान-पान को नियन्त्रित करें, स्वास्थ्य का ध्यान रखें। आप अनुकूलता हेतु **'गणपति साधना'** (अगस्त 2026) सम्पन्न करें। शुभ तिथियां - 7, 16, 24, 29 हैं।

## मीन

वर्तमान समय आपके लिये मिश्रित फलकारक है आपके मान-सम्मान और लोकप्रियता में वृद्धि होगी। किन्तु आप अहं भाव न आने दें, अन्यथा आपकी शान्ति और उन्नति दोनों प्रभावित हो सकती है। लक्ष्य को दृष्टिगत रखकर कर्म करते रहें, स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। नौकरी पेशा व्यक्ति कार्य में लापरवाही न करें अन्यथा अपने उच्च अधिकारी से प्रताड़ना मिल सकती है। अनुकूलता हेतु इस माह सद्गुरुदेव से **'रसेश्वर महामृत्युंजय दीक्षा'** अवश्य ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 2, 9, 17, 27 हैं।

### इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

| | | |
|---|---|---|
| 10 सितम्बर भाद्रपद कृ.-30 | शुक्रवार | अमावस्या |
| 14 सितम्बर भाद्रपद शु.-03 | सोमवार | गणेश चतुर्थी |
| 22 सितम्बर भाद्रपद शु.-11 | मंगलवार | पद्मा एकादशी |
| 22 सितम्बर भाद्रपद शु.-12 | बुधवार | भुवनेश्वरी जयन्ती |
| 25 सितम्बर भाद्रपद शु.-14 | शुक्रवार | अनन्त चतुर्दशी |
| 26 सितम्बर भाद्रपद शु.-15 | शनिवार | पूर्णिमा / श्राद्ध पक्ष प्रा. |
| 06 अक्टूबर आश्विन कृ.-11 | मंगलवार | श्राद्ध पक्ष एकादशी |
| 10 अक्टूबर आश्विन कृ.-30 | शनिवार | पितृकार्य श्राद्ध अमावस्या |

# आज क्या करना है - वराहमिहिर वचन

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जाएंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाए। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

## सितम्बर - 2026 - दिनांक

16. गाय को गुड़-रोटी खिलायें, बाधा समाप्त होगी
17. गुरु गीता के पांच श्लोक का पाठ करें, कार्य में सफलता मिलेगी
18. 'संतान सप्तमी' पर संतान को **'जीवन मार्ग सौभाग्य दीक्षा'** के माध्यम से सद्गुरुदेव का आशीर्वाद दिलायें।
19. **'भगवती दुर्गा'** को पांच लाल पुष्प अर्पित करें।
20. चावल का दान करें, बाधा समाप्त होगी।
21. 'गुरु जन्म' दिवस पर सद्गुरुदेव का पूजन कर गुरु सेवा का संकल्प लें।
22. आज **'श्रीकृष्ण आरती'** अवश्य सम्पन्न करें।
23. **'महाविद्या भुवनेश्वरी जयन्ती'** पर **'भुवनेश्वरी साधना'** (पृष्ठ सं. 27) करें तथा सद्गुरुदेव से **'भुवनेश्वरी महादीक्षा'** (पृष्ठ सं. 29) ग्रहण करें।
24. **'निखिल स्तवन'** के 11 श्लोक का पाठ कर कार्य पर जायें।
25. **'अनंत चतुर्दशी'** के शुभ अवसर पर **'अनन्त साधना'** (पृष्ठ सं. 16) सम्पन्न करें।
26. **'श्राद्ध पक्ष (26 सित. 2026 से 10 अक्टू 2026)'** में तिथि अनुसार पितरों की मुक्ति हेतु **'अष्टवसु गण साधना'** (पृष्ठ सं. 32) सम्पन्न करें तथा तर्पण हेतु **'दिव्यलोक श्रद्धांजली साधना'** (पृष्ठ सं. 33) करें।
27. एक लोटा जल पीपल के पेड़ में अर्पित करें।
28. आज शिव मंदिर में पांच घी के दीपक जलायें।
29. आज **'मूंगा गणपति'** (न्यौ. 300/-) का पूजन कर हनुमान मंदिर में अर्पित करें, बाधा समाप्त होगी।
30. अपने इष्ट का स्मरण कर दिन का आरम्भ करें।

## अक्टूबर - 2026 - दिनांक

1. आज गुरु पादुका पूजन सम्पन्न करें।
2. आज दही खाकर घर से निकलें कार्य सिद्धि होगी।
3. आज पांच लौंग शिव मन्दिर में चढ़ा दें, कार्य में सफलता प्राप्त होगी।
4. प्रात: घी का दीपक जलाकर घर के बाहर रख दें, दिन सफलतादायक सिद्ध होगा।
5. प्रात: काल 15 मिनट **'सोहम्'** मंत्र का जप करें।
6. **'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'** का 1 माला जप कर दिन का आरम्भ करें।
7. हरी वस्तु का दान करें, ग्रह दोष समाप्त होगा।
8. शिव पूजन कर दिन का प्रारम्भ करें।
9. शक्कर का दान करें सफलता प्राप्त होगी।
10. **सर्वपितृ अमावस्या श्राद्ध** पर सद्गुरुदेव से **'पितृदोष एवं प्रेतबाधा मुक्ति दीक्षा'** (पृष्ठ सं. 63) ग्रहण करें।
11. **आश्विन नवरात्रि (11 अक्टू 2026 से 20 अक्टू 2026)** में **'आद्याशक्ति जगदम्बा सायुज्य नवार्ण शक्ति नवरात्रि पूजन साधना सामग्री'** (पृष्ठ सं. 07) से विधि विधान सहित शक्ति साधना सम्पन्न करें तथा नवरात्रि में सद्गुरुदेव से **'नवार्ण दीक्षा'** ग्रहण करें।
12. आज सांयकाल पानी में कच्चा दूध डालकर चन्द्रमा को अर्पित करें।
13. हनुमान जी को पीला फल अवश्य अर्पित करें।
14. आज गणपति पूजन कर दिन का आरम्भ करें।
15. आश्विन शुक्ल पंचमी के शुभ अवसर पर सद्गुरु से **'ललिताम्बा दीक्षा'** ग्रहण करें।




**निर्देश - प्रत्येक प्रश्न में वह विकल्प चुनो, जो तुम्हारे स्वभाव के सबसे अधिक निकट हो।**

**प्रत्येक उत्तर के अंक**
**(अ) = 4 अंक (ब) = 3 अंक (स) = 2 अंक (द) = 1 अंक**

**1. जब कोई तुम्हारी आलोचना करता है, तब तुम्हारी पहली प्रतिक्रिया क्या होती है?**

(अ). मैं शांत रहकर सोचता हूं कि उसमें कितना सत्य है।
(ब). थोड़ी देर बुरा लगता है, फिर सामान्य हो जाता हूं।
(स). मैं मन ही मन उसे गलत सिद्ध करने लगता हूं।
(द). मैं क्रोधित हो जाता हूं और लम्बे समय तक उसे याद रखता हूं।

**2. सुबह उठते ही तुम्हारे मन में सबसे पहला विचार क्या आता है?**

(अ). आज का दिन कुछ अच्छा करने का अवसर है। (ब). आज के कार्य पूरे करने हैं।
(स). पता नहीं आज कौन-सी समस्या सामने आएगी। (द). जीवन बहुत कठिन है।

**3. किसी दूसरे व्यक्ति की सफलता देखकर तुम्हारे मन में कौन-सा भाव आता है?**

(अ). मुझे प्रेरणा मिलती है। (ब). अच्छा लगता है, पर थोड़ी तुलना भी होती है।
(स). लगता है उसकी किस्मत अच्छी है। (द). ईर्ष्या होती है।

**4. यदि तुम्हारा कोई प्रयास असफल हो जाए, तो तुम क्या करते हो?**

(अ). उससे सीख लेकर पुनः प्रयास करता हूं। (ब). कुछ समय रुककर फिर प्रयास करता हूं।
(स). मेरा आत्मविश्वास डगमगा जाता है। (द). प्रयास करना ही छोड़ देता हूं।

**5. दिनभर में तुम्हारे मन में सबसे अधिक किस प्रकार के विचार आते हैं?**

(अ). कृतज्ञता, समाधान और नए अवसर। (ब). काम और जिम्मेदारियां।
(स). चिंता और भविष्य की आशंकाएं। (द). शिकायतें और नकारात्मक विचार।

**6. जब कोई तुम्हारी अपेक्षा के अनुसार व्यवहार नहीं करता, तब तुम...**

(अ). उसे समझने का प्रयास करते हो। (ब). थोड़ी निराशा होती है, फिर स्वीकार कर लेते हो।
(स). मन में नाराज़गी रखते हो। (द). संबंध तोड़ने या बदला लेने की सोचते हो।

**7. तुम अपने शरीर और मन का कितना ध्यान रखते हो?**

(अ). नियमित रूप से ध्यान, व्यायाम या साधना करता हूं।

(ब). कभी-कभी ध्यान देता हूं।

(स). केवल तब, जब कोई समस्या होती है।

(द). लगभग कभी नहीं।

**8. तुम्हारे लिए सफलता का अर्थ क्या है?**

(अ). स्वयं का विकास और दूसरों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाना।

(ब). आर्थिक स्थिरता और सम्मान।

(स). दूसरों से आगे निकलना।

(द). किसी भी प्रकार अधिक धन और शक्ति प्राप्त करना।

**9. दिन समाप्त होने पर तुम्हारा मन सामान्यतः कैसा रहता है?**

(अ). संतुष्ट और कृतज्ञ।

(ब). थका हुआ, पर संतुष्ट।

(स). तनावग्रस्त।

(द). निराश और असंतुष्ट।

10. यदि तुम्हें अपना जीवन बदलने का एक अवसर मिले, तो तुम क्या बदलना चाहोगे?

(अ). स्वयं को।

(ब). अपनी आदतों को।

(स). अपनी परिस्थितियों को।

(द). दूसरे लोगों को।

## मानसिक संवेग (स्पन्दन) परिणाम

### 36-40 अंक: तुम्हारा स्पंदन अत्यन्त उच्च है।

तुम्हारे विचार, भावनाएं और कर्म सृजनात्मक ऊर्जा से जुड़े हुए हैं। तुम्हारे भीतर शांति, कृतज्ञता, विश्वास और विकास की भावना प्रबल है। ऐसे लोग अवसरों को आकर्षित करते हैं और कठिन परिस्थितियों में भी समाधान खोज लेते हैं।

### 28-35 अंक: तुम्हारा स्पंदन अच्छा है।

तुम्हारी ऊर्जा सकारात्मक है, लेकिन कभी-कभी तनाव, तुलना और चिंता उसे कम कर देते हैं। नियमित ध्यान, मंत्र-जप और सत्संग तुम्हारे स्पंदन को और ऊंचा उठा सकते हैं।

### 20-27 अंक: तुम्हारा स्पंदन मध्यम स्तर पर है।

तुम्हारा मन बाहरी परिस्थितियों से अधिक प्रभावित होता है। चिंता, आत्म-संदेह और नकारात्मक सोच तुम्हारी ऊर्जा को सीमित कर रहे हैं। यदि तुम अपनी दिनचर्या और विचारों में परिवर्तन लाओ, तो तुम्हारा स्पंदन तेज़ी से ऊपर उठ सकता है।

### 10-19 अंक: तुम्हारा स्पंदन निम्न स्तर पर है।

तुम्हारी अधिकांश ऊर्जा भय, क्रोध, शिकायत, तुलना और निराशा में व्यय हो रही है। यह कोई स्थायी स्थिति नहीं है। प्रतिदिन ध्यान, प्राणायाम, कृतज्ञता और सकारात्मक चिंतन का अभ्यास तुम्हारे स्पंदन को धीरे-धीरे उच्च स्तर तक पहुंचा सकता है।

**याद रखो :- स्पंदन (मानसिक संवेग) भाग्य से निर्धारित नहीं होता। यह विचारों, भावनाओं और कर्मों का परिणाम है। जब तुम्हारे विचार बदलते हैं, तो तुम्हारा स्पंदन बदलता है; और जब स्पंदन बदलता है, तो जीवन की दिशा भी बदलने लगती है।**




## पितृदोष एवं प्रेत बाधा मुक्ति दीक्षा प्राप्त कर जीवन की बाधाओं को समाप्त करें...

## घर में शान्ति, संतोष, प्रेम और आरोग्य का स्थापन करें...

- *प्रेत बाधा के प्रभाव से मनुष्य का मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है।*
- *वह विचित्र व्यवहार करने लग जाता है। कोई भी शारीरिक व्याधि न होने के बावजूद शरीर अस्वस्थ रहता है, विशेष कर छोटे बच्चों को स्वास्थ्य की परेशानियां निरन्तर बनी ही रहती है।*
- *घर में अप्रिय घटना हो जाती है।*
- *घर में दुर्गन्ध आती है।*
- *घर में अजीब दृश्य दिखाई देते हैं।*
- *कोई पीछे से बार-बार आवाज दे रहा है ऐसा आभास होता है।*

*ऐसी ही घटनाएं है जो यह बताती है कि आप आत्माओं के प्रभाव से पीड़ित है।*

*अब ये आत्माएं आपके घर-परिवार के सदस्यों की भी हो सकती है जो मुक्ति के अभाव में भटक रही है अथवा अन्य कोई अपरिचित आत्मा भी हो सकती है जिसका आपके किसी कारण से जुड़ाव हो गया हो। यह कारण किसी अनजान स्थान पर आपके जाने के कारण या आपके व्यक्तित्व के किसी गुण-अवगुण के कारण भी हो सकता है।*

*उस आत्मा के कारण आपको जो कष्ट भोगने पड़ रहे है उसका निवारण हो।*

*श्राद्ध पक्ष भूत-प्रेत, पितृदोष की बाधाओं से मुक्त होने का विशेष कल्प है। इस कल्प को पितृ बाधा मुक्ति और शांति के नाम से भी जाना जाता है। श्राद्ध पक्ष में सद्गुरुदेव से पितृ दोष एवं प्रेत बाधा मुक्ति दीक्षा प्राप्त कर, साधना मंत्र जप इन दोषों से मुक्ति प्राप्त करे।*

*पितृगण जब मुक्त हो जाते है तब वे अपने वंशजों, संतानों तथा प्रियजनों को आयु, धन, विद्या, स्वर्ग, मोक्ष, सुख, राज्य इन सभी आशीर्वादों को प्रदान करते हैं। पितरों की प्रसन्नता से मनुष्य को पुत्र, यश, कीर्ति, पुष्टि, बल, लक्ष्मी, अन्न, द्रव्य आदि सुख प्राप्त होते हैं।*

**- पितृ दोष एवं प्रेत बाधा मुक्ति दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. - 2100/-**

## 18-19-20 सितम्बर 2026

## दिल्ली दीक्षा कार्यक्रम, दिल्ली

✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧

## 27 सितम्बर 2026

## पितृ प्रसन्न कुल देवी देवता साधना शिविर, बोकारो

*शिविर स्थल : बौद्ध विहार सेक्टर - 4, जगन्नाथ मन्दिर के पास, बोकारो, झारखण्ड*

**आयोजकः-** ब्रजनंदन कुमार श्यामला 8986872120• अमर बाउरी• जितेन्द्र प्रसाद 8340409238• दिलीप कुमार सिंहा 9708668521• घनश्याम प्रसाद 9693415603• मनोज कुमार 9905571724• अरुण कुमार वर्मा 8334231579• आर.सी. प्रसाद 9470121495• जगदेव प्रसाद चौधरी 9308068866• प्रमोद कुमार 9835315565• युगान्ता देवी 98355155665• चन्द्रप्रभा देवी 9279295881• गीता देवी 9031810703• मंजू देवी 9142296569• रेखा देवी 8271825063• सुनिता देवी 9199693118• मोहन सिंह 8789219358• रूपेश करमाली 7631028551• रमेश पात्रा 9102963730• डी.डी.रवानी 7250796021• सुरेश प्रसाद 9507544304• सुभाष पंडित 6201824022• राज किशोर शर्मा 950796021• उमाकान्त दुबे 9661457012• गीता देवी बराईक 9693353916• उदय कुमार शर्मा 9123405211• अनिल वर्मा 8340479180• अगनु दास• सोनू कुमार वर्मा 7488672948• अनिरुद्ध राम 7061268617• मुंशी मांझी 9905542166• मिथलेश पुरी 6201822477• रामप्रवेश सिंह 9431739106• निवेदन कु. गुप्ता 8809578676• संतोष पाण्डे 8210900474• मनमोहन 8789799321• अनिल सिंह 90931712191• दिलीप कु. मास्टर• अश्वनी सिंह 6202070733• राजीव 9709182327• विनोद शर्मा 9431321462• सोनू कुमार वर्मा 7488672948• संतोष ठाकुर 7004825814• अमेन्द्र सिंह 7488194490• अजय सिंह 6205476366• जेलर सिंह 90065538081• पी.एन. पाण्डे 9470382582• विजय कुमार झा 9431379234• पी.एन.सिंह 9334046717• संतोष सिंह 7544014523• विनोद कुमार झरिया• **फुसरोः** भगवान दास 9934117533• अमृत दिगार 9934825748• महावीर 9934136464• राजन करमाली 9934175476• अनिल कुमार रजवार 9507558210• सौरभ कुमार सिंहा 9934238011• पोबिर बाउरी 7004025596• प्रहलाद राम 9973857794• जय प्रकाश चौहान 8340321886• दिलीप कुमार 9693981583• करमचन्द बाउरी 9162720502• राधेश्याम दिगार 9801320456• रसराज दिगार• तुलसी सिंह 9931538161• दिनेश कुमार नायडू 9431368784• महरू सिंह 6201271654• राम किशन मुण्डा 9771572437• समीर बाउरी 8581876337• रथु बाउरी 9661285546• मनोज स्वासी 9955588624• बिनोद बाउरी 9199258913• कुलदीप महतो 9523211897• शक्ति स्वासी 6202882003• राकेशा भुमिज 7463982484• गायत्री देवी• सरस्वती देवी• **हजारीबागः** डॉ.सुरेश राव 7004948865• टेकलाल महतो 9334271097• दामोदर महतो 9973208086• बासुदेव महतो 8521773780• कान्ति देवी 9934313794• दिलीप साव 6299621212• बालेश्वर यादव 9608374288• सत्येन्द्र कुमार 8210765166• **धनबादः** हरि किशोर मण्डल 7991159009• निवेदन कुमार गुप्ता 9835767850• निवेदन कुमार गुप्ता 8809578676• सुभाष रजवार 7870949687• पंकज कुमार सिंह• **रामगढ़ः** कालेश्वर मिस्त्री 6206691084• राजू राम 7352116504• अशोक भारती 9973773675• मुलचन्द श्रीवाने 9123138650• कन्हैया करमाली 9572343623• राजू राम 7562018533• बसंत लाल 8825263408• मीना चौहान 8986733667• श्रवन कुमान• उमेश रजवार 9973429833• बासुदेव महतो 7209571041• हीरा रजवार 9279998947• सनातन शर्मा 9065345856• शनिचरिया देवी• ईश्वर राम उराव 9123122041• किशोर कुमार मुण्डा 6202243575• बुद्धदेव उराव• कृष्ण प्रसाद मेहता• सुनिल प्रसाद मेहता• घुरन मुण्डा• गंगा राम मिस्त्री• राहुल कुमार• माधो भुईयां• पुनम वर्मा• **टाटा नगरः** अनिल ओराव 923455436• वाई.एम.मुर्ति 7461066316• अभय कुमार वर्मा 9835563288• अरुण प्रसाद 9835956812• डॉ.रवि सिंह 9334626918• नरेश वर्मा 9031929112• बालेश्वर सिंह 8002326169• नविन कुमार 8340596023• विजय शाह 6206137839• गुरुबारी देवी 6201879398• राम बाबु सोनकर 8877404090• अरुण पाण्डे 9431346042• **गुमलाः** सुशीला कुमारी 9778542739• रामेश्वर बघेल 9430390239• अनिल पाण्डे 9693075820• धनराज साय पैकरा 7762967948• सुजीत साहू 7667988972• वीनु महतो 7061724143• राहुल राम

620032409• शांति कुमारी 8709408337• सपना उराव 9572724366• **सिन्दरी:** पंकज सिंह 7979717850• पंकज मनी 9122693944• वायो बिनोद आर्या 7903010735• उदय सिंह(धनबाद) 9386897555• डॉ.सुशील सिंह 6204498988• सुनैना देवी 9153773948• मल्लिका मिठू 9546854539• गोपाल पंडित 7870736689• प्रसन्नजित मंडल 9973706187• सफीक अंनसारी 7654847741• **बुण्डू:** सुदर्शन जैसवाल 882532328• मलम साहू 983508993• **तामड:** दिनेश कुमार 9234508088• सुसेन प्रमानिक 7004604713• सुदिप गोस्वामी 9934328671• **रांची:** डॉ. हाजरा 9771830188• पंकज कुमार 9973360363• अमित तिवारी 9955548968• पुष्पा 9304981528• **घाटशीला:** विजय नारायण पाठक 8210658594• **खूटी:** मनोहर राम 7762929490• **चायवासा:** जमू हेम्बरम 7667700934• **दुमका:** मनल रजवार 7888890520• **रामगढ़ परही:** राकेश कुमार 8789624053• **मनोहरपुर:** डॉ डालमु बर्रली 9431390993• **बिहार:** मुरली यादव 9934493085• ब्रजेश कुमार 9801383138• गिरीश कुमार 8809311719• ललन कुमार 8809243897• नरेश कुम ार 6200904275• पुरुषोत्तम कुमार 9204032223• पुरुषोत्तम सिंह(देवघर) 7250363677• राम मनोहर 8405806130• देवेन्द्र गुप्ता 9110082101• दीवाकर मिश्रा 9939193036• शोभा दास 7903896676• शैलेन्द्र दास 9939989940• रंजित कुमार 8210673290• सुनिल महाचार्य 9006473616• डॉ. अशोक कुमार 9931032947• मंजू निखिल 7987904033• विरेन्द्र महतो 7903834525• गणेश 9334753839• राधेमोहन 9113772042• प्रिंस 9308891649• देव निखिल 7987904033• अरबिन्दु सिंह 6201713562• पप्पु कुमार 9852552723• जोगिन्द्रगिरी 9334867970• अरबिन्द सिंह 6201713562• पप्पु कुमार 9852552723• साजन मंडल 6206534562• अशोक कुमार 9570425780• गिरीश प्रसाद 6200303759• मुरली प्रसाद 9934493085• राम मनोहर 8405806130• **चितरंजन:** नमन कुमार पाठक 8972525279• प्रदीप कुमार 7277471748• राजेन्द्र साह 7004408873• सुरेन्द्र सिंह 7654103802• शीश साह 9110971052• पंकज साह 9304136783• सरोज राम 6201538466• अभिषेक राम 8210985231• प्रदीप साव• बबलु जैन 7488432172• विजय शर्मा 9608575767• अनुज सिंह 8235043660• नंदलाल सिंह 787046299• मनोज सिंह• संतोष कुमार• कल्याणी सिंह 93008509194• प्रेमलता 8210334093• रंजन प्रसाद• नागेन्द्र गोप 6206142994• पारण नाथ केशरी 9386961421• उपेन्द्र कुमार सिंह• अखलेश ओझा 74784477348• **कोलकत्ता:** कैलाश प्रसाद 8981149538• मिठू बासफोर 900653876• शशिकान्त दास 7003018263• राजा बासफोर 6291798381• आशा बासफोर 987556867• संजय गैंढ 9903193993• अलंकार बासफोर 8622963125• लक्ष्मन बासफोर 9748658491• सामु बासफोर 939579163• महादेव 9804481749• कैलाश 8981149538• विन्देशर 9331213957• **उड़ीसा:** शुभ्रांशु दास 9437146388• दीपक जोशी 9437194898• टुटू साहू 9937244073• आकाश मुण्ड 7008405464• देवेन्द्र 8260622747• जादूमनी दास 9437123724• राजू पटजोशी 7978956515•

✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧

## 2-3-4 अक्टूबर 2026

## जोधपुर दीक्षा कार्यक्रम, जोधपुर

✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧

## 16-17-18 अक्टूबर 2026

## दिल्ली दीक्षा कार्यक्रम, दिल्ली

✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧

## 24-25 अक्टूबर 2026

## जाग्रत लक्ष्मी साधना शिविर, चित्रकूट

*शिविर स्थल : राष्ट्रीय रामायण मेला क्षेत्र,*
*चित्रकूट, उत्तर प्रदेश*

**आयोजक :** फौजदार सिंह 9721458101• डॉ. दिनेश मिश्रा 9307637084• रमाशंकर यादव 9120590115• मीरा मिश्रा 9307782759• दिवाकर सिंह एडवोकेट 9415833466• राममिलन सिंह 9721458122• अरुण सिंह एडवोकेट 9415457229• रामू राम आर्या 9208491715• डॉ. जितेन्द्र गौतम 7319886120• माखन लाल संन्यासी 7607951522• डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा प्राचार्य 9721455817• डॉ. दिवाकर सिंह प्राचार्य 971458112• मुसाफिर सिंह चेयरमैन• मदन मोहन पाण्डेय• **अयोध्या:** आशीष मौर्य• राजेश पाण्डेय• शोभनाथ मौर्य 9450647011• **लखनऊ:** उदय सिंह 9795405047• **चित्रकूट:** गायत्री तिवारी 7985223252• नवनीत मिश्र• सरोज सिंह• शिवबाबू• दयाराम• ललित सिंह• चक्रधर मिश्रा• राजेश्वर सिंह• शशि सिंह•

**रायबरेलीः** राम सिंह यादव 7379854779• **प्रतापगढ़ः** तरूणेन्द्र पाण्डेय 7860190328• **प्रयागराजः** गजराज सिंह 9935699073• **विशिष्ट आयोजक आजमगढ़ कालेज प्रबन्धकगणः** इन्द्रासन राय• डॉ.सानन्द सिंह• राजबहादुर सिंह• डॉ.प्रेमप्रकाश यादव• डॉ.अशोक सिंह• राकेश सिंह पालीवाल• डॉ.जितेन्द्र राय• शारदा शंकर राय• दीपक राय• सुनील राय• श्यामसुन्दर सिंह• पं.हरिनाथ तिवारी शास्त्री• डॉ.संजय सिंह• डॉ.रेनू सिंह• शम्भूनाथ सिंह पूर्व मंत्री• डॉ.आर.पी.सिंह प्राचार्य• भूपेन्द्र बहादुर सिंह• अनिल सिंह श्रमविभाग• सुजीत तिवारी• यशवंत सिंह डिग्री कालेज• अवनीश प्रताप सिंह• पुन्जप्रकाश सिंह• गायत्री सिंह• बालमुकुन्द सिंह• राम नाथ सिंह• ओकार सिंह दुबरी• पंकज सिंह(गोपालगंज)• श्रीराम सिंह वाजिदपुर• आज्ञा शंकर चौबे• ओम प्रकाश सिंह• अम्बरीश राय• पूरन सिंह• उमाकान्त सिंह पुट्टू• विवेक सिंह• सिद्धार्थ सिंह• शैलेन्द्र सिंह सिंचाई विभाग• प्रतीक राज सिंह लखनऊ• रामअवतार सिंह लखनऊ• अमित सिंह (बन्टी)• रवि गुप्ता• अजय सर्राफ• बजरंग बहादुर सिंह• सुब्बा लाल यादव• धर्मेन्द्र यादव• डॉ.मनोज सिंह• सचिन सिंह• मि थिलेश सिंह गहजी• मनोज चौबे• डॉ.मिथिलेश सिंह• प्रवीण सिंह निजामाबाद• **आयोजक मण्डल आजमगढ़ः** ओमप्रकाश सिंह• हरिद्वार सिंह• चेतनरायन सिंह• शुभम• सौरभ• हरिभजन राम• हरिबंश सिंह• दीपक राम• सौदागर शर्मा• विन्ध्याचल पाण्डेय 9451242176• चुन्नी लाल चौहान 9415370622• घनश्याम तिवारी 9415988730• इन्दुमती राय• विद्या जयवाल• मंजू जायसवाल• मनोज साहनी• राधेश्याम दूबे• वेद प्रकाश सिंह• अखिलेश मिश्रा• इन्द्रसेन यादव• डॉ.आर.डी. सिंह• हरिलाल गुप्ता• ऋषिकेश तिवारी• अहिमर्दन सिंह• रामदेव यादव• चेतई यादव• राम सूरत यादव• राममूरत यादव• जितेन्द्र मौर्य• राजेन्द्र मौर्य• सविता• उषा चौहान• प्रेमशीला राय• स्नेहलता चौरसिया• विजय यादव• धर्मेन्द्र• शारदा विश्वकर्मा• जगदीश पाण्डेय• परमहंस मौर्य• राधिका सिंह• लोदई• कैलाशी• फूलमती• कमला प्रसाद निखिल• उत्तम पाठक• विजय मिश्रा• पार्वती मौर्य• प्रभुनाथ मिश्रा• लालचन्द निषाद• मनोज कुमार गुप्ता• संजय राय• राममूरत सिंह• रविशंकर यादव• अनिल यादव• दिग्विजय नाथ द्विवेदी• **मुहम्मदाबादः** पूनम गौड़• विमला यादव• लालसा यादव• मंजू यादव• शान्ती साहनी• इन्दू• लक्ष्मी• शीला• **खुरहटः** रामायन मौर्य• प्रद्युम्न यादव• रामअवध चौहान• विजय शंकर• रामप्रवेश यादव• **अम्बेडकरनगरः** अच्छेलाल यादव• डॉ.लालजी पटेल• रमेशचन्द्र सोनी• देवनारायन पाण्डेय• योगेन्द्र मौर्य• **सन्तकबीर नगरः** रूदल प्रसाद चौधरी 9889308362• चिन्ताहरण पटेल• अलख निरंजन विश्वकर्मा• राजदेव मौर्य• निखिलानन्द यादव• लालसा प्रसाद पासवान• दिगविजय चौरसिया• अश्वनी कुमार• रामानन्द• विपिन विश्वकर्मा• **गोरखपुर-देवरियाः** विरेन्द्र शाही 9936858949• अंकित पाण्डेय• **रायबरेलीः** उषा शर्मा• शिवविरंचि• श्रीकृष्ण वर्मा• उमाशंकर पटेल• सोनू सोनी• विजय पाल सोनी• ज्ञानवती सिंह• **प्रयागराज-प्रतापगढ़ः** एम.आर. मिश्रा• रविशंकर सोनी• विकास तिवारी• अजीत श्रीवास्तव• डॉ. सुचिता श्रीवास्तव• घनश्याम दूबे• गारगी राय• **जौनपुर-वाराणसीः** अंकित सिंह• मंजू सिंह• डॉ.विनोद कुमार सिंह• **लखनऊः** वी.के. श्रीवास्तव 9005160009• कमला सिंह• शिवओम वाजपेई• मनीष साहू• शैलेश मिश्रा• प्रवीण पंकज• नीरज बाजपेई• रामगोपाल साहू• सुशील मण्डल• अनामिका सिंह• **वाराबंकीः** रामनाथ मौर्य 9305734801• अनिल कुमार मौर्य• रामेश्वर प्रसाद पाण्डेय• माधुरी वर्मा• किरन तिवारी• उदयप्रताप सिंह• **औरयाः** आनन्द यादव 9917821365• **आगराः** योगेन्द्र सिंह 9219487246• देवेन्द्र 9319180131• **दिल्लीः** इन्द्रपाल सिंह• शिवकुमार गुप्ता(बन्टू)• राम किशोर मौर्य• सचिन शर्मा• ऋचा राय 9499304033• **कटनीः** विमलेश चौहान 7340411140• उमेश पाण्डेय 7067863537• सुशील विश्वकर्मा• डॉ. पुरूषोत्तम पटेल• सुभाष पटेल• विजय विश्वकर्मा• दिलीप सिंह• अर्जुन बासवा• विरेन सैनी• **दतियाः** रमाशंकर तिवारी 9425721554• **टाटानगरः**- वाई.एम.मूर्ति 7461066316• अभय कुमार वर्मा 9855563288• अरूण यादव• नरेश वर्मा• संजीव कुमार• गुरूवारी देवी• तुलसी राणा• नवीन जी• डॉ.रविकुमार सिंह• श्रीलोक कुमार• हरिशंकर सिंह• रंजीत कुमार• बालेश्वर सिंह• अरूण प्रसाद• अरूण पाण्डेय• वीजय साहू• रामकेश चौधरी• रामबाबू सोनकर• जय चौधरी• वीजय गुप्ता• महावीर गौराई• अनिल उराव• **बिहार समस्तीपुरः**-शोभा दास 7903896676• शैलेन्द्र दास• गणेश कुमार• **शेष नाम अगले अंक में...**

✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧

# अघोर 'क्रीं' तंत्र दीक्षा

**अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।**
**सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः।।**

शिव अघोर अर्थात् शांत और सरल भी हैं और घोर अर्थात् भयंकर भी हैं। वास्तव में शिव घोर से भी अति घोर और रौद्र स्वरूप वाले हैं, जो सबके स्वामी और सब कुछ संहार करने में समर्थ है।



अघोर तंत्र शिव की चेतना, स्पन्दन, अनुभूति और चैतन्यता को प्राप्त करने का सहज और सरल मार्ग है। स्पन्दन अर्थात् चेतना का जीवंत स्पर्श और दिव्य ऊर्जा का अनुभव।

'क्रीं' बीज शक्ति तांत्रिक सिद्धियों के साथ ही साधक के अज्ञान का नाश करती है, भय-आसक्ति का शमन करती है, अहंकार का विघटन करती है, आत्मिक शक्ति का जागरण कर उसे दिशा प्रदान करती है। 'क्रीं' बीज शक्ति साधक के पुराने संस्कारों को समाप्त कर नई चेतना का विकास करती है।

पुरानी, जड़ हो चुकी मान्यताओं को समाप्त करना ही जीवन का सबसे बड़ा भय है और अघोर पंथ का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है - सभी प्रकार के भय का नाश चाहे वह मृत्यु का हो, हानि का हो, असफलता का हो, अपमान का हो।

'क्रीं' तंत्र शक्ति सभी प्रकार के भयों का नाश कर शिव-शक्ति के चैतन्य मार्ग को अवरोध रहित कर देती है। 'क्रीं' बीज शक्ति कुण्डलिनी जागरण की प्रमुख बीज शक्ति है।

## अघोर क्रीं तंत्र दीक्षा

- साधक के भीतर छिपे भय को समाप्त करती है।
- मन की कुण्ठाओं और उलझनों को समाप्त करती है।
- स्वयं के वास्तविक स्वरूप से परिचय कराती है।
- मन में छिपे द्वेष, वैमनस्य का समापन करती है।
- अतीत के आघातों से बाहर निकलने की शक्ति प्रदान करती है।

'क्रीं' बीज मंत्र का गुंजरण तांत्रिक दर्शन में आंतरिक रुपांतरण का प्रतीक है। इसका लक्ष्य बाहरी चमत्कार नहीं, बल्कि भीतर के अज्ञान, भय, आसक्ति और अहंकार का शमन कर साधक को शक्ति और शिव-चेतना की ओर ले जाना है। इसी कारण इसे महाकाली का प्रमुख बीज माना गया है। अघोर अर्थात् सहज, सरल स्वरुप शिव, 'क्रीं' अर्थात् काली शक्ति के साथ संयुक्त होकर साधक को नवीनता से ओत-प्रोत कर देते है।

कुलार्णव तंत्र में शक्ति-बीजों की महिमा का विस्तार से वर्णन करते हुए कहा गया है कि सद्गुरुदेव से दीक्षा ग्रहण कर ही तंत्र क्रियाओं में सिद्धि प्राप्त की जा सकती है, बीज मंत्रों को अत्यंत प्रभावशाली माना गया है, नियमित 'क्रीं' मंत्र जप से शक्ति चेतना का विस्तार होता है।

**अघोर 'क्रीं' तंत्र दीक्षा (प्रति चरण) न्यो. - 3100/-**

RNI No. RAJBIL/2010/34824
Postal Registration No. Jodhpur/366/2025-2027

MAGAZINE POST
Cust. ID - 3000067831
Contract ID - 41372420
BPC Jodhpur HO 342001



## माह : सितम्बर और अक्टूबर में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव श्री नन्दकिशोर श्रीमाली निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे।
इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंचकर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

| स्थान जोधपुर | स्थान आरोग्यधाम (दिल्ली) |
|---|---|
| 4-5-6 सितम्बर | 18-19-20 सितम्बर |
| 2-3-4 अक्टूबर | 16-17-18 अक्टूबर |

प्रेषक -
निखिल मंत्र विज्ञान
14 A, मेन रोड हाई कोर्ट कॉलोनी,
सेनापति भवन के पास,
जोधपुर - 342001 (राज.)
फोन: 9799988915, 9799988930
9799988937, 9799988938
SMS & WhatsApp - 9602334847
Web Add. - nikhilmantravigyan.org
facebook.com\nikhilmantravigyan.org
Email - nmv.guruji@gmail.com